बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु ऐतिहासिक पहल...

शेखावाटी मिशन-100

हिन्दी

कक्षा – 10

कार्यालय : संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)
प्रभारी : शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, सीकर

: missionshekhawati100@gmail.com | 9413361111, 9828336296

टीम शेखावाटी मिशन-100

घनश्यामदत्त जाट
मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी
झुन्झुनू-सीकर (राज.)

रमेशचन्द्र पूनियां
जिला शिक्षा अधिकारी
चूरू (राज.)

लालचन्द नहलिया
जिला शिक्षा अधिकारी मा.
सीकर (राज.)

अमर सिंह पचार
जिला शिक्षा अधिकारी (मा.)
झुन्झुनू (राज.)

रिछपाल सिंह मील
अति. जिला परि. समन्वयक
समग्र शिक्षा, सीकर (राज.)

महेन्द्र सिंह बड़सरा
सहायक निदेशक
कार्यालय संयुक्त निदेशक, चूरू

हरदयाल सिंह फगेड़िया
प्रभारी शेखावाटी मिशन-100
अति. जिला शिक्षा अधिकारी (मा.)
सीकर (राज.)

रामचन्द्र सिंह बगड़िया
अति. जिला शिक्षा अधिकारी (मा.)
सीकर (राज.)

नीरज सिहाग
अति. जिला शिक्षा अधिकारी (मा.)
झुन्झुनू (राज.)

सांवरमल गहनोलिया
अति. जिला शिक्षा अधिकारी (मा.)
चूरू (राज.)

महेश सेवदा
संयोजक शेखावाटी मिशन-100
सीकर (राज.)

रामावतार भदाला
सहसंयोजक शेखावाटी मिशन-100
सीकर (राज.)

तकनीकी सहयोग

राजीव कुमार, निजी सहायक | पवन ढाका, कनिष्ठ सहायक | महेन्द्र सिंह कोक, सहा. प्रशा. अधिकारी | अभिषेक चौधरी, कनिष्ठ सहायक

जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (मुख्यालय), सीकर

शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, सीकर

माननीय शिक्षा मंत्री की कलम से.....

!! शुभकामना संदेश !!

सम्मानित शिक्षक साथियों,

हम सभी के लिए यह गौरव का विषय है कि राजस्थान शिक्षा के क्षेत्र में नित नये आयाम छू रहा है। नीति आयोग के नेशनल अचीवमेंट सर्वे (NAS) 2020 में राजस्थान सम्पूर्ण भारत में तीसरे स्थान पर रहा है। इस वर्ष राजस्थान, इंस्पायर अवार्ड मानक योजना में 8027 बाल वैज्ञानिकों के चयन के साथ पूरे देश में प्रथम स्थान पर रहा हैं। इसी परम्परा व सोच को निरन्तर बनाए रखने के प्रयास में इस वर्ष शेखावाटी मिशन–100 का क्रियान्वयन संयुक्त निदेशक परिक्षेत्र चूरु के अधीन जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक शिक्षा सीकर द्वारा किया जा रहा है। अनुभवी तथा ऊर्जावान विषय विशेषज्ञों की लगन व अथक मेहनत से माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान द्वारा जारी संशोधित पाठ्यक्रम व मॉडल पेपर के आधार पर विषयवस्तु व मॉडल पेपर तैयार किये गये हैं, जिनको बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन के लिए विद्यार्थियों तक पहुँचाया जा रहा है।

मैं इस मिशन प्रभारी सहित सभी विषयाध्यापकों की कर्मठ टीम को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने अपनी समर्पित कार्यशैली से इस नवाचारी कार्य को अंजाम दिया है। मेरा सभी संस्थाप्रधानों से आग्रह है कि वे सभी विषयाध्यापकों से समन्वय कर इस परीक्षोपयोगी सामग्री को विद्यार्थियों तक पहुँचाना सुनिश्चित करें।

मैं आशा करता हूँ कि आपका प्रयास पूरे प्रदेश के विद्यार्थियों के लिए एक नवाचार साबित होगा एवं उनके लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं सहित।

गोविन्द सिंह डोटासरा
शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
राजस्थान सरकार, जयपुर

निदेशक महोदय की कलम से.....

!! शुभकामना संदेश !!

सम्मानित शिक्षक साथियों,

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरु संभाग, चूरु के नेतृत्व में 'शेखावाटी मिशन–100' के तहत माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक परीक्षा 2021 में शामिल होने वाले विद्यार्थियों हेतु बोर्ड परीक्षा में उपयोगी विषयवस्तु एवं प्रश्नकोश तैयार किया जा रहा है हालांकि यह सत्र कोविड–19 के कारण प्रभावित रहा है इसमें विद्यार्थियों को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ा।

'शेखावाटी मिशन–100' की टीम ने विद्यार्थियों के हित को देखते हुए संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार नवाचार करने का प्रयास किया। विद्यार्थियों के लिए जो विषयवस्तु व प्रश्नकोश निर्माण किया है आशा करते है कि यह विद्यार्थियों के लिए निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करने में लाभदायक सिद्ध होगा।

प्रतिभाशाली और कर्मठ ऊर्जावान शेखावाटी मिशन–100 की टीम को मेरी ओर से हार्दिक बधाई और उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ।

शुभकामनाओं सहित।

सौरभ स्वामी (IAS)
निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,
बीकानेर

संयुक्त निदेशक की कलम से.....

!! शुभकामना संदेश !!

सम्मानित शिक्षक साथियों,

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की बोर्ड परीक्षाओं के परीक्षा परिणाम में मात्रात्मक एवं गुणात्मक अभिवृद्धि हेतु एक शैक्षिक नवाचार के रूप में 2017–18 में शेखावाटी मिशन–100 शुरु किया गया था। इस वर्ष शेखावाटी मिशन–100 की जिम्मेदारी संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा चूरु संभाग के नेतृत्व में जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक सीकर को मिली है। इस नवाचारी पहल ने पिछले 03 वर्षो में चूरु संभाग में बोर्ड परीक्षा परिणाम में सफलता के नये आयाम बनाये हैं।

पिछले वर्षो में मिली इस अभूतपूर्व सफलता से अभिप्रेरित होकर इस वर्ष शेखावाटी मिशन–100 का दायरा बढ़ाकर 17 विषयों तक किया गया है। इस वर्ष कक्षा–10 के 07 विषयों (संस्कृत व उर्दू सहित) तथा कक्षा 12 में 10 विषयों, जिनमें अनिवार्य हिन्दी व अंग्रेजी के अलावा विज्ञान संकाय में 04 विषयों (भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान व गणित) तथा कला संकाय में 04 विषयों (हिन्दी, साहित्य, राजनीति विज्ञान, इतिहास व भूगोल) के लिए बोर्ड द्वारा संशोधित पाठ्यक्रम व मॉडल पेपर के आधार पर अध्ययन सामग्री व मॉडल पेपर तैयार किये गये हैं। पाठ्य विषय वस्तु को इस प्रकार तैयार किया गया है कि सभी तरह के बौद्धिक स्तर वाले विद्यार्थी कम समय में भी अधिकतम अंक अर्जित कर सकेंगे।

शेखावाटी मिशन–100 में उन विषय विशेषज्ञों का चयन किया गया है जिनके पिछले वर्षो में अपने विषयों के गुणात्मक रूप से शानदार परीक्षा परिणाम रहे हैं।

मैं इस मिशन को सफल बनाने में सहयोग के लिए संभाग के सभी शिक्षा अधिकारियों एवं विषय विशेषज्ञों का तहेदिल से आभार व्यक्त करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

लालचन्द बलाई
संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू

शेखावाटी मिशन-100

बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्यक्रम सत्र : 2020–21
माध्यमिक परीक्षा – 2021

विषय : हिन्दी–10

सर्वश्रेष्ठ सफलता सुनिश्चित करने हेतु सर्वश्रेष्ठ संकलन

हरदयाल सिंह फगेड़िया
प्रभारी शेखावाटी मिशन–100
अति. जिला शिक्षा अधिकारी (मा.)
सीकर (राज.)

जगदीश प्रसाद
संयोजक हिन्दी
रा.मा.वि., आकवा (सीकर)
मो. : 9610002616

अशोक कुमार
सहसंयोजक हिन्दी
रा.उ.मा.वि., सिंगोदड़ा (सीकर)

महेन्द्र कुमार
सुभाष रा.मा.वि., फतेहपुर (सीकर)

भागोती कुमारी जांगिड़
रा.उ.मा.वि., भादवासी (सीकर)

शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, सीकर

कार्यालय : संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा), चुरू संभाग, चुरू

शेखावाटी मिशन – 100

विषय–हिन्दी कक्षा 10

सूरदास (जन्म : संवत् 1540 – निधन : संवत् 1620)

निम्नांकित प्रश्नों में से दिये गये सही विकल्प का चयन कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

प्रश्न 1. सूरदास को किसने अपने सिद्धान्तों में दीक्षित किया ?
(अ) माधवाचार्य (ब) राधवाचार्य (स) वल्लभाचार्य (द) इनमें से कोई नहीं।

प्रश्न 2. सूरदास की प्रामाणिक रचना कौन सी है?
(अ) सूर सारावली (ब) सूरसागर (स) साहित्य लहरी (द) अ, ब, स तीनों

प्रश्न 3. निम्न में से कौन सी रचना सूरदास की है?
(अ) सूर सारावली (ब) सूरसागर (स) साहित्य लहरी (द) अ, ब, स तीनों

प्रश्न 4. सूरदास के काव्य की भाषा कौन सी है ?
(अ) ब्रज (ब) अवधी (स) खड़ी बोली हिन्दी (द) राजस्थानी

प्रश्न 5. सूरदास का उद्धव–गोपी संवाद किस रूप में जाना जाता है?
(अ) भ्रमर गीत (ब) शोक गीत (स) लोकगीत (द) प्रणय निवेदन

प्रश्न 6. कृष्ण नें गोपिकाओं का क्या चुरा लिया था ?
(अ) दही और माखन (ब) वस्त्र (स) गायें (द) मन

प्रश्न 7. 'अपने तो पठवत नहीं मोहन' कृष्ण नें गोपिकाओं को क्या नहीं भेजा था ?
(अ) दही और माखन (ब) वस्त्र (स) संदेश (द) गाय

प्रश्न 8. 'पकरे हुते हृदय उर अंतर' गोपियां किसको अपने हृदय में पकड़े हुए थी ?
(अ) उद्धव को (ब) श्री कृष्ण को (स) सूरदास को (द) गायों को

प्रश्न 9: चकोर पक्षी का मन क्या खाकर संतुष्ट होता है ?
(अ) कपूर को (ब) दाख–छुहारों को (स) अंगारों को (द) विष को

प्रश्न 10. विषकीड़ा विष ही क्यों खाता है ?
(अ) विष स्वादिष्ट होता है (ब) मन को संतुष्टि मिलती (स) 'अ' व 'ब' दोनों (द) पता नही।

प्रश्न 11. निम्न में से 'अष्टछाप' के प्रमुख कवि कौन हैं ?
(अ) तुलसीदास (ब) जयशंकर प्रसाद (स) सूरदास (द) नागार्जुन

उत्तरमाला

1.(स) वल्लभाचार्य 2. (ब) सूरसागर 3.(द) अ, ब, स तीनों 4. (अ) ब्रज 5. (अ) भ्रमर गीत 6. (द) मन 7.(स) संदेश 8. (ब) श्री कृष्ण को 9. (स) अंगारों को 10. (ब) मन को संतुष्टि मिलती 11. (स) सूरदास

प्रश्न 12. निम्नांकित प्रश्नों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

1. सूरदास प्रभु रसिक........................., बातनि भुरई राधिका भोरी।
2. चौंकि परि जागत............................बीती, दूत मिल्यौ इक भौंर।
3. जिते पथिक गये ....कौ, बहुरि न सोध करें।
4. ज्यौं ....कों देई कपूर कोउ, तजि अंगार अघात।

उत्तरमाला

1. सिरोमनि 2. निसि 3. मधुबन 4. चकोर

अतिलघूत्तरात्मक, लघूत्तरात्मक व निबंधात्मक प्रश्न :–

प्रश्न 1. 'दै गये हँसनि अँकोर' इस पंक्ति में कृष्ण किसको मधुर मुस्कराहट रूपी रिश्वत दे गये ?
उत्तर : इस पंक्ति में श्री कृष्ण गोपिकाओं को अपनी मधुर मुस्कराहट रूपी रिश्वत दे गये।

प्रश्न 2. अपना हित जानते हुए भी पतंगा दीपक से क्यों लिपटता है ?
उत्तर : पतंगा दीपक से इसलिए लिपटता है क्योंकि उसके मन को वही सुहाता है।

प्रश्न 3. मधुप आखिरकार कमल के पुष्प में क्यों बंध जाता है?
उत्तर : कमल से अत्यधिक प्रेम के कारण अपनी मेहनत से बनाये काष्ठ के घर को छोड़कर कमल के पुष्प में बंध जाता है।

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न 4 'हमरे फिरि न फिरे' पंक्ति का आशय स्पष्ट करो।

उत्तर : गोपिकाएं उद्धव से कहती हैं कि हमने बहुत से संदेश कृष्ण का भेजे परन्तु उनका कोई प्रत्युत्तर नहीं आया ।

प्रश्न 5. श्री कृष्ण नें भोली राधा को किस प्रकार बहलाया ?

उत्तर : श्री कृष्ण ने भोली राधा को अपनी चतुराई भरी मधुर बातों से बहलाया।

प्रश्न 6. वल्लभाचार्य से दीक्षा लेने के पश्चात सूरदास की भक्ति मे क्या परिवर्तन आया ?

उत्तर : वल्लभाचार्य से दीक्षा लेने के पश्चात सूरदास की भक्ति दास भाव से सखा भाव में परिणत हो गई।

प्रश्न 7. गोपियों को भ्रमर के रूप में कौन–सा दूत मिला ?

उत्तर : गोपियों को भ्रमर के रूप में कृष्ण का दूत उद्धव मिला।

प्रश्न 8. प्रथम मिलन के अवसर पर श्री कृष्ण ने राधिका से क्या कहा ?

उत्तर : प्रथम मिलन के अवसर पर श्री कृष्ण ने राधिका से कहा कि हे ! गौरी, तुम कहाँ रहती हो और किसकी बेटी हो ? तुम्हे कभी ब्रज की गलियों में नहीं देखा।

प्रश्न 9. श्री कृष्ण ने क्या कह कर राधा को अपने साथ खेलने के लिए मना लिया ?

उत्तर : श्री कृष्ण ने कहा कि मैंने तुम्हारा तो कुछ नहीं चुराया, इसलिए तुम मेरे साथ जोड़ी बनाकर खेलने चलो।

प्रश्न 10. गोपिकाओं के अनुसार वे नन्द के बेटे के बारे में क्या सुनती रहती हैं ?

उत्तर : गोपिकाएं सुनती रहती हैं कि नन्द बाबा का बेटा कृष्ण दही माखन चुराता फिरता है।

प्रश्न 11. गोपिकाओं के अनुसार खोज करने का विषय क्या है ?

उत्तर : गोपिकाओं के अनुसार जितने भी पथिक मथुरा गये वे या तो बीच राह में मर गये या फिर कृष्ण ने उनको प्रलोभन देकर अपने वश में कर लिया। यही खोज का विषय है।

प्रश्न 12. 'उधो मन माने की बात' गोपिकाएं उद्धव से ऐसा क्यों कहती हैं ?

उत्तर : उद्धव ने गोपिकाओं को कहा कि आप निर्गुण, निराकार, परम ब्रह्म की आराधना करें, तब गोपिकाओं नें कहा कि हमारे लिए श्री कृष्ण को भूल पाना असंभव है। मन पर किसी का वश नहीं चलता है। हमारा मन केवल कृष्ण में ही लगा है। अतः हम तुम्हारे बताये मार्ग पर नहीं चल सकती। ये तो मन माने की बात है।

प्रश्न 13. श्री कृष्ण द्वारा संदेश न भेजने पर गोपिकाएं क्या–क्या शंकाए व्यक्त करती हैं ?

उत्तर : श्री कृष्ण द्वारा संदेश न भेजे जाने पर गोपिकाएं शंका व्यक्त करती हुई कहती हैं कि हो सकता है मथुरा कागज गल गये होंगे या कलम बनाने वाले पेड़ों के जंगलों में आग लग गयी या फिर स्याही सूख गयी होगी।

प्रश्न 14. 'चौंकि परी जागत निसि बीती' गोपिकाओं के चौंकने का क्या कारण था ?

उत्तर : गोपिकाएं कृष्ण के प्रेम में मग्न थी परंतु वे सब बंधनों को तोड़ कर मथुरा चलें गयें एवं अपने दूत के रूप में उद्धव को भेजा तो तब उनको श्री कृष्ण समझने लगती हैं परन्तु वास्तविकता का पता चलने पर उस को देखकर गोपिकाएं चौंक जाती है।

प्रश्न 15. सूरदास का संक्षिप्त जीवन परिचय दीजिए।

उत्तर : भक्तिकालीन सगुण भक्ति काव्य परम्परा के प्रमुख कृष्ण भक्त कवि सूरदास का जन्म संवत 1540 में हुआ। इनका जन्म आगरा के निकट 'रूनकता' नामक ग्राम माना जाता है। कुछ विद्वान दिल्ली के निकट 'सीही' को इनकी जन्मस्थली मानते हैं। इनके पिता का नाम रामदास बताया जाता है। वार्ता साहित्य और भक्तमाल के आधार पर ये सारस्वत ब्राह्मण कहे जाते हैं परन्तु साहित्य लहरी के एक पद के अनुसार ये पृथ्वीराज के अमात्य और राजकवि चन्दरवरदाई के वंशज ब्रह्मभट्ट मालूम होते है।

ये जन्मांध थे, परन्तु विद्वानों में इस विषय में मतभेद है। मथुरा के गऊघाट पर ये गुरू वल्लभाचार्य से दीक्षित होने के पश्चात इनकी भक्ति दास्य भाव से सख्य भाव में परिणत हो गयी। सूरदास अष्टछाप के कवियों में प्रमुख स्थान रखते हैं। गुरू वल्लभाचार्य के निर्देश पर इन्होंने श्री कृष्ण की लीलाओं पर आधारित पदों की रचना की। सूरदास ने ब्रज भाषा का प्रयोग किया। इनके पूर्ववर्ती किसी भी कवि की भाषा न तो इतनी साहित्यिक है और न इतनी सौंदर्यपूर्ण। इन्हें हिन्दी साहित्य में 'वात्सल्य साम्रट' के रूप में जाना जाता है।

सूरदास की तीन रचनाएँ मिलती हैं –'सूर सागर', 'सूर सारावली' एवं 'साहित्य लहरी' जिनमें सूर सागर अत्युत्तम, श्रेष्ठ एवं प्रामाणिक रचना है।

प्रश्न 16. निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

1. ऊधौ मन माने की बात।..सोई ताहि सुहात ।।

2. संदेसनि मधुबन कूप भरे...पलक कपाट अरे।।

तुलसीदास (जन्म : संवत् 1589 – निधन : संवत् 1680)

लक्ष्मण–परशुराम संवाद

निम्नांकित प्रश्नों में से दिये गये सही विकल्प का चयन कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

प्रश्न 1. तुलसीदास के गुरू का नाम क्या है ?

(अ) माधवाचार्य (ब) नरहरिदास (स) सूरदास (द) इनमें से कोई नहीं।

प्रश्न 2. तुलसीदास की पत्नी का नाम बताओ ?

(अ) रत्नावली (ब) राधिका (स) सीता (द) रूक्मिनी

प्रश्न 3. 'रामचरितमानस' की रचना किसने की ?

(अ) सूरदास (ब) तुलसीदास (स) नागार्जुन (द) बिहारी

प्रश्न 4 तुलसीदास की भक्ति थी–

(अ) दास्य भाव (ब) सख्य भाव (स) वात्सल्य भाव (द) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 5. लक्ष्मण–परशुराम संवाद 'रामचरितमानस' के किस भाग से उद्धृत है ?

(अ) लंका काण्ड (ब) अयोध्या काण्ड (स) अरण्य काण्ड (द) बाल काण्ड

प्रश्न 6 "नाथ संभु धनु भंजनिहारा" पंक्ति में 'नाथ' शब्द किसके लिये प्रयुक्त हुआ है?

(अ) परशुराम (ब) विश्वामित्र (स) राम (द) लक्ष्मण

प्रश्न 7. "भृगुसुत" व ''भृगुबंसमनि'' शब्द किसके लिये प्रयुक्त हुए हैं ?

(अ) परशुराम (ब) विश्वामित्र (स) राम (द) लक्ष्मण

प्रश्न 8. "गाधिसूनु" व 'कौशिक' शब्द किसके लिये प्रयुक्त हुए हैं ?

(अ) परशुराम (ब) विश्वामित्र (स) राम (द) लक्ष्मण

प्रश्न 9. 'भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही' पंक्ति में निहित अलंकार का नाम है–

(अ)रूपक (ब) उपमा (स) अनुप्रास (द) यमक

प्रश्न 10. 'बालकु बोलि बधउँ नहीं तोहि' पंक्ति में निहित अलंकार का नाम है–

(अ)रूपक (ब) उपमा (स) अनुप्रास (द)यमक

उत्तरमाला

1. (ब) नरहरिदास 2. (अ) रत्नावली 3. (ब) तुलसीदास 4. (अ) दास्य भाव 5. (द) बाल काण्ड 6. (अ) परशुराम 7. (अ) परशुराम 8. (ब) विश्वामित्र 9. (स) अनुप्रास 10. (स) अनुप्रास

प्रश्न 11. निम्नांकित प्रश्नों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

1. सुनहु राम जेंहि..................तोरा। सहस्रबाहु सम सो रिपु मोरा।।
2. भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही, बिपुल बार .... दीन्ही।।
3. कोटि कुलिश सम .... तुम्हारा, ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा।।
4. माता पितहि ....भय नीके गुरु रिनु रहा सोचु बड़ जीकें।

उत्तरमाला

1. सिवधनु 2. महिदेवन्ह 3. बचन 4. उरिन

अतिलघूत्तरात्मक, लघूत्तरात्मक व निबंधात्मक प्रश्न :–

प्रश्न 1. तुलसी का काव्य हमें क्या संदेश देता है ?

उत्तर : तुलसीदास आदर्शवादी कवि हैं। तुलसी ने आदर्श चरित्रों का सृजन कर हमें अपने दैनिक जीवन में उनके अनुकरण का संदेश दिया है।

प्रश्न 2. लक्ष्मण ने अपने कुल रघुवंश की क्या परम्परा बताई ?

उत्तर : लक्ष्मण ने कहा कि उनके वंश में देवताओं, ब्राह्मणों, भगवान के भक्तों और गायों पर वीरता प्रदर्शित नहीं की जाती है।

प्रश्न 3. लक्ष्मण ने 'द्विजदेवता' किसे कहा है ?

उत्तर : लक्ष्मण ने 'द्विजदेवता' परशुराम को कहा है।

प्रश्न 4. लक्ष्मण ने परशुराम के वचन किस प्रकार के बताये हैं ?

उत्तर : लक्ष्मण ने परशुराम के वचनों को करोड़ों वज्रों के समान कठोर बताये हैं।

प्रश्न 5. "मारतहुँ पा परिअ तुम्हारे" लक्ष्मण ने परशुराम से ऐसा क्यों कहा ?

उत्तर : लक्ष्मण ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि परशुराम ब्राह्मण है, उनके कुल में ब्राह्मण पर वीरता का प्रदर्शन नहीं किया जा सकता है। अतः परशुराम जी हमें मारेंगे तो भी हम आपके चरणों में ही पड़े रहेंगे।

प्रश्न 6. लक्ष्मण ने महान् योद्धा की क्या विशेषताएं बताई हैं ?

उत्तर : लक्ष्मण ने कहा कि महान योद्धा शत्रु को रणभूमि में सामने देख कर अपना परिचय पराक्रम से युद्ध करके देते हैं न कि बड़ी –बड़ी बातें बनाकर।

प्रश्न 7. "इहाँ कुम्हडबतिया कोउ नाहीं" पंक्ति का आशय स्पष्ट करो–

उत्तर : लक्ष्मण कह रहे हैं कि वह कोई डरपोक और दुर्बल व्यक्ति नहीं जो जरा सी धमकी देने से घबरा जाएँगे जिस प्रकार छुईमुई का पौधा मात्र उँगली दिखाने मात्र से सिकुड़ जाएगा।

प्रश्न 8. राजसभा में परशुराम ने अपना परिचय किस प्रकार दिया ?

उत्तर : राजसभा में परशुराम ने अपने को बाल ब्रह्मचारी, अत्यधिक क्रोधी, क्षत्रिय कुल का दुश्मन एवं सहस्रबाहु की भुजाओं को काटने वाला कह कर परिचय दिया।

प्रश्न 9. "गाधिसूनु कह हृदयँ हँसि'' विश्वामित्र मन ही मन क्यों हँस रहे थे ?

उत्तर : जब परशुराम ने कहा कि लक्ष्मण को मार कर गुरु ऋण से उऋण हो जाऊँगा, तब विश्वामित्र मन ही मन हँस रहे थे कि परशुराम को हरा ही हरा सूझ रहा है अर्थात् राम और लक्ष्मण को सहस्रबाहु की भांति सामान्य क्षत्रिय समझ रहे थे जबकि वास्तविकता यह थी कि राम व लक्ष्मण अवतारी पुरुष हैं।

प्रश्न 10. ''भानु बंस राकेस कलंकू'' परशुराम ने ये किसे किसको कहा ?

उत्तर : परशुराम ने सूर्यवंश रूपी चंद्रमा का कलंक लक्ष्मण को कहा।

प्रश्न 11. परशुराम के अनुसार विश्वामित्र लक्ष्मण को किस प्रकार बचा सकते हैं ?

उत्तर : परशुराम विश्वामित्र से कहते कि तुम मेरे गुस्से और प्रताप के बारे में लक्ष्मण को बताकर उसका उद्धार कर सकते हो।

प्रश्न 12. राजदरबार में बैठी जनता किसे अनुचित कह रही थी ?

उत्तर : लक्ष्मण ने अशिष्ट और कटु शब्दों से परशुराम के आचरण की हँसी उड़ाई एवं अपमानजनक आक्षेप लगाकर मर्यादा तोड़ी जिसे राजा जनक के राज दरबार में बैठी जनता ने अनुचित कहा।

प्रश्न 13. ''लखन उतर आहुति सरिस'' लक्ष्मण–परशुराम संवाद पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : शिव धनुष भंग हो जाने पर परशुराम अत्यधिक क्रोधित हो जाते हैं। वह राजा जनक के दरबार में राम, लक्ष्मण और विश्वामित्र से पूछते हैं कि ये कृत्य किसने किया है ? परशुराम की अहंकार पूर्ण घोषणा के प्रत्युत्तर में लक्ष्मण उन पर व्यंग्य पूर्ण प्रहार करते हैं। परशुराम और भी क्रुध होकर लक्ष्मण को धमकाने लगते हैं। वे जितना भड़कते हैं लक्ष्मण उतने ही चुभने वाले और सटीक व्यंग्य कर उन्हें और चिढ़ाते हैं। तब ऐसा लगता जैसे लक्ष्मण के व्यंग्य बाण यज्ञ में आहुति के समान आग बढ़ाने वाले हैं।

प्रश्न 14. निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(क) लखन कहा हसि हमरे जाना।...परशु बिलोकु महीप कुमारा ।।

(ख) तुम्ह तौ काल हाँक जनु लावा।..गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरें।।

जयशंकर प्रसाद (जन्म : 1889 ई. – निधन : 1937 ई.)

प्रभो

निम्नांकित प्रश्नों में से दिये गये सही विकल्प का चयन कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

प्रश्न 1. निम्न में से कौन छायावादी कवि हैं ?
(अ) तुलसीदास (ब) जयशंकर प्रसाद (स) सूरदास (द) नागार्जुन

प्रश्न 2. जयशंकर प्रसाद का जन्म कब हुआ ?
(अ) सन् 1880 (ब) सन् 1989 (स) सन् 1889 (द) सन् 1937

प्रश्न 3. जयशंकर प्रसाद का निधन कब हुआ ?
(अ) सन् 1880 (ब) सन् 1837 (स) सन् 1889 (द) सन् 1937

प्रश्न 4. जयशंकर प्रसाद के किस काव्य की तुलना संसार के श्रेष्ठतम काव्यों में की जाती है ?
(अ) आँसू (ब) झरना (स) लहर (द) कामायनी

प्रश्न 5. जयशंकर प्रसाद की 'प्रभो' कविता उनके किस काव्य संग्रह से ली गई है ?
(अ) कानन कुसुम (ब) झरना (स) लहर (द) आँसू

प्रश्न 6. जयशंकर प्रसाद द्वारा संपादित पत्रिका का नाम है–
(अ) प्रभा (ब) इन्दु (स) माधुरी (द) सरस्वती

प्रश्न 7. जयशंकर प्रसाद का कौनसा उपन्यास अपूर्ण है–
(अ) कंकाल (ब) तितली (स) इरावती (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

प्रश्न 8. 'अंशुमाली' का शाब्दिक अर्थ है–
(अ) सूर्य (ब) चन्द्रमा (स) तारे (द) पृथ्वी

प्रश्न 9. प्रभो कविता के अनुसार 'अंशुमाली' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है–
(अ) सूर्य (ब) चन्द्रमा (स) ईश्वर (द) मानव

प्रश्न 10. ''जो तेरी होवे दया दयानिधि, तो पूर्ण होता ही है मनोरथ।'' पंक्ति में 'दयानिधि' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?
(अ) सूर्य (ब) चन्द्रमा (स) ईश्वर (द) मानव

उत्तरमाला

1.(ब) जयशंकर प्रसाद 2. (स) सन् 1889 3. (द) सन् 1937 4. (द) कामायनी 5. (अ) कानन कुसुम 6 (ब) इन्दु 7. (स) इरावती 8. (अ) सूर्य 9. (स) ईश्वर 10. (स) ईश्वर

प्रश्न 11. निम्नांकित प्रश्नों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।
1. अनादि तेरी..................माया, जगत को लीला दिखा रही है।
2. विशाल मंदिर की.................... में, जिसे देखना हो दीपमाला।
3. जो तेरी होवे दया..........................., तो पूर्ण होता ही है मनोरथ।

उत्तरमाला

1. अनन्त 2. यामिनी 3. दयानिधि

अतिलघूत्तरात्मक, लघूत्तरात्मक व निबंधात्मक प्रश्न :–

प्रश्न 1. ईश्वर के प्रकाश का परिचय कौन दे रहा है ?
उत्तर : चन्द्रमा अपनी निर्मल और विशाल किरणें फैलाकर ईश्वर के प्रकाश का परिचय दे रहा है।

प्रश्न 2. ईश्वर की दया का प्रसार कितना है ?
उत्तर : ईश्वर की दया का प्रसार महासागर जितना विस्तृत है।

प्रश्न 3. ईश्वर की प्रशंसा के गीत कौन गा रहा है ?
उत्तर : ईश्वर की प्रशंसा के गीत महासागर में उठने वाली तरंग–मालाएं गा रही हैं।

प्रश्न 4. कवि को ईश्वर की हँसी कहाँ सुनाई देती है ?
उत्तर : ईश्वर की हँसी नदियों के कल–निनाद में सुनी जा सकती है।

प्रश्न 5. ''विशाल मंदिर की यामिनी में'' पंक्ति मे 'विशाल मंदिर' किसे कहा गया है ?
उत्तर : सम्पूर्ण संसार को ही विशाल मंदिर कहा गया है।

प्रश्न 6. कवि प्रसाद ने 'प्रभो' कविता में ईश्वर को किन–किन नामों से संबोधित किया है ?
उत्तर : कवि जयशंकर प्रसाद ने 'प्रभो' कविता में ईश्वर को 'अनादि', 'अनन्त', 'प्रेममय प्रकाश', 'प्रकृति–पद्मिनी के अंशुमाली', दयानिधि' एवं 'असीम उपवन का माली' आदि संज्ञाओं से संबोधित किया है।

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न 7. कवि ने ईश्वर को 'अनादि' और 'अनन्त' क्यों बताया है ?

उत्तर : जिसके जन्म अथवा उत्पत्ति का पता न हो या जो सर्वप्रथम हो उसे अनादि कहा जाता है। परम पिता परमेश्वर कौन हैं?, इनके माता पिता कौन है?, ये ज्ञात नहीं है। वेद, पुराणादि में भी ईश्वर को अनादि कहा गया है। फिर भी परम ईश्वर की सत्ता है और वही सम्पूर्ण सृष्टि का सृजनकर्ता और संहारक है। अर्थात् ईश्वर के न आदि और न अंत का पता है। इसीलिए कवि ने ईश्वर को अनादि और अनन्त कहा है।

प्रश्न 8. 'प्रभो' कविता का मूल भाव / प्रतिपाद्य / केन्द्रीय भाव लिखिए।

उत्तर : 'प्रभो' कविता में कवि प्रसाद ने सृष्टि के सृजनकर्ता ईश्वर की स्तुति की है। इस कविता का मूल भाव या प्रतिपाद्य या केन्द्रीय भाव यही बताना है कि परम पिता परमेश्वर सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान है। सम्पूर्ण चराचर जगत ईश्वर की माया, शक्ति और गुणों से युक्त है। ईश्वर की दया से ही यह सृष्टि चल रही है एवं हम सबके मनोरथ पूर्ण होते हैं। अतः ईश्वर पर पूर्ण आस्था और विश्वास रखना चाहिए।

प्रश्न 9. 'प्रभो' कविता के कला एवं भाव पक्ष की संक्षिप्त विवेचना कीजिए–

उत्तर : **कला पक्ष–** जयशंकर प्रसाद की 'प्रभो' कविता छायावादी शैली की है। इसमें कवि ने प्रकृति के प्रत्येक उपादान को रूपक एवं मानवीकरण अलंकार के द्वारा ईश्वर का व्यक्त स्वरूप बताया है। खड़ी बोली हिन्दी में रचित इस कविता की भाषा संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्द युक्त है जो भावाभिव्यक्ति का सुन्दर उदाहरण है। इसमें अलंकारों का सहज ही प्रयोग हुआ है। लयात्मकता, सरसता और मौलिकता की दृष्टि से यह कविता उत्तम कोटि की है।

भाव पक्ष– प्रस्तुत कविता में कवि प्रसाद ने ईश्वर के प्रति आस्था प्रकट की है। कवि ने ईश्वर को सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सम्पूर्ण सृष्टि का सृजक और रक्षक बताया है और उसके सौन्दर्य एवं प्रेमयुक्त स्वरूप को संसार पर दया रखने वाला बताया है। अन्त में ईश्वर को सभी मनोरथ पूर्ण करने वाला बता कर अपनी आस्था और विश्वास प्रकट किया है। भक्ति, आस्था एवं विश्वास की दृष्टि से कविता का भाव पक्ष बेजोड़ है।

प्रश्न 10. 'जयशंकर प्रसाद' का जीवन एवं साहित्यिक परिचय दीजिए।

उत्तर : **'जयशंकर प्रसाद' का जीवन परिचय–**

छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी में सन् 1889 में हुआ था । इनके पिता देवीप्रसाद विद्यानुरागी थे, जिन्हे लोग सुँघनी साहु कहकर बुलाते थे। प्रसाद जी की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। बाद में इन्हें क्वींस कॉलेज में अध्ययन हेतु भेजा गया। अल्प आयु में ही अपनी मेधा से संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, फारसी और अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। बचपन से ही इनकी रुचि साहित्य की ओर थी। 'इन्दु' नामक पत्रिका के सम्पादन से इनको साहित्य जगत् में पहचान मिली । 15 नवम्बर 1937 को हिन्दी साहित्य का यह अमर कवि सदा के लिए संसार से विदा हो गया।

'जयशंकर प्रसाद' का साहित्यिक परिचय –

प्रसाद जी साहित्य जगत् में छायावाद के प्रमुख आधार स्तंभ व अग्रण्य माने जाते हैं और कवि एवं नाटककार के रूप में इनकी ख्याति है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। 'कामायनी' इनका अन्यतम काव्य ग्रंथ है जिसकी तुलना संसार के सर्वश्रेष्ठ काव्यों में की जाती है। 'सत्यं शिवमं सुन्दरं' का जीता –जागता रूप प्रसाद जी के काव्य में मिलता है। मानव सौंदर्य के साथ–साथ इन्होंने प्रकृति सौन्दर्य का सजीव व मौलिक चित्रण किया है। इन्होंने ब्रजषषा एवं खड़ी बोली हिन्दी दोनों का प्रयोग किया है। इनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ है।

प्रमुख कृतियाँ–

1. काव्य– आँसू, लहर, झरना, कामायनी, प्रेमपथिक, चित्राधार।
2. नाटक– ध्रुवस्वामिनी, विशाखा, राज्यश्री, अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, एक घूँट
3. उपन्यास– कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण)
4. कहानी– आकाशदीप, प्रतिध्वनि, पुरस्कार, गुण्डा, आँधी, छाया, इन्द्रजाल।
5. निबंध– काव्यकला तथा अन्य निबंध।

शेखावाटी मिशन–100

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (जन्म : 1896 ई. – निधन : 1961 ई.)
'अभी न होगा मेरा अन्त' और 'मातृ–वंदना'

निम्नांकित प्रश्नों में से दिये गये सही विकल्प का चयन कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

प्रश्न 1. 'निराला' उपनाम से छायावाद का कौनसा कवि प्रसिद्ध है ?

(अ) महादेवी वर्मा (ब) जयशंकर प्रसाद (स) सूर्यकांत त्रिपाठी (द) सुमित्रा नन्दन

प्रश्न 2. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की पुत्री का क्या नाम था जिसकी मृत्यु ने उन्हें भीतर तक झकझोर दिया ?

(अ) सरोज (ब) सुमित्रा (स) शारदा (द) संतोष

प्रश्न 3. 'अभी न होगा मेरा अन्त ' कविता में जीवन की किस अवस्था की अभिव्यक्ति है ?

(अ) बाल्यावस्था (ब) किशोरावस्था (स) युवावस्था (द) वृद्धावस्था

प्रश्न 4. 'मृदुल वसन्त' जीवन के किस पड़ाव का प्रतीक है?

(अ) बचपन (ब) यौवन (स) बुढ़ापा (द) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 5. 'शतदल' शब्द का अर्थ है–

(अ) कमल (ब) पतझड़ (स) भँवरा (द) कुमुदिनी

प्रश्न 6. 'प्रत्यूष' का शाब्दिक अर्थ है–

(अ) प्रातःकाल (ब) पतझड़ (स) सूर्य (द) मालिक

उत्तरमाला

1. (स) सूर्यकांत त्रिपाठी 2. (अ) सरोज 3. (स) युवावस्था 4. (ब) यौवन 5. (अ) कमल 6. (अ) प्रातःकाल

प्रश्न 7. निम्नांकित प्रश्नों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

1. अभी–अभी ही तो आया है मेरे जीवन में ....वसंत।
2. इसमें कहाँ मृत्यु ? है .... ही जीवन।
3. नर जीवन के स्वार्थ सकल बलि हों तेरे ....पर, माँ।
4. बाधाएं आये................... पर देखूँ तुझे नयन मन भर

उत्तरमाला

1. मृदुल 2. जीवन 3. चरणों 4. तन

अतिलघूत्तरात्मक, लघूत्तरात्मक व निबंधात्मक प्रश्न :–

प्रश्न 1. मातृ–वंदना कविता में कवि ने 'माँ' संबोधन किसके लिए किया है ?

उत्तर : भारत माता के लिए।

प्रश्न 2. 'बाधाएँ आएँ तन पर' मातृ–वंदना कविता में कवि बाधा आने पर भी क्या करना चाहते हैं ?

उत्तर : कवि बाधा आने पर भी मातृ–भूमि को जी भर कर देखना चाहते हैं।

प्रश्न 3. 'अभी न होगा मेरा अन्त' कविता में 'निद्रित कलियाँ' किसे कहा है ?

उत्तर : 'अभी न होगा मेरा अन्त' कविता में 'निद्रित कलियाँ' आलस्य और निराशा में डूबे व्यक्ति को कहा है।

प्रश्न 4. 'मातृ–वंदना' कविता में कवि मातृ–भूमि पर क्या–क्या न्योछावर करना चाहते हैं ?

उत्तर : 'मातृ–वंदना' कविता में कवि मातृ–भूमि पर मनुष्य जीवन के समस्त स्वार्थ, श्रम सिंचित समस्त कर्मफल और अपने तन को न्योछावर करना चाहते हैं।

प्रश्न 5. 'सकल श्रेय श्रम संचित फल' पंक्ति में निहित अलंकार का नाम बताओ ?

उत्तर : अनुप्रास अलंकार

प्रश्न 6. 'हरे–हरे ये पात' और 'पुष्प–पुष्प से तन्द्रालस लालसा' पंक्ति निहित अलंकार का नाम बताओ ?

उत्तर : पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार

प्रश्न 7. 'द्वार दिखा दूँगा फिर उनको' से कवि का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर : आलस्य ग्रस्त लोगों को जागृत करके उनको इससे बाहर निकलने का मार्ग दिखा दूँगा अर्थात् उन्हें सफल होने का मार्ग दिखा दूँगा।

प्रश्न 8. 'अभी न होगा मेरा अन्त' कविता के अनुसार वसंत आगमन पर प्रकृति में क्या–क्या परिवर्तन होते हैं ?

उत्तर : वसंत ऋतु आने पर चारों ओर सुन्दर प्राकृतिक दृश्य दिखाई देने लगते हैं। वृक्षों में हरे–हरे पत्ते निकल आते हैं। डालियों पर कोमल कलियाँ प्रस्फुटित होने लगती हैं। सूर्योदय के समय सूर्य की किरणों के स्पर्श से कलियाँ पुष्प बनने लगती हैं। पूरे वातावरण में एक नयी ताजगी सी आ जाती है।

प्रश्न 9. 'अभी न होगा मेरा अन्त ' कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : निराला की प्रस्तुत कविता जीवन की युवावस्था को अभिव्यक्त करते हुए हृदय की जीवन्तता को प्रकट करती है। युवावस्था जीवन का सर्वोत्तम सुअवसर है। कवि संदेश देना चाहते हैं कि हमें जीवन में निरन्तर उत्साह बनाये रखना चाहिए। कवि चाहते हैं कि युवावस्था हाथ पर हाथ धरकर बैठने का समय नहीं है अपितु अपने कर्म–सौन्दर्य को निष्ठापूर्वक बढ़ाते रहना चाहिए। कवि इस रचना के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि मनुष्य को आत्मविश्वास और उत्साह के साथ यह जीवन व्यतीत करना चाहिए। कवि अन्त की उपेक्षा करते हुए आरंभ को महत्व देते हैं। कवि की यह कविता प्रेरणादायक व निराला के प्रखर आशावाद और जिजीविषा से परिपूर्ण है।

प्रश्न 10. 'मातृ–वंदना ' कविता का मूल भाव स्पष्ट करो।

उत्तर : 'मातृ–वंदना' कविता में निराला का राष्ट्र के प्रति प्रेम प्रकट हुआ है। कवि अपने श्रम से सिंचित समस्त कर्मफलों को माँ भारती के चरणों में अर्पित कर अपने आप को धन्य महसूस कर रहे हैं। कवि जीवन–पथ की समस्त समस्याओं को पार करते हुए भारत–माता की सेवा में अपना बलिदान कर उसे हर दुःख से मुक्त करना चाहते हैं। कवि ने समस्त देशवासियों के समक्ष देश के प्रति उनके पवित्रतम कर्तव्य को प्रस्तुत किया है। कवि ने मातृभूमि को स्वतंत्र और सुखी बनाने के लिए सर्वस्व समर्पण कर देने को सबसे महान कर्तव्य बताया है।

प्रश्न 11. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का संक्षिप्त जीवन परिचय दीजिए।

उत्तर : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म 1896 ई. को बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल में हुआ। हिन्दी साहित्य में महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी मूलतः छायावादी कवि हैं। 'निराला' उपनाम से प्रसिद्ध कवि का जन्म वसंत पंचमी को हुआ था। तीन वर्ष की बाल्यावस्था में माँ, युवावस्था में पिताजी, प्रथम विश्व युद्ध में फैली महामारी में पत्नी, चाचा, भाई व भाभी और अंत में पुत्री सरोज की मृत्यु ने निराला को भीतर तक झकझोर दिया। अपने जीवन में निराला ने मृत्यु का जैसा साक्षात्कार किया था, उसकी अभिव्यक्ति उनकी कविताओं में मिलती है। निराला ने उपन्यास, कहानी, आलोचना विधाओं में लेखन कार्य किया परन्तु मूलतः वे कवि हैं। उनकी कविताओं में जीवन का यथार्थ चित्रण जैसे मानव की पीड़ा, परतंत्रता के प्रति तीव्र आक्रोश, अन्याय तथा विषम जीवन परिस्थितियों के प्रति संघर्ष की अदम्य गूँज सुनाई देती है।

महाप्राण निराला की प्रमुख रचनाएँ –'अनामिका', 'परिमल', 'गीतिका', 'तुलसीदास', 'कुकुरमुत्ता', 'राम की शक्ति पूजा', 'सरोज–स्मृति' इत्यादि

शेखावाटी मिशन–100

सुभद्रा कुमारी चौहान (जन्म :1904 ई. – निधन : 1948 ई.)
झाँसी की रानी

निम्नांकित प्रश्नों में से दिये गये सही विकल्प का चयन कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

प्रश्न 1. 'झाँसी की रानी' कविता के रचयिता हैं–
(अ) महादेवी वर्मा (ब) जयशंकर प्रसाद (स) सुभद्रा कुमारी चौहान (द) नागार्जुन

प्रश्न 2. सुभद्रा कुमारी चौहान को किस रचना के लिए हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रसिद्ध 'सेकसरिया पारितोषिक' मिला है–
(अ) बिखरे माती (ब) मुकुल (स) कर्मवीर (द) अ व ब दोनों

प्रश्न 3. सुभद्रा कुमारी चौहान का प्रसिद्ध कहानी संग्रह का नाम है–
(अ) बिखरे माती (ब) मुकुल (स) कर्मवीर (द) चुनिन्दे मोती

प्रश्न 4. क्रांतिकारी लक्ष्मी बाई की अदम्य शौर्य गाथा का वर्णन किस कविता में किया है–
(अ) झाँसी की रानी (ब) रानी (स) नीलदेवी (द) चुनिन्दे मोती

प्रश्न 5. 'झाँसी की रानी' कविता में रानी लक्ष्मी बाई ने –
(अ) अंग्रेजों से लड़ाई की (ब) भारतीय राजाओं में आशा का संचार किया
(स) वीरगति प्राप्त की (द) सभी

प्रश्न 6. 'झाँसी की रानी' शीर्षक कविता में युद्ध–क्षेत्र से जख्मी होकर कौन भागा था–
(अ) स्मिथ (ब) डलहौजी (स) ह्यूरोज (द) वॉकर

प्रश्न 7. देश में व्यापारी बन कर कौन आये थे–
(अ) अंग्रेज (ब) पाकिस्तानी (स) अफ्रीकन (द) जापानी

प्रश्न 8. महारानी लक्ष्मी बाई की आराध्य भवानी कौन थी–
(अ) महाराष्ट्र कुल देवी (ब) राजस्थान कुल देवी (स) गुजरात कुल देवी (द) ग्वालियर कुल देवी

प्रश्न 9. महारानी लक्ष्मी बाई को किसकी कहानी जुबानी याद थी–
(अ) कुंवर सिंह (ब) वीर शिवाजी (स) अंग्रेजों की (द) नाना साहब

उत्तरमाला

1. (स) सुभद्रा कुमारी चौहान 2. (द) अ व ब दोनों 3. (अ) बिखरे माती 4. (अ) झांसी की रानी 5. (द) सभी 6. (द) वॉकर
7. (अ) अंग्रेज 8.(अ) महाराष्ट्र कुल देवी 9. (ब) वीर शिवाजी

प्रश्न 10. निम्नांकित प्रश्नों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

1. गुमी हुई .... की कीमत, सबने पहचानी थी।
2. वीर ....की गाथाएँ, उसको याद जुबानी थी।
3. अश्रुपूर्ण रानी ने देखा, ... हुई बिरानी थी।
4. किन्तु काल गति चुपके–चुपके काली ....घेर लायी।
5. उनके गहने कपड़े बिकते थे..................के बाजार।

उत्तरमाला

1. आजादी 2. शिवाजी 3. झाँसी 4. घटा 5. कलकत्ते।

अतिलघूत्तरात्मक, लघूत्तरात्मक व निबंधात्मक प्रश्न :–

प्रश्न 1. कवयित्री को आजादी गुमी हुई सी क्यों लगी ?

उत्तर : तत्कालीन समय में भारत के सभी राजा–महाराजा निराश और हताश हो गये थे एवं कोई भी स्वतंत्रता के लिए किसी प्रकार का प्रयास नहीं किया जा रहा था। ऐसी स्थिति में आजादी एक प्रकार से गुम सी हो गई थी।

प्रश्न 2. लक्ष्मी बाई बचपन में कौन कौन से खेल खेला करती थी ?

उत्तर : लक्ष्मी बाई बचपन में नकली युद्ध करना, व्यूह रचना, शिकार खेलना, सेना को घेरना, दुर्ग तोड़ना जैसे खेल खेला करती थी ।

प्रश्न 3. 'किन्तु काल गति चुपके–चुपके काली घटा घेर लायी' इस पंक्ति में कवयित्री किस घटना की ओर संकेत कर रही है ?

उत्तर : झाँसी के राजा गंगाधर राव निःसंतान थे। कवयित्री ने कहा है कि राजा के निःसंतान मर जाने पर अंग्रेज सरकार ने झाँसी को अपने अधिकार में लेने की बात कही जिससे झाँसी पर एकाएक विपत्ति आ गई एवं राजमहल में काली घटा–सी छा गई।

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न 4. अंग्रेजों के शासन काल में भारतीय रानियों की क्या दशा थी ?

उत्तर : अंग्रेजों ने अधिकांश हिन्दू और मुसलमान राजाओं और नवाबों के राज्यों पर अधिकार करने के साथ ही वहाँ की रानियों व बेगमों के वस्त्र और मूल्यवान आभूषण लूट लिए थे और उनको कलकत्ता के बाजारों में नीलाम किया जा रहा था। इससे रानियाँ अपमानित होकर हमेशा रोती रहती थी।

प्रश्न 5. कवयित्री चौहान ने रानी लक्ष्मी बाई को 'मर्दानी' क्यों कहा है ?

उत्तर : 'मर्द' शब्द से ही मर्दानी बना है और मर्द का अर्थ है नर अथवा वीर अथवा दिलेर। लक्ष्मी बाई स्त्री होते हुए भी साहसी और वीर थी। वह शौर्य की साक्षात् प्रतिमूर्ति थी। उसने युद्ध में दुश्मन सैनिकों ही नहीं बड़े–बड़े अंग्रेज अधिकारियों के भी दांत खट्टे कर दिये। उनकी इसी वीरता, शौर्य और पराक्रम को प्रकट करने के लिए कवयित्री ने उन्हें 'मर्दानी' कहा है।

प्रश्न 6. 'झाँसी की रानी' शीर्षक कविता में अंग्रेजों की नीतियों और अत्याचारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर : अंग्रेज भारत में व्यापार के उद्देश्य से आये थे। धीरे–धीरे उन्होंनें भारतीय राजाओं के आपसी मामलो में दखल देकर अपना राज्य स्थापित कर लिया और भारत के देशी राज्यों पर अपना अधिकार कर लिया। लार्ड डलहौजी ने एक नियम बनाया कि जिन राजाओं की कोई संतान नहीं होगी उनकी मृत्यु पर उसका राज्य अंग्रेजी राज्य में मिला लिया जायेगा। झाँसी के साथ भी उन्होंने ऐसा ही किया था । अंग्रेजों ने अधिकांश हिन्दु और मुसलमान राजाओं और नवाबों के राज्यों पर अधिकार करने के साथ ही वहां की रानियों व बेगमों के वस्त्र और मूल्यवान आभूषण लूट लिए थे और उनको कलकत्ता के बाजारों में बेचा जा रहा था। इससे रानियां अपमानित होकर हमेशा रोती रहती थी। वे भारतीय राजाओं से अत्यधिक कर वसूलते थे।

प्रश्न 7. 'तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी' पंक्ति का आशय स्पष्ट करो–

उत्तर : महारानी लक्ष्मी बाई वीरता और साहस की प्रतिमूर्ति थी। अपने साहस और पराक्रम के बल पर अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये। वॉकर जैसे कुशल अंग्रेज सेनापति को रण–भूमि से भागने पर मजबूर कर दिया। आजादी की लड़ाई के दौरान रानी ने साहस का जो परिचय दिया वह लाजवाब था। युवावस्था में ही रानी ने जो वीरता दिखायी वह ऐतिहासिक और अविस्मरणीय है। ऐसी साहसिक नारी के कार्य ही उसके स्मारक हैं । रण–भूमि में उनकी वीरता का कोई सानी नहीं है। उसके कार्य सदा अमर रहेंगे। समग्र दृष्टि से ही कवयित्री ने यह कहा है कि तेरा स्मारक तू ही होगी और इतिहास के पन्नों पर तुम्हारी कहानी अमिट होगी।

प्रश्न 8. 'मिला तेज से तेज, तेज की सच्ची अधिकारी थी' इस माध्यम से कवयित्री क्या कहना चाहती है ?

उत्तर : रानी लक्ष्मी बाई रण–क्षेत्र में दुश्मनों से लोहा लेते समय वीरगति को प्राप्त हुई। उसके बलिदानी शरीर को जब चिता पर लिटाया गया तब उसके चेहरे पर तेज था और वही तेज अब अग्नि रूपी तेज मे मिलने जा रहा था। इस प्रकार उसका तेजस्वी रूप तेज–अंश में मिलने वाला था। कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान के अनुसार रानी लक्ष्मी बाई जिस वीरता के साथ शत्रुदल से लड़कर वीरगति को प्राप्त हुई वस्तुतः वह तेजस्विनी कहलाने की अधिकारिणी थी।

प्रश्न 9. प्रथम स्वतंत्रता महायज्ञ में कौन–कौन वीरवर शहीद हो गये थे ?

उत्तर : प्रथम स्वतंत्रता महायज्ञ में रानी लक्ष्मी बाई, नाना धुंधु पंत, तात्या टोपे, अजीमुल्ला खां, अहमद शाह मौलवी, ठाकुर कुँवर सिंह आदि वीरवर शहीद हो गये थे।

शेखावाटी मिशन–100

नागार्जुन (जन्म : 1911 ई. – निधन : 1998 ई.)

'कल और आज' व 'उषा की लाली'

निम्नांकित प्रश्नों में से दिये गये सही विकल्प का चयन कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

प्रश्न 1. निम्न में से कौनसे कवि हिन्दी के अतिरिक्त मैथिली भाषा में भी कविता लेखन करते थे ?
(अ) तुलसीदास (ब) जयशंकर प्रसाद (स) सूरदास (द) नागार्जुन

प्रश्न 2. नागार्जुन का मूल नाम क्या था ?
(अ) विद्यानिवास (ब) वैद्यनाथ मिश्र (स) शांतिनाथ (द) तुलसीदास

प्रश्न 3. मैथिली भाषा में 'यात्री' उपनाम से किसने रचनाएँ की हैं ?
(अ) नागार्जुन (ब) जयशंकर प्रसाद (स) सूरदास (द) महादेवी वर्मा

प्रश्न 4. ग्रीष्म की धूल में कौन नहाते थे ?
(अ) झींगुर (ब) कबूतर (स) गोरैया (द) मेंढ़क

प्रश्न 5. 'उषा की लाली' कविता में किस समय का वर्णन हुआ है ?
(अ) सांय काल (ब) प्रातःकाल (स) दोपहर (द) रात्रि

प्रश्न 6. कवि अपलक देखता रह गया–
(अ) उषा की लालिमा को (ब) शिशु–रवि को
(स) प्रातः काल की परिवर्तित छवि को (द) रात्रि को

प्रश्न 7. वर्षा ऋतु रूपी रानी की पायल क्या है–
(अ) झींगुरों की आवाज (ब) नदियों का कल–निनाद (स)बूँदे बरसने की आवाज (द) पक्षियों का चहकना

प्रश्न 8. 'छमका रही है पावस रानी बूँदा, बूँदियों की अपनी पायल' पंक्ति मे निहित अलंकार का नाम है ?
(अ) अनुप्रास (ब) मानवीकरण (स) उत्प्रेक्षा (द) उपमा

उत्तरमाला

1. (द) नागार्जुन 2. (ब) वैद्यनाथ मिश्र 3.(अ) नागार्जुन 4. (स) गोरैया 5. (ब) प्रातःकाल 6. (स) प्रातः काल की परिवर्तित छवि को 7. (स)बूंदे बरसने की आवाज 8. (ब) मानवीकरण

प्रश्न 9. निम्नांकित प्रश्नों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।
1. अभी कल तक उदास और .... था आसमान।
2. ऊपर–ही–ऊपर तन गये हैं तुम्हारे .... ।
3. और आज विदा हुआ चुपचाप .... ।

उत्तरमाला

1. बदरंग 2. तंबू 3. ग्रीष्म

अतिलघूत्तरात्मक, लघूत्तरात्मक व निबंधात्मक प्रश्न :–

प्रश्न 1. आसमान उदास और बदरंग क्यों था ?
उत्तर : अत्यधिक ग्रीष्म, लू और आँधियां चलने के कारण आसमान बदरंग था।

प्रश्न 2. 'और आज ऊपर–ही–ऊपर तन गये हैं तुम्हारे तंबू' पंक्ति का आशय स्पष्ट करो –
उत्तर : इस पंक्ति का आशय यह है कि वर्षा ऋतु के आगमन के साथ ही आसमान में बादल छा गये।

प्रश्न 3. वर्षा होने से दूब में क्या परिवर्तन आया ?
उत्तर : वर्षा होने से दूब की झुलसी शिराओं में जान वापस आ गई।

प्रश्न 4. वर्षा ऋतु के आगमन के साथ ही प्रकृति में क्या–क्या परिवर्तन हुए ?
उत्तर : वर्षा ऋतु के आगमन के साथ ही झींगुर बोलने लगे, मोर नाचने लगे, आसमान में बादल छा गये, दूब की झुलसी शिराओं में जान वापस आ गई और सम्पूर्ण प्रकृति में उल्लास का वातावरण हो गया।

प्रश्न 5. 'कल और आज' कविता के आधार पर ग्रीष्म ऋतु का वातावरण कैसा था ?
उत्तर : ग्रीष्म ऋतु में किसान हताश थे, गोरैया सूखी धूल में नहा रही थी, अन्न पैदा करने वाले खेतों की मिट्टी पथरीली हो रही थी, मेंढ़क धरती की कोंख में दुबके हुए थे, अत्यधिक ग्रीष्म, लू और आँधियां चलने के कारण आसमान बदरंग था एवं सम्पूर्ण प्रकृति में एक प्रकार से निराशा झलक रही थी।

प्रश्न 6. 'उषा की लाली' कविता के आधार पर कवि 'अपलक' क्या देखता रह गया ?
उत्तर : 'उषा की लाली' कविता में कवि उषा कालीन प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन किया है। कवि के अनुसार सूर्योदय से पहले हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों का सुनहरा रंग उषा की लाली से और भी निखर गया। इसके बाद शिशु रवि आकाश में थोड़ा– सा उठा। इसके साथ ही सारे प्राकृतिक दृश्य की शोभा बदल गई। प्रकृति के इस पल–पल परिवर्तित हो रहे दृश्य पर मुग्ध होकर कवि उसे अपलक देखता रह गया।

प्रश्न 7. निम्नांकित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–
1. और आज जोरों से कूक पड़े.......................................समेटकर अपनें लाव–लश्कर।
2. आगे बढ़ा शिशु–रवि..हिमगिरि के कनक शिखर।

शेखावाटी मिशन–100

निम्नांकित प्रश्नों में से दिये गये सही विकल्प का चयन कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

प्रश्न 1. वर्तमान हिन्दी गद्य का प्रवर्तक किसे माना जाता है ?
(अ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ब) जयशंकर प्रसाद (स) महावीर प्रसाद द्विवेदी (द) महादेवी वर्मा

प्रश्न 2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को 'भारतेन्दु' की उपाधि किसके द्वारा प्रदान की गयी ?
(अ) सरकार द्वारा् (ब) जनता द्वारा (स) कवियों द्वारा (द) अध्यापकों द्वारा

प्रश्न 3. 'पर्यंक' शब्द का अर्थ है–
(अ) पलंग (ब) कुर्सी (स) मंदिर (द) पाठशाला

प्रश्न 4. इच्छा पूर्ति करने वाली देवताओं की गाय है –
(अ) नंदी (ब) कामधेनु (स) गौमाता (द) तुलसी

प्रश्न 5. लुप्तलोचन ज्योतिषाभरण द्वारा लिखी पुस्तक का नाम है ?
(अ) चन्द्रावली (ब) नीलदेवी (स) तामिस्र मकरालय (द) नीति दर्पण

प्रश्न 6. 'तप्त तवे की बूँदे' का तात्पर्य है–
(अ) चंचल (ब) जीवन (स) गरम (द) क्षणभंगुर

प्रश्न 7. 'क्रिटिक' शब्द का अर्थ है–
(अ) लेखक (ब) आलोचक (स) मानव (द) दानव

प्रश्न 8. देवराज इन्द्र ने अपनी पाठशाला में नियुक्त किया–
(अ)नारद मुनि को (ब) वृहस्पति को (स) शीलदावानल को (द) प्राणान्तक प्रसाद को

प्रश्न 9. 'एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न' रचना हिन्दी की कौनसी विधा है ?
(अ) नाटक (ब) एकांकी (स) निबंध (द) कहानी

प्रश्न 10. भारतेन्दु जी ने क्या बनाने का निश्चय किया–
(अ) भवन (ब) धर्मशाला (स) पाठशाला (द) देवालय

उत्तरमाला

1 (अ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र 2(ब) जनता द्वारा 3 (अ) पलंग 4(ब) कामधेनु 5 (स) तामिस्र मकरालय 6 (द) क्षणभंगुर
7 (ब) आलोचक 8 (ब) बृहस्पति को 9 (स) निबंध 10 (स) पाठशाला

अतिलघूत्तरात्मक व लघूत्तरात्मक व निबंधात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. लेखक के मन में प्रथम विचार क्या आया ?
उत्तर : लेखक के मन में प्रथम विचार देवालय बनाने का आया।

प्रश्न 2. 'एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न' निबंध किस शैली का है ?
उत्तर : 'एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न' निबंध हास्य–व्यंग्यात्मक शैली का है ।

प्रश्न 3. पंडित शील दावानल के प्रमुख शिष्यों के नाम लिखो ?
उत्तर : पंडित शील दावानल के प्रमुख शिष्य हैं– वेणु, बाणासुर, रावण, दुर्योधन, शिशुपाल, कंस इत्यादि।

प्रश्न 4. उद्‌दण्ड पंडित कहाँ से बुलवाये गये ?
उत्तर : हिमालय की कन्दराओं से उद्‌दण्ड पंडित बुलवाये गये।

प्रश्न 5. भारतेन्दु हरिश्चन्द की सबसे बड़ी विशेषता क्या मानी जाती है ?
उत्तर : वर्तमान हिन्दी गद्य के प्रवर्तक तथा प्राचीन एवं नवीन सामंजस्य ही भारतेन्दु हरिश्चन्द की सबसे बड़ी विशेषता मानी जाती है

प्रश्न 6. अद्‌भुत अपूर्व पाठशाला के प्रमुख शिक्षकों के नाम लिखो ?
उत्तर :
1. पंडित मुग्धमणि शास्त्री – तर्क वाचस्पति
2. पाखंड प्रिय धर्माधिकारी – धर्मशास्त्र
3. प्राणान्तक प्रसाद – वैयाकरण/ वैद्यकशास्त्र
4. लुप्तलोचन ज्योतिषाभरण – ज्योतिष शास्त्र
5. शील दावानल – नीति दर्पण / नीति शास्त्र

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न 7. निम्नांकित प्रश्नों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

1. स्वप्न ही में प्रभात होते ही ....बनाने का विचार दृढ़ किया।
2. इस चपल जीवन का क्षण भर का .... नहीं।
3. यही अंग्रेजी शिक्षा रही तो ....की ओर मुख फेर कर भी काई नहीं देखेगा।

उत्तरमाला

1. पाठशाला 2. भरोसा 3. मंदिर

प्रश्न 8. पुस्तक लेखन के विचार पर लेखक क्यों सहम गया ?

उत्तर : लेखक ने सोचा कि पुस्तक बनते ही कीट– क्रिटिक (आलोचक) काटकर आधी से अधिक निगल जाएंगे और यश के स्थान पर शुद्ध अपयश होगा।

प्रश्न 9. पंडित प्राणान्तक प्रसाद की क्या विशेषता बताई ?

उत्तर : पंडित प्राणान्तक प्रसाद महावैद्य के नाम से इस संसार में प्रसिद्ध हैं तथा चिकित्सा में ऐसे कुशल हैं कि चिता पर चढ़ते– चढ़ते रोगी इनके उपकार को नहीं भूलता। कितना ही रोग से पीड़ित क्यों न हो, क्षण भर में स्वर्ग के सुख को प्राप्त होता है।

प्रश्न 10. 'इस चपल जीवन का क्षण भर का भरोसा नहीं' भरतेन्दु जी के इस कथन का आशय बताइए ?

उत्तर : भरतेन्दु जी के इस कथन का आशय है कि इस नश्वर संसार में जीवन का समापन कब हो जाए, इसलिए यशस्वी बनने का प्रयास करना चाहिए और सप्रयत्न सत्कर्म करने चाहिए।

प्रश्न 11. 'एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न' निबंध का वर्ण्य विषय क्या है ?

उत्तर : भारतेन्दु ने इस निबंध के माध्यम से अपने समय के समाज की विकृत दशा का वर्णन किया है। समाज में व्याप्त अंध–विश्वास, स्वार्थपरता, धर्मांधता और अंग्रेजी शासन की अत्याचार पूर्ण नीति, नश्वर संसार में यशस्वी होने की लालसा का वर्णन किया है।

प्रश्न 12. लेखक ने अपना नाम संसार में अमर करने के लिए क्या सोचा ?

उत्तर : लेखक ने अपना नाम संसार में अमर करने के लिए सर्वप्रथम देवालय बनाने फिर पुस्तक लिखने और अंत में पाठशाला बनाने के बारे में सोचा ।

प्रश्न 13. 'एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न' निबंध की भाषा शैली पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर : 'एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न' निबंध में भारतेन्दु जी ने संस्कृत के तत्सम व तद्भव शब्दों का बहुतायत से प्रयोग किया है । लोकोक्तियों और मुहावरों के प्रयोग से उनकी भाषा में और भी लालित्य आ गया है। स्थान– स्थान पर रोचकता बढ़ाने के लिए उन्होंने हास्य–व्यंग्य का सहारा भी लिया है।

प्रस्तुत निबंध में भारतेन्दु जी की विनोद प्रिय प्रवृति का प्रतिनिधि उदाहरण है। इसमें उन्होंने तत्कालीन समाज एवं शिक्षा–प्रणाली का व्यंग्यपूर्ण चित्र उभारने में वर्णनात्मक, आवेगात्मक एवं विनोद–प्रिय प्रवृति से युक्त शैली को अपनाया है।

प्रश्न 14. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का संक्षिप्त जीवन परिचय दीजिए।

उत्तर : हिन्दी गद्य के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म सन् 1850 ई. को काशी के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री गोपाल चन्द भी हिन्दी के अच्छे कवि थे। बाल्यकाल में ही उनके पिता का आकस्मिक देहान्त हो गया और वे उस विपुल सम्पत्ति के एकमात्र उत्तराधिकारी रह गये। उन्होंनें अपनी संपत्ति लोक सेवा और साहित्य सेवा के कार्यों में लगा दी । वे जन्म से ही कुशाग्र बुद्धि और प्रतिभाशाली थे। कविता करने का शौक भी उन्हें बचपन से ही था। उन्होंने गद्य की भाषा को परिमार्जित कर उसे मधुर और स्वच्छ बनाया। वे सुधारवादी थे। प्राचीन और नवीन का सामंजस्य भारतेन्दु जी की सबसे बड़ी विशेषता रही है । इन्होंने कविवचन सुधा, हरिश्चन्द्र मैगजीन का सम्पादन किया । भारतेन्दु जी ने कुल 175 ग्रंथ लिखे हैं जिनमें बहुत से केवल अनुवाद ही है। प्रमुख रचनाओं में वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, कर्पूर मंजरी, सत्य हरिश्चन्द्र, चन्द्रावली नाटिका, भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी, नील देवी और मुद्राराक्षस आदि बहुत प्रसिद्ध हैं।

प्रश्न 15. निम्न गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करो।

1. इस चलायमान शरीर का कुछ ठिकाना....................................इस चपल जीवन का क्षण–भर का भरोसा नहीं।
2. समय–सागर में एक दिन सब संसार अवश्य ....एक तप्त तवे की बूँद हुए बैठे हैं।
3. संसार में पाठशाला अनेक हुई होंगी परन्तु हरिकृपा से जो सम्पूर्ण कामधेनु यह पाठशाला .... इनके थोड़े ही परिश्रम से पंडित मूर्ख और अबोध पंडित हो जायेंगे।

ईदगाह : मुंशी प्रेमचन्द (जन्म : 1880 ई. – निधन : 1936 ई.)

निम्नांकित प्रश्नों में से दिये गये सही विकल्प का चयन कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

प्रश्न 1. मुंशी प्रेमचन्द का मूल नाम है–
(अ) नवाबराय (ब) धनपत राय (स) प्रेमचन्द (द) कमलनाथ

प्रश्न 2. प्रेमचन्द के पहले कहानी संग्रह का नाम है–
(अ) गोदान (ब) मानसरोवर (स) सोजे–वतन (द) कर्मभूमि

प्रश्न 3. 'सोजे–वतन' कब प्रकाशित हुआ –
(अ) 1982 (ब) 1986 (स) 1908 (द) 2012

प्रश्न 4. लेखक के अनुसार विपत्ति के दल–बल का विध्वंस कर देती है–
(अ) हामिद की आनन्द भरी चितवन (ब) दादी अमीना
(स) सिलाई वाली (द) हामिद का क्रोध

प्रश्न 5. हामिद ने मेले से खरीदा–
(अ) चिमटा (ब) सिपाही (स) भिश्ती (द) वकील

प्रश्न 6. दुकानदार ने हामिद को पहली बार चिमटे की कीमत बताई–
(अ) चार पैसे (ब) तीन पैसे (स) पांच पैसे (द) छह पैसे

प्रश्न 7. 'तुम्हारे चिमटे का मुँह रोज आग में जलेगा' कथन किसका है–
(अ) हामिद (ब) मोहसिन (स) शम्मी (द) महमूद

प्रश्न 8. निम्न में से किस पत्रिका का संपादन प्रेमचन्द ने नहीं किया–
(अ) जागरण (ब) माधुरी (स) हंस (द) सरस्वती

प्रश्न 9. प्रेमचन्द को उपन्यास सम्राट कहा था–
(अ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने (ब) जयशंकर प्रसाद ने (स) शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय ने (द) सूरदास ने

प्रश्न 10. हामिद के पिता का नाम था–
(अ) आबिद (ब) महमूद (स) मोहसिन (द) जाबिद

उत्तरमाला

1. (ब) धनपत राय 2. (स) सोजे–वतन 3. (स) 1908 4. (अ) हामिद के आनन्द भरी चितवन 5 (अ) चिमटा 6. (द) छह पैसे 7. (ब) मोहसिन 8. (द) सरस्वती 9. (स) शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय ने 10 (अ) आबिद

प्रश्न 11. निम्नांकित प्रश्नों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।
1. उन्हें क्या खबर कि चौधरी आज आँखे बदल ले तो यह सारी ईद ....हो जाए।
2. नीचे पक्का फर्श है जिस पर ....बिछा हुआ है।
3. कितनी सुन्दर व्यवस्था ! लाखों सिर एक साथ................में झुक जाते हैं।
4. बड़ों की दुआएं सीधे .... के दरबार में पहुँचती हैं।
5. वह आगे बढ गया कि दुकानदार की .... न सुनें।

उत्तरमाला

1. मुहर्रम 2. जाजिम 3. सिजदे में 4. अल्लाह 5. घुड़कियाँ

अतिलघूत्तरात्मक व लघूत्तरात्मक व निबंधात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. 'कलम के सिपाही' नाम से मशहूर लेखक का नाम लिखिए –
उत्तर : मुंशी प्रेमचन्द

प्रश्न 2. मुंशी प्रेमचन्द की 'ईदगाह' कहानी किस पर आधारित है–
उत्तर : बाल मनोविज्ञान पर

प्रश्न 3. हामिद की बूढ़ी दादी का क्या नाम है–
उत्तर : हामिद की बूढ़ी दादी का नाम अमीना है।

प्रश्न 4. 'वजू' शब्द का अर्थ लिखो ?
उत्तर : नमाज से पहले यथाविधि हाथ– पांव और मुँह धोना।

प्रश्न 5. सम्मी ने कौनसा खिलौना खरीदा ?
उत्तर : खँजरी

प्रश्न 6 'ईद' किस महीने में आती है ?
उत्तर : रमजान के महीने में

प्रश्न 7. ईदगाह कहानी का नायक/प्रमुख पात्र कौन है ?
उत्तर : ईदगाह कहानी का नायक/प्रमुख पात्र हामिद है।

प्रश्न 8. हामिद के माता–पिता की मृत्यु किस कारण हुई ?
उत्तर : माता की पीलिया से और पिता की हैजे नामक बीमारी से मृत्यु हुई।

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न 9. प्रेमचन्द की कहानियों के संग्रह का नाम क्या है ?
उत्तर : मानसरोवर (आठ भाग)
प्रश्न 10. ईद के मुहर्रम हो जाने का क्या अर्थ है ?
उत्तर : खुशी का त्योहार मातम में बदलना।
प्रश्न 11. हामिद के चरित्र की कोई तीन विशेषताएँ बताइए ?
उत्तर : ईदगाह कहानी में बालक हामिद को मुख्य पात्र की भूमिका में चित्रित किया है। इसके चरित्र में अनेक विशेषताएँ बताई गई हैं जिनमें प्रमुख हैं– विवेकशील, सहनशील, वाक्पटु, भावुक, स्नेही व आशावादी ।
प्रश्न 12. हामिद ने चिमटे की उपयोगिता सिद्ध करते हुए क्या–क्या तर्क दिये ?
उत्तर : हामिद ने मेले से चिमटा खरीदा । उसने इसकी उपयोगिता सिद्ध करते हुए निम्न तर्क दिये – कंधे पर रख लो तो चिमटा बंदूक हो जायेगा, हाथ मे लेने पर फकीर का चिमटा हो जायेगा मंजीरे के रूप में काम आयेगा, आग में नहीं जलता, रोटी सेंकने के काम आयेगा और आँधी – तूफान में इसका कुछ नहीं बिगड़ेगा । उसका चिमटा बहादुर है।
प्रश्न 13. 'ईदगाह' कहानी द्वारा प्रेमचन्द ने क्या संदेश दिया है ?
उत्तर : ईदगाह कहानी में प्रेमचन्द ने धर्म को भाईचारे और मेल कराने वाला बताया है। उन्होंने त्योहार को प्रेम तथा भाईचारे से मनाने का संदेश दिया है। इसमें हामिद के चरित्र द्वारा बड़ों के प्रति प्रेम और आदर प्रकट करने, अपने उत्तरदायित्वों को निभाने तथा श्रमपूर्ण जीवन व्यतीत करने के साथ ग्रामीण जीवन का चित्रण भी प्रस्तुत किया है।
प्रश्न 14 ''उसके पास न्याय का बल है और नीति की शक्ति'' यह किसके बारे में कहा गया है तथा क्यों ?
उत्तर : न्याय का बल और नीति की शक्ति हामिद के पास बताई गई है। कहानीकार ने हामिद के लिए ही इस कथन का प्रयोग किया है । हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना के उँगलियों को जलने से बचाने के लिए चिमटा खरीदा है मेले में उसको दादी के कष्ट का ध्यान रहा ।
चिमटा खरीदने का हामिद का निर्णय उसके नीति और न्याय के पक्ष पर चलने के कारण ही हो सका है । चिमटे के पक्ष में उसके तर्क, नीति और न्याय से पूर्ण होने के कारण ही प्रभावशाली है।
प्रश्न 15 ''इन्हें गृहस्थी की चिन्ताओं से क्या प्रयोजन'' यह कहकर कहानीकार क्या बताना चाहता है ?
उत्तर : बच्चे गृहस्थी की चिन्ताओं से दूर होते जा रहे हैं किन्तु जिस घर में सेवैयों के लिए दूध और शक्कर न हो उन्हें ईद मनाने के लिए रूपये–पैसे की व्यवस्था करने की चिन्ता है परन्तु बच्चों को इससे कोई मतलब नहीं । लम्बी प्रतीक्षा के बाद ईद आई है। वे प्रसन्न हैं और जल्द ही ईदगाह जाना चाहते है।
प्रश्न 16. ''हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था बुढ़िया बालिका अमीना बन गई '' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर : हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना के उँगलियों को जलने से बचाने के लिए चिमटा खरीदा है जिससे उसकी दादी द्वारा रोटी बनाते वक्त उँगलियाँ न जलें। यह जानकर अमीना का हृदय स्नेह से गद्गद् हो उठा और स्नेह भाव के कारण उसकी आँखो से आँसू बहने लगे । वह बालिका बनकर रो रही थी और हामिद बड़े–बूढ़ो की तरह उसे चुप करा रहा था ।
छोटे से हामिद ने अपनी उम्र से अधिक जिम्मेदारी का निर्वाह किया था । खिलौनों और मिठाइयों के लालच में नहीं पड़ा था और दादी के लिए चिमटा खरीदा था। हामिद तथा अमीना दोनों का आचरण उनकी आयु के प्रतिकूल था।
प्रश्न 17. प्रेमचन्द का जीवन एवं साहित्यिक परिचय दीजिए।
उत्तर : **प्रेमचन्द का जीवन परिचय –** हिन्दी जगत में 'कलम के सिपाही' के नाम से मशहूर मुंशी प्रेमचन्द का जन्म 1880 ई. में वाराणसी जिले में लमही ग्राम में हुआ था। उनकी माता का नाम आनन्दी देवी और पिता का नाम मुंशी अजायबराय था जो लमही में डाक मुंशी थे। उनका मूल नाम धनपतराय तथा उर्दू में नवाबराय के नाम से लेखन कार्य करते थे । सरकारी नौकरी से त्याग–पत्र देने के पश्चात उन्होंने अपना सारा जीवन लेखन कार्य के प्रति समर्पित कर दिया। उपन्यास के क्षेत्र में उनके योगदान को देखकर विख्यात उपन्यासकार शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय ने उन्हें 'उपन्यास सम्राट' कहकर संबोधित किया ।
प्रेमचन्द का साहित्यिक परिचय – प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में किसानों, दलितों नारियों की वेदना और वर्ण–व्यवस्था जैसी कुरीतियों का मार्मिक चित्रण किया है। उन्होंने समाज सुधार और राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत उपन्यासों और कहानियों की रचना की। कथा संगठन, चरित्र–चित्रण, कथोपकथन आदि की दृष्टि से उनकी रचनाएं बेजोड़ है। उनकी भाषा सजीव, मुहावरेदार और बोलचाल के निकट है। हिन्दी षषा को लोकप्रिय बनाने में उनका विशेष योगदान माना जाता है। प्रेमचन्द का पहला कहानी संग्रह 'सोज–वतन' है जो 1908 में प्रकाशित हुआ। देश षक्ति से ओत–प्रोत होने के कारण अंग्रेजी सरकार ने इस पर रोक लगा दी। बाद में इनकी कहानियाँ मानसरोवर के नाम से आठ खंडों में प्रकाशित हुई। 'गोदान' इनका प्रसिद्ध उपन्यास है।
प्रमुख कृतियाँ–
कहानी संग्रह – मानसरोवर (आठ भागों में)
उपन्यास – निर्मला, गबन, गोदान, सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि, कायाकल्प
नाटक – कर्बला, संग्राम
पत्र–पत्रिकाएँ– हंस, जागरण, माधुरी, मर्यादा।
प्रश्न 18. निम्न गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करो।
1. कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है...ईद की बधाई दे रहा है।
2. कितना अपूर्व दृश्य था जिसकी सामूहिक कियाएं..एक लड़ी में पिरोए हुए है।
3. बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया...हामिद इसका रहस्य क्या समझता।

शेखावाटी मिशन–100

स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन : महावीर प्रसाद द्विवेदी
(जन्म 1864 ई. निधन 1938 ई)

निम्नांकित प्रश्नों में से दिये गये सही विकल्प का चयन कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

प्रश्न 1. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किस पत्रिका का संपादन किया –
(अ) माधुरी (ब) हंस (स) जागरण (द) सरस्वती

प्रश्न 2. 'रसज्ञ रंजन' के रचयिता का नाम है–
(अ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ब) सूरदास (स) महावीर प्रसाद द्विवेदी (द) मीरां

प्रश्न 3. 'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' निबंध द्विवेदी जी के किस निबंध संग्रह से लिया गया है–
(अ) महिला मोद (ब) रसज्ञ रंजन (स) संपत्तिशास्त्र (द) अद्भुत आलाप

प्रश्न 4. महावीर प्रसाद द्विवेदी की मौलिक रचना नहीं है–
(अ) काव्य मंजूषा (ब) सुमन (स) अबला विलाप (द) वेणी संहार

प्रश्न 5. शंकराचार्य को शास्त्रार्थ में निरूत्तर करने वाली महिला का नाम है–
(अ) गार्गी (ब) शारदा (स) मंडन मिश्र की पत्नी (द) विज्जा

प्रश्न 6. हिन्दी साहित्य में महावीर प्रसाद द्विवेदी की पहचान किस रूप में प्रमुख मानी जाती है–
(अ) लेखक (ब) नाटककार (स) समालोचक (द) कहानीकार

प्रश्न 7. शकुंतला ने कटु वाक्य कहे थे–
(अ) राम को (ब) दुष्यंत को (स) अर्जुन को (द) अनुसूया को

प्रश्न 8. गँवारों की भाषा कहा गया है–
(अ) हिन्दी को (ब) संस्कृत को (स) प्राकृत को (द) शौरसेनी को

उत्तरमाला

1. (द) सरस्वती 2. (स) महावीर प्रसाद द्विवेदी 3. (अ) महिला मोद 4. (द) वेणी संहार 5.(स) मंडन मिश्र की पत्नी
6. (स) समालोचक 7. (ब) दुष्यंत को 8. (स) प्राकृत को

प्रश्न 9. निम्नांकित प्रश्नों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।
1. नाटकों मे स्त्रियों का ....बोलना उनके अपढ़ होने का प्रमाण नहीं है।
2. शकुंतला ने दुष्यंत को .... वाक्य कहकर कौनसी अस्वाभाविकता दिखाई ?
3. पढ़ने लिखने में स्वयं कोई बात ऐसी नहीं जिससे .... हो सके।
4. उस जमानें मे प्राकृत ही .... की भाषा थी ।

उत्तरमाला

1. प्राकृत 2. कटु 3. अनर्थ 4. सर्वसाधारण

अतिलघूत्तरात्मक व लघूत्तरात्मक व निबंधात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. 'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन' निबंध प्रथम बार सरस्वती पत्रिका में कब और किस नाम से प्रकाशित हुआ ?
उत्तर : सितम्बर 1914 में 'पढ़े लिखों का पांडित्य' शीर्षक से

प्रश्न 2. निबंध में रूक्मिणी हरण की कथा कहाँ मिलती है ?
उत्तर : रूक्मिणी हरण की कथा वर्णन श्रीमद्भागवत् के दशम स्कंध के उत्तरार्द्ध में 53 वें अध्याय में मिलता है।

प्रश्न 3. 'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों' का खण्डन पाठ में आये प्राचीन कालीन विदुषी महिलाओं के नाम लिखो ?
उत्तर : शीला, विज्जा, विश्ववरा, अहल्या, शकुन्तला, गार्गी, रूक्मिणी, पार्वती, अनुसूया, मैत्रेयी आदि ।

प्रश्न 4. सीता ने लक्ष्मण के माध्यम से राम को क्या कहलवाया ?
उत्तर : सीता ने अपनी स्वतंत्र सोच का परिचय देते हुए लक्ष्मण से कहा कि जरा उस राजा से कह देना कि मैंने तो तुम्हारी आँखों के सामने ही आग में कूदकर अपनी विशुद्धता साबित कर दी थी, जिस पर भी लोगों के मुख से निकले मिथ्यावाद सुनकर तुमने मुझे त्याग दिया ।

प्रश्न 5. 'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन' निबंध में लेखक ने किस विषय पर विचार प्रकट किये है ?
उत्तर : इस निबंध मे स्त्री शिक्षा का समर्थन करते हुए स्त्री शिक्षा विरोधी कुतर्कों का खण्डन करते स्त्री शिक्षा के विरोध को अनुचित बताया है।

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न 6. 'यह सब पापी पढ़ने का अपराध है' वाक्य का आशय स्पष्ट करो।

उत्तर : यह एक व्यंग्यपूर्ण कथन है। इसका आशय यह है कि स्त्रियों की शिक्षा में कोई दोष नहीं है।

प्रश्न 7. 'स्त्रियों को निरक्षर रखने का उपदेश देना समाज का अपकार और अपराध करना है' इस कथन के पक्ष में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर : लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी ने प्रस्तुत निबंध में यह बताने का प्रयास किया है कि जो लोग यह कहते कि पुराने जमानें में यहां स्त्रियां न पढ़ती थी अथवा उन्हें पढ़ाने की मुमानियत थी वे या तो इतिहास से अभिज्ञता नहीं रखते या जानबूझकर लोगों को ध ोखा देते हैं। समाज की दृष्टि में ऐसे लोग दण्डनीय हैं अतः हमें स्त्रियों की शिक्षा का समर्थन करना चाहिए।

प्रश्न 8. द्विवेदी जी ने स्त्री शिक्षा के समर्थन में कौन–कौनसे तर्क दिए हैं ?

उत्तर : द्विवेदी जी ने स्त्री शिक्षा के समर्थन में अनेक तर्क दिए हैं। जैसे – प्राचीन काल में भी शिक्षा स्त्रियों के लिए थी। गार्गी मण्डन मिश्र की पत्नी, शीला, विज्जा आदि विदुषी स्त्रियां इसके प्रमाण हैं तथा संस्कृत नाटकों में स्त्रियों का प्राकृत बोलना उनके अनपढ़ हाने के प्रमाण नहीं है तथा प्राचीनकाल में स्त्रियों ने वेद मंत्रों की रचना की इसलिए अहंकारी लोग स्त्री शिक्षा का विरोध गलत दृष्टि से कर रहें हैं।

प्रश्न 9. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का साहित्यिक परिचय दीजिए।

उत्तर : महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म 1864 को उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के दौलतपुर ग्राम में कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में हुआ था। स्कूली शिक्षा पूर्ण कर लेने के पश्चात् रेलवे मे नौकरी की परन्तु स्वाभिमान के कारण इस्तीफा देकर सन् 1903 में 'सरस्वती' पत्रिका के संपादन से जुड़ गये तथा 1920 तक संपादन कार्य करते रहे।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी के महान् साहित्यकार, पत्रकार, समालोचक एवं युगप्रवर्तक थे। ये संस्कृत, बंगला, मराठी, उर्दू आदि अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। हिन्दी व्याकरण और वर्तनी के नियम स्थिर करके हिन्दी गद्य की भाषा का परिष्कार किया तथा अपने समकालीन कवियों और लेखकों का साहित्य रचना में मार्गदर्शन किया । इसी कारण आधुनिक हिन्दी के द्वितीय उत्थान (सुधारकाल) को महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम से द्विवेदी युग भी कहा जाता है।इनके प्रयासों से खड़ी बोली काव्य की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई।

प्रमुख रचनाएँ–

मौलिक रचनाएँ– काव्य मंजुषा, सुमन, अबला विलाप, कान्यकुब्ज, कविता कलाप (काव्य),
अद्भुत आलाप, संपत्तिशास्त्र, महिला मोद, रसज्ञरंजन, साहित्यसीकर (गद्य)

अनुदित रचनाएँ– विनयविनोद, स्नेहमाला, ऋतुतरंगिनी (पद्य)
भामिनीविलास, रघुवंश, वेणीसंहार, बेकन विचार, स्वाधीनता (गद्य)

प्रश्न 10. निम्न गदयांशों की सप्रसंग व्याख्या करो।

1. पुराणादि में विमानों और जहाजों द्वारा................................इस तर्कशास्त्रज्ञता और इस न्यायशीलता की बलिहारी।
2. शिक्षा बहुत व्यापक शब्द है..खुद पढने–लिखने को दोष न देना चाहिए।
3. मान लिजिए कि पुराने जमानें में भारत की एक भी स्त्री पढ़ी–लिखी........................अथवा उन्हें पढ़नें की आज्ञा न थी।

शेखावाटी मिशन–100

आखिरी चट्टान : मोहन राकेश
(जन्म 1925 ई. निधन 1972 ई)

निम्नांकित प्रश्नों में से दिये गये सही विकल्प का चयन कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

प्रश्न 1. 'सुनहले सूर्योदय और सूर्यास्त की भूमि' किसे कहा गया है ?
(अ) हिन्द महासागर (ब) अरब सागर (स) कन्याकुमारी (द) बंगाल की खाड़ी

प्रश्न 2. मोहन राकेश नें किस कहानी पत्रिका का संपादन किया था ?
(अ) सारिका (ब) जागरण (स) दिनमान (द) सरस्वती

प्रश्न 3. कनानोर के होटल में लेखक क्या भूल गये थे ?
(अ) डायरी (ब) पुस्तक (स) अपना चश्मा (द) लिखे हुए पन्ने

प्रश्न 4. अस्त होते हुए सूर्य के बिम्ब का स्पर्श होते ही समुद्र का जल हो गया –
(अ) काला (ब) हरा (स) लाल (द) बैंगनी

प्रश्न 5. 'आखिरी चट्टान' किस विधा की रचना है–
(अ) कहानी (ब) एकांकी (स) निबंध (द) यात्रा वृत्तांत/संस्मरण

प्रश्न 6. मिशनरी युवतियाँ किस समस्या पर विचार कर रही थी–
(अ) प्रकृति (ब) सूर्यास्त (स) मोक्ष (द) शिक्षा

प्रश्न 7. 'कड़लकाकों' शब्द का अर्थ है–
(अ) जंगली पशु (ब) समुद्री पक्षी (स) मछली (द) सीपी

प्रश्न 8. अरबी भाषा में 'अंक' को क्या कहते है–
(अ) हिन्दवी (ब) हिन्दुओं (स) हिन्दू (द) हिन्दसे

प्रश्न 9. मोहन राकेश द्वारा लिखा नाटक नहीं है–
(अ) आषाढ़ का एक दिन (ब) लहरों के राजहंस (स) आधे–अधूरे (द) संग्राम

प्रश्न 10. कन्याकुमारी के समुद्र तट पर स्थित चट्टान पर समाधि लगाने वाले संत थे–
(अ) स्वामी विवेकानन्द (ब) महावीर प्रसाद द्विवेदी (स) रामकृष्ण परमहंस (द) मोहन राकेश

उत्तरमाला

1. (स) कन्याकुमारी 2. (अ) सारिका 3. (द) लिखे हुए पन्ने 4. (स) लाल 5. (द) यात्रा वृत्तांत/संस्मरण 6 (स) मोक्ष
7. (ब) समुद्री पक्षी 8. (द) हिन्दसे 9. (द) संग्राम 10. (अ) स्वामी विवेकानन्द

प्रश्न 11. निम्नांकित प्रश्नों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।
1. पीछे दायीं तरफ दूर–दूर हटकर उगे .... के झुरमुट नजर आ रहे थे।
2. हिन्द महासागर की ऊँची–ऊँची लहरे मेरे आसपास की .... से टकरा रही थी।
3. घाट पर बहुत से लोग उगते सूर्य को .... के लिए एकत्र थे।
4. सुनहले सूर्योदय और सूर्यास्त की भूमि.............................. है।

उत्तरमाला

1. नारियलों 2. स्याह चट्टानों 3. अर्ध्य देने 4. कन्याकुमारी ।

अतिलघूत्तरात्मक व लघूत्तरात्मक व निबंधात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. कन्याकुमारी में किन–किन सागरों का संगम होता है ?
उत्तर : कन्याकुमारी में अरब सागर, हिन्द महासागर, बंगाल की खाड़ी इन तीनों सागरों का संगम होता है।

प्रश्न 2. आखिरी चट्टान' यात्रावृत में लेखक ने किसके भव्य सौन्दर्य का वर्णन किया है ?
उत्तर : कन्याकुमारी और उसके समीपवर्ती सागर तट के भव्य सौन्दर्य का।

प्रश्न 3. वह कौनसा स्थान है जहां सूर्योदय और सूर्यास्त का सुन्दर दृश्य दिखता है ?
उत्तर : सैण्डहिल से।

प्रश्न 4. मोहन राकेश अपने हस्तलिखित पन्ने कहाँ छोड़ आए थे ?
उत्तर : कनानोर में।

प्रश्न 5. आध्यात्मिक चिन्तन की दृष्टि से कन्याकुमारी का क्या महत्व है ?
उत्तर : कन्याकुमारी मे वह आध्यात्मिक चिन्तन स्थान है जहां स्वामी विवेकानन्द ने समाधि लगाई थी।

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न 6. कन्याकुमारी भारत के किस राज्य में स्थित है ?

उत्तर : कन्याकुमारी भारत के तमिलनाडु राज्य में स्थित है।

प्रश्न 7. लेखक को किन पेड़ों का झुरमुट दिखाई दे रहे थे ?

उत्तर : लेखक को नारियल के पेड़ों का झुरमुट दिखाई दे रहे थे।

प्रश्न 8. ग्रेजुएट नवयुवकों का व्यवसाय क्या था ?

उत्तर : नवयुवक ने बताया कि कन्याकुमारी की आठ हजार की आबादी मे से कम से कम चार–पांच सौ शिक्षित नवयुवक ऐसे हैं जो बेकार हैं, इनका मुख्य धंधा नौकरियों के लिए अर्जियां देना, बैठकर दार्शनिक सिद्धांतो पर बहस करना एवं फोटो एलबम बेचना ।

प्रश्न 9. ''मैं अपनी पूरी चेतना से महसूस कर रहा था, शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति'' प्रस्तुत कथन के आशय को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : लेखक कन्याकुमारी और उसके समीपवर्ती सागर तट का वर्णन करते हुए कहते हैं कि सागर के अन्दर से उभरी स्याह चट्टानों में से एक पर मैं खड़ा हुआ देर तक भारत के स्थल भाग की आखिरी चट्टान को देखता रहा। उस चट्टान से सागर की ऊँची–ऊँची लहरें टकरा रही थी वे बल खाती हुई लहरें पहले रास्ते की नुकीली चट्टानों से कटती हुई आती थी जिससे उनके ऊपर चूरा बूँदों की जालियां बन जाती है। इस दृश्य को देखकर लेखक ने कहा कि शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति।

प्रश्न 10. 'पहले जहां सोना वहां अब लहू बहता नजर आने लगा' में क्या भाव निहित है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : जब सर्य के गोले ने जलराशि की सतह को स्पर्श किया तो जल सुनहरा हो गया, ऐसा लग रहा था कि पानी में सोना घोल दिया हो परन्तु पानी का रंग बार–बार तथा जल्दी–जल्दी बदल रहा था। पहले उसका रंग सुनहरा था तो कुछ ही समय बाद उसका रंग रक्त के रंग जैसा लाल हो गया।

प्रश्न 11. 'आखिरी चट्टान' यात्रावृत्त की शैलीगत विशेषताएँ बताइए।

उत्तर : आखिरी चट्टान यात्रावृत्त की भाषा इतनी पारदर्शी है लेखक के अनुभव पाठक के अनुभव में रूपान्तरित होने लगते हैं। इसके अलावा भाषा सरल और सजीव, शैली वर्णनात्मक तथा चित्रात्मक के साथ सूर्योदय और सूर्यास्त का सजीव चित्रांकन किया गया है।

प्रश्न 12. मन में केवल हिन्दसों की चरखी चलती रही' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : एक कान्वेण्ट की बस होटल के अहाते में आकर रुकी उसमें बैठी लड़कियां समुद्र के सितारे को लक्ष्य कर अंग्रेजी में एक गीत गा रही थी। उस समय लेखक का मन एक ओर तो गीत सुनने में लगा हुआ था दूसरी ओर उसे सुबह की बस से जाना था अतः सोच रहा था कि पहली बस से दूसरी बस, तीसरी बस का समय क्या–क्या है। जब गीत के स्वर विलीन हो गए तब उसके मन में बसों के समय चक्र की ही चरखी चलती रही।

प्रश्न 13. 'मैं ज्यादा देर अपनी जगह स्थिर नहीं रह सका' लेखक ने ऐसा क्यों कहा था ?

उत्तर : लेखक ज्यादा देर स्थिर इसलिए नही रह सकता क्योंकि वह सूर्यास्त का दृश्य ऐसे स्थान से देखना चाहता है जहां से समुद्र का पूरा विस्तार दिखाई दे सके।

प्रश्न 14. सूर्यास्त के बाद लेखक के मन में क्या डर समाया ?

उत्तर : सूर्यास्त होने पर समुद्र तट पर अँधेरा फैलने लगा लेखक जिस टीले पर था वहां से अनेक रेतीले टीलों को पारकर वापस लौटना था। लेखक को भय हुआ कि इन टीलों को पार करने से पूर्व ही अँधेरा हो जाएगा और रेतीले टीलों में ही भटकता रह जाएगा, उसे रास्ता नहीं मिलेगा। इसलिए मन में डर समाया।

प्रश्न 15. निम्न गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करो।

1. मैं देख रहा था और अपनी पूरी चेतना से ....एक जीवित, व्यक्ति से दूर से आया यात्री, एक दर्शक।

2. पानी और आकाश में तरह–तरह के रंग झिलमिलाकर ....मुझे बेकारी के आँकड़े बता रहा था।

शेखावाटी मिशन–100

ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से : रामधारी सिंह दिनकर
(जन्म 1908 ई. निधन 1974 ई)

निम्नांकित प्रश्नों में से दिये गये सही विकल्प का चयन कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

प्रश्न 1. रामधारी सिंह का जन्म हुआ–

(अ) 1908 (ब) 1909 (स) 1919 (द) 1910

प्रश्न 2. राष्ट्रकवि के रूप में जाने जाते हैं–

(अ) मोहन राकेश (ब) महात्मा गांधी (स) रामधारी सिंह दिनकर (द) सूरदास

प्रश्न 3. 'उर्वशी' कृति को कौनसा पुस्कार मिला–

(अ) साहित्य अकादमी (ब) भारत रत्न (स) ज्ञानपीठ पुरस्कार (द) मीरां पुरस्कार

प्रश्न 4. कुरूक्षेत्र को विश्व के 100 सर्वश्रेष्ठ काव्यों में कौनसा स्थान मिला–

(अ) 61 वाँ (ब) 75 वाँ (स) 74 वाँ (द) 82 वाँ

प्रश्न 5. रामधारी सिंह दिनकर की रचना नहीं है–

(अ) रेणुका (ब) हुँकार (स) रसवंती (द) कामायनी

प्रश्न 6. 'तुम्हारी निन्दा वही करेगा, जिसकी तुमने भलाई की है।' यह किस महापुरुष का कथन है–

(अ) ईश्वरचन्द्र विद्यासागर (ब) नीत्से (स) दिनकर (द) गाँधी

प्रश्न 7. ईर्ष्या की बेटी का नाम है–

(अ) निन्दा (ब) घृणा (स) पीड़ा (द) कामना

प्रश्न 8. जब ईर्ष्या प्रेरणा देती है तो उसका यह कार्य किस प्रकार का होता है–

(अ) प्रशंसात्मक (ब) विचारात्मक (स) रचनात्मक (द) व्यंग्य पूर्ण

प्रश्न 9. ईर्ष्या से बचने का उपाय है–

(अ) मौन रहना (ब) अधिक बोलना (स) मानसिक अनुशासन (द) कोई नहीं

प्रश्न 10. 'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से' निबंध दिनकर की किस पुस्तक से लिया गया है–

(अ) कुरूक्षेत्र (ब) उर्वशी (स) अर्द्धनारीश्वर (द) रेणुका

उत्तरमाला

1. (अ) 1908 2. (स) रामधारी सिंह दिनकर 3. (स) ज्ञानपीठ पुरस्कार 4. (स) 74 वाँ 5.(द) कामायनी 6. (अ)ईश्वरचन्द्र विद्यासागर 7. (अ) निन्दा 8. (स) रचनात्मक 9. (स) मानसिक अनुशासन 10. (स) अर्द्धनारीश्वर

प्रश्न 11. निम्नांकित प्रश्नों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

1. ईर्ष्या की बेटी का नाम ....है।
2. ईर्ष्या से बचने का उपाय.................................... है।
3. ईर्ष्या का यही अनोखा .... है।
4. चिन्तादग्ध व्यक्ति समाज की .... का पात्र है।
5. तुम्हारी निन्दा वही करेगा, जिसकी तुमने .... की है।

उत्तरमाला

1. निन्दा 2. मानसिक अनुशासन 3. वरदान 4. दया 5. भलाई

शेखावाटी मिशन–100

अतिलघूत्तरात्मक व लघूत्तरात्मक व निबंधात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. ईर्ष्या सबसे पहले किसको जलाती है ?

उत्तर : जिसके हृदय में उसका जन्म होता है।

प्रश्न 2. लेखक के पड़ोसी वकील के मन मे कौनसा दाह है ?

उत्तर : ईर्ष्या का दाह

प्रश्न 3. पाठ के अनुसार किसी मनुष्य की उन्नति कब सम्भव है ?

उत्तर : जब वह अपने चरित्र को निर्मल बनाएं एवं गुणों का विकास करे।

प्रश्न 4. मनुष्य के पतन का मुख्य कारण क्या है ?

उत्तर : मनुष्य के पतन का मुख्य कारण उसके सद्गुणों का ह्रास ।

प्रश्न 5. नीत्से ने ईर्ष्यालु लोगों के जलने का क्या कारण बताया है ?

उत्तर : नीत्से ने व्यक्ति की प्रगति एवं गुणों के आकर्षण को ईर्ष्यालु लोगों के जलने का कारण बताया है।

प्रश्न 6. ''इन बेचारों की बातों से क्या चिढ़ना ? ये तो खुद ही छोटे हैं '' यह कथन किसका है ?

उत्तर : यह कथन महान विचारक नीत्से का है।

प्रश्न 7. भारत सरकार ने दिनकर को किस सम्मान से नवाजा ?

उत्तर : पद्मभूषण से

प्रश्न 8. ईर्ष्यालु मनुष्य का सबसे बड़ा पुरस्कार क्या है ?

उत्तर : निन्दा के बाणों से अपने प्रतिद्वन्द्वी को बेधकर हँसने में एक आनन्द है और वह ईर्ष्यालु मनुष्य का सबसे बड़ा पुरस्कार है।

प्रश्न 9. 'ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है' लेखक ने ईर्ष्या का अनोखा वरदान किसे बताया है ?

उत्तर : आपसी होड़ और प्रतिस्पर्धा

प्रश्न 10. लेखक नें जहर की चलती फिरती गठरी किसे कहा है ?

उत्तर : लेखक नें चिन्ता और ईर्ष्या से दग्ध व्यक्ति को जहर की चलती फिरती गठरी कहा है।

प्रश्न 11. चिन्ता और चिता में क्या अन्तर बताया गया है ?

उत्तर : चिन्ता व्यक्ति के हृदय को जलाकर उसके मौलिक गुणों को दबा देती है जबकि चिता शरीर को भस्म कर देती है।

प्रश्न 12. चिन्तादग्ध मनुष्य समाज की दया का पात्र क्यों है ?

उत्तर : चिन्तादग्ध मनुष्य समाज की दया का पात्र इसलिए है क्योंकि समाज की दया से वह चिन्ता से बच सकता है।

प्रश्न 13. आपकी नजर में ईर्ष्या से कैसे बचा जा सकता है ?

उत्तर : मानसिक अनुशासन, लोभ, लालच, कामना , परनिन्दा, निरर्थक बातों पर नियंत्रण, श्रेष्ठ मानवीय गुणों का विकास, ईर्ष्यालु और चापलुसों से दूरी, सुयश और सम्मान की चाहत नही रखना आदि द्वारा ईर्ष्या से बचा जा सकता है।

प्रश्न 14. ईर्ष्यालु लोगों से बचने के लिए नीत्से ने क्या उपाय सुझाया है ?

उत्तर : ईर्ष्यालु लोगों से बचने के लिए निम्न उपाय सुझाए हैं –

1. प्रत्येक कार्य को उद्यम की भावना से करें।
2. ईर्ष्यालु व्यक्ति से दूर रहना।
3. यश की ईच्छा न करना।
4. जीवन मूल्यों का निर्माण करना।

प्रश्न 15. 'तुम्हारी निन्दा वही करेगा, जिसकी तुमने भलाई की है।' कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : ईश्वरचन्द विद्यासागर के इस कथन से सिद्ध होता है कि तुम जिस व्यक्ति की भलाई की वही तुम्हारी निन्दा करेगा क्योंकि सम्बन्धित व्यक्ति तुम्हारा सामीप्य प्राप्त कर तुम्हारे बारे में सब कुछ जान लेगा और उसके मन से तुम्हारे व्यक्तित्व का प्रभाव समाप्त हो जाएगा जो दूसरों के मन में अभी तक पड़ा हुआ है परिणामस्वरूप तुमसे काम निकल जाने के बाद वह स्वयं तुम्हारी निन्दा करने लगेगा, काम पड़ने पर प्रशंसा करेगा, काम बन जाने पर पीठ पीछे निन्दा करता रहेगा।

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न 16. लेखक ने ईर्ष्यालु व्यक्ति के क्या लक्षण बताए हैं ?

उत्तर : ईर्ष्यालु व्यक्ति उन चीजों से आनन्द नहीं उठाता है जो उसके पास हैं अपितु उन वस्तुओं से दुःख उठाता है जो दूसरों के पास है। वह अपनी तुलना दूसरों से कर अपने पक्ष के सभी अभावों को लेकर बहुत व्यथित हो जाता है वह आदत से लाचार रहता है। ईर्ष्या के दंश एवं वेदना से अकारणग्रस्त रहा है। अपनी उन्नति के लिए उद्यम प्रयास न कर दूसरों को हानि पहुँचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्त्तव्य मानता है।

प्रश्न 17. 'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से' रचना का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए ?

उत्तर : राष्ट्रीय–सांस्कृतिक काव्य धारा के प्रमुख कवि और लेखक रामधारी सिंह दिनकर द्वारा लिखित निबंध 'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से' जो उनकी अर्द्ध नारीश्वर रचना से लिया गया है। इस निबंध मे मानव मन की भयात्मक बुराई ईर्ष्या के बारे में बताया गया है। लेखक नें ईर्ष्यालु व्यक्ति के मनोविज्ञान का विचारपूर्ण विवेचन किया है। ईर्ष्यालु व्यक्ति को अपनें पास की वस्तुओं के उपभोग का आनन्द नहीं आता है वह दूसरों की वस्तुओं को देखता है और यह देखकर जलता है कि ये वस्तुएं मेरे पास क्यों नहीं है। ईष्यालु व्यक्ति महान मनुष्यों के गुणों के कारण उनकी निन्दा करता है, वह सोचता है कि निन्दा करने से वह मित्रों की नजर से गिर जायेगा तथा उसको वह स्थान अनायास ही प्राप्त हो जायेगा। किन्तु ऐसा नहीं होता है। यह तो उन्नति एवं सद्गुणों और चरित्र के विकास से ही संभव हो सकता है। अपनी कमियों को दूर करके तथा मानसिक अनुशासन से ही ईर्ष्या से मुक्त हो सकते हैं। यही इस निबंध का मूल भाव है।

प्रश्न 18. लेखक रामधारी सिंह दिनकर का साहित्यिक परिचय दीजिए।

उत्तर : राष्ट्रीय–सांस्कृतिक काव्य धारा के प्रमुख कवि और लेखक रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 1908 ई. में बिहार में मुँगेर जिले के सिमरिया गांव के एक साधारण किसान परिवार में हुआ। उनकी बी.ए. तक की शिक्षा पटना विश्वविद्यालय में हुई। आपने विभिन्न विभागों में सेवाएं देने के बाद गृह मंत्रालय मे हिन्दी सलाहकार का पद संभाला। आप राज्यसभा सदस्य भी रहे। सन् 1974 मे आपका देहावसान हो गया।

दिनकर हिन्दी के महत्वपूर्ण कवि थे। इनकी कविताएं ओज गुण से परिपूर्ण हैं। मैथिलीशरण गुप्त के बाद इनको राष्ट्रकवि का गौरव प्राप्त हुआ। गद्य ओर पद्य पर आपका समान अधिकार रहा है। आप श्रेष्ठ कवि, निबंधकार, तथा समालोचक रहे है। आपकी साहित्य सेवा के लिए आपको पद्मभूषण, साहित्य अकादमी तथा भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से नवाजा गया है।

प्रमुख रचनाएँ–

गद्य रचनाएँ– संस्कृति के चार अध्याय, भारतीय संस्कृति की एकता, अदर्धनारीश्वर, शुद्ध कविता की खोज

पद्य रचनाएँ– रेणुका, हुँकार, रसवन्ती, कुरूक्षेत्र, उर्वशी, परशुराम की प्रतिज्ञा, रश्मिरथी

प्रश्न 19. निम्न गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करो।

1. ईर्ष्या की बड़ी बेटी का नाम निन्दा है....................................मैं अनायास ही बैठा दिया जाऊँगा।
2. चिन्ता को लोग चिता कहते हैं..वह मनुष्य के मौलिक गुणों को ही कुण्ठित बना डालती है।
3. ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है..आदत से लाचार होकर उसे यह वेदना भोगनी पड़ती है।

शेखावाटी मिशन–100

सड़क सुरक्षा

प्रश्न 1. जतिन के पिता का क्या नाम था ?

उत्तर : वेलू गाँधी।

प्रश्न 2. जतिन किसकी पढ़ाई कर रहा था ?

उत्तर : इंजीनियर की।

प्रश्न 3. गाड़ी कौन चला रहा था ?

उत्तर : गाड़ी नरेन्द्र चला रहा था।

प्रश्न 4. जतिन कितने वर्षों से घर नहीं आया था ?

उत्तर : दो वर्षों से जतिन घर नहीं आया था।

प्रश्न 5. गाड़ी किससे टकरा गई थी ?

उत्तर : गाड़ी लाई ओवर से टकरा गई थी।

प्रश्न 6. सभी मित्र किस अवसर पर पार्टी कर रहे थे ?

उत्तर : सभी मित्र इकतीस दिसम्बर की रात नये वर्ष की पार्टी कर रहे थे।

प्रश्न 7. नये वर्ष की पार्टी में कौन नहीं गया था ?

उत्तर : निखिल नये वर्ष की पार्टी में नहीं गया था।

प्रश्न 8. प्रशिक्षु लाइसेंस कितने समय के लिए वैध होता है ?

उत्तर : प्रशिक्षु लाइसेंस छह माह के लिए वैध होता है।

प्रश्न 9. एम.ए.सी.टी. एक्ट 1989 के निर्देश क्या थे ? कोई दो लिखिए।

उत्तर : 1. दुघर्टना के दौरान किसी जीवन रक्षा के लिए कोई अड़चन नहीं हो सकती।

2. सहायता करने वाले से पुलिस किसी प्रकार की पूछताछ/संवाद नहीं कर सकेगी।

प्रश्न 10. सड़क सुरक्षा से संबंधित आपके कोई चार कर्तव्य लिखिए।

उत्तर : सड़क सुरक्षा से संबंधित हमारे चार कर्तव्य निम्नानुसार हैं–

1. दुघर्टना होने पर घायलों की मदद करना।

2. यातायात नियमों का पालन करना।

3. जब तक गाड़ी चलाने का लाइसेंस न मिले तब तक गाड़ी न चलाना।

4. यातायात के नियमों का प्रचार–प्रसार करना।

प्रश्न 11. सड़क पर चलते समय क्या–क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए ?

1. तेज गति से गाड़ी नहीं चलानी चाहिए।

2. किसी प्रकार का नशा करके गाड़ी नहीं चलानी चाहिए।

3. लेन बदलते समय इण्डीकेटर का प्रयोग करना चाहिए।

4. वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग न करें ।

5. सीट बैल्ट का प्रयोग करें।

6. यातायात नियमों का पालन करें।

शेखावाटी मिशन–100

अनिवार्य यातायात संकेत

रुक जाओ	रास्ता दो	सीधे प्रवेश निषिद्ध है।	एक ही रास्ता संकेत	एक ही रास्ता संकेत
दोनों वाहन दिशा में निषिद्ध	सभी मोटर वाहनों पर प्रतिबंध	ट्रक पर प्रतिबंध	बैलगाड़ी पर प्रतिबंध	तांगा पर प्रतिबंध
हाथ गाड़ी पर प्रतिबंध	साइकिल पर प्रतिबंध	पैदल चलने वालों पर प्रतिबंध	दाहिने मोड़ पर प्रतिबंध	बाएँ मोड़ पर प्रतिबंध

U मोड़ पर प्रतिबंध है।	ओवर टेकिंग पर प्रतिबंध है।	हॉर्न पर प्रतिबंध	बैलगाड़ी और हाथ गाड़ी पर प्रतिबंध है।	लम्बाई सीमा
गति सीमा	लोड सीमा	ऊँचाई सीमा	चौड़ाई सीमा	एक्सल लोड सीमा
वाहन के बीच दूरी है।	संकेत प्रतिबंध समाप्त होता है।	नो पार्किंग	खड़े या रोके नहीं	आगे ही अनिवार्य है।
बाएँ रखना अनिवार्य है।	दाहिने रखना अनिवार्य है।	बाएँ मोड़ना अनिवार्य है।	दाहिने मोड़ना अनिवार्य है।	आगे की ओर दाहिने मोड़ना अनिवार्य है।
आगे की ओर बाएँ मोड़ना अनिवार्य है।	आगे की ओर या बाएँ मोड़ना अनिवार्य है।	आगे की ओर या दाएँ मोड़ना अनिवार्य है।	साइकिल ट्रेक पर अनिवार्य है।	ध्वनि अनिवार्य है।

अपठित पद्यांश

(क) सुना रहा हूँ तुम्हें भैरवी जागों ओ सोने वाले।
जब सारी दुनिया सोती थी तब तुमने ही उसे जगाया,
दिव्य ज्ञान के दीप जलाकर तुमने ही तम दूर भगाया,
तुम्हीं सो रहे दुनिया जगती यह कैसा मद है मतवाले।
सुना रहा हूँ तुम्हें भैरवी जागों ओ सोने वाले।
तुमने वेद, उपनिषद् रचकर जग जीवन का मर्म बताया,
ज्ञान शक्ति हैं, ज्ञान मुक्ति है, तुमने ही तो गान सुनाया,
अक्षर से अनभिज्ञ तुम्हीं हो पिए किस नशे के थे प्याले।
सुना रहा हूँ तुम्हें भैरवी जागो ओ सोने वाले।

प्रश्न 1. 'भैरवी' क्या है ? कवि भैरवी क्यों सुना रहा है ?

उत्तर : भैरवी संगीत का एक राग है जो सवेरे बजाया जाता है। कवि सोने वालों को भैरवी सुनाकर जगाना चाहता है।

प्रश्न 2. कवि किनको जगाना चाहता है ?

उत्तर : कवि अज्ञान की नींद में सोये भारतीयों को जगाना चाहता है।

प्रश्न 3. "सारी दुनिया सोती थी तब तुमने ही उसे जगाया" में क्या भाव है ?

उत्तर : भाव यह है कि संसार में असभ्यता तथा बर्बरता थी, तब भारत ने ही सभ्यता का पाठ पढ़ाया था।

प्रश्न 4. उपर्युक्त पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तर : उपर्युक्त शीर्षक "जागरण की आवश्यकता" है।

प्रश्न 5. 'संसार' के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

उत्तर : जग और दुनिया।

अपठित पद्यांश

(ख) सच हम नहीं सच तुम नहीं
सच है महज संघर्ष ही।
संघर्ष से हटकर जिए तो क्या जिए हम या कि तुम।
जो नत हुआ वह मृत हुआ ज्यों वृत से झर के कुसुम।
जो लक्ष्य भूल रुका नहीं।
जो हार देख झुका नहीं।
जिसने प्रणय पाथेय माना जीत उसकी ही रही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।
ऐसा करों जिससे न प्राणों में कहीं जड़ता रहे।
जो है जहाँ चुपचाप अपने–आप से लड़ता रहे।
जो भी परिस्थितियाँ मिले।
काँटे चुभें, कलियाँ खिले।
हारे नहीं इंसान, है संदेश जीवन का यही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।

प्रश्न 1. कवि के अनुसार सच क्या है ?

उत्तर : कवि के अनुसार केवल संघर्ष ही सच है।

प्रश्न 2. 'जो नत हुआ सो मृत हुआ' का क्या आशय है ?

उत्तर : संघर्ष से डरकर जो पीछे हट जाता है, उसको जीवन का आनन्द नहीं मिलता।

प्रश्न 3. जीत किसकी होती है ?

उत्तर : अपन लक्ष्य पर डटे रहने वाले एवं हार से भी ना डरने वालों की जीत होती है।

प्रश्न 4. इस कविता में छाँटकर कोई एक विलोम शब्द लिखिए।

उत्तर : हार–जीत।

प्रश्न 5. कविता का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तर : कविता का उपयुक्त शीर्षक है– 'संघर्ष ही जीवन है'।

शेखावाटी मिशन–100

निबंध लेखन

1. कोरोना वायरस : एक वैश्विक महामारी

(i) प्रस्तावना
(ii) कोरोना वायरस क्या है ?
(iii) कोरोना के लक्षण ?
(iv) कोरोना से बचने के उपाय
(v) उपसंहार

प्रस्तावना

कोरोना वायरस को विश्व संगठन ने महामारी घोषित कर दिया हैं। कोविड–19 का संक्रमण बहुत जल्द एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता हैं इसलिए इस वायरस से बचने के लिए सरकार द्वारा सावधानी बरतने की सलाह दी जा रही है। भारत में भी इसका प्रसार तेजी से हुआ। भारत सरकार के द्वारा इससे बचने के उपायों को लागू करके एवं जनता को जागृत कर सफतापूर्वक नियंत्रित कर लिया है। सरकार टीकाकरण करके इस रोग को जड़ से समाप्त करने का प्रयास कर रही है।

कोरोना वायरस क्या है ?

कोरोना वायरस एक ऐसा संक्रमण है जिसमे व्यक्ति को सर्दी–जुकाम और सांस लेने जैसी समस्या हो सकती है। इस वायरस का संक्रमण दिसंबर 2019 में चीन के वुहान शहर से शुरु हुआ था जो तेजी से पूरे विश्व में फैल गया। कोविड–19 नाम का यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति मे बहुत जल्दी ट्रांसफर होता हैं इसलिए इससे बचने के लिए सोशल डिस्टेसिंग का पालन करने की सलाह दी जा रही है। सामाजिक दूरी बनाए रखकर ही इससे बचा जा सकता है तभी सरकार द्वारा समय–समय पर लॉकडाउन लागू किया गया एवं कर भी रही है ताकि इस वायरस से बचा जा सकें।

कोरोना वायरस के लक्षण–

इस बीमारी के लक्षणों की बात करें तो यह सामान्य सर्दी–जुकाम या निमोनिया जैसा होता है। इस वायरस का संक्रमण होने के बाद बुखार, जुकाम, सांस लेने में तकलीफ, नाक बहना और गले में खरांस जैसी समस्याएं होती हैं। यह वायरस अस्थमा, मधुमेह, हार्ट की बीमारी से ग्रसित व्यक्ति पर ज्यादा प्रभाव डालता है।

कोरोना से बचने के उपाय–

– कोरोना से बचाव के लिए सोशल डिस्टेंसिंग रखना अति जरूरी है।
– हाथों को बार–बार धोना एवं सफाई का पूरा ध्यान रखना है।
– मास्क का इस्तेमाल करना।
– हाथ मिलाने की जगह हाथ जोड़कर नमस्ते करने की आदत बनाना।
– घर में लाई गई किसी भी चीज को पहले सैनिटाइज करें या धूप में रखकर फिर इस्तेमाल करें।
– चेहरे और आँखो पर हाथों से स्पर्श नहीं करना
– छींकते और खांसते समय अपनी नाक और मुँह को रूमाल से ढ़कें।
– अपने इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाएं जिसके लिए आप अपनी भोजन में पौष्टिक चीजों कां शामिल करें।
– दिन में कम से कम एक बार हल्दी वाले दूध का सेवन करें।
– अपने तापमान और श्वसन लक्षणों की जांच नियमित रूप से करें।

उपसंहार

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी से बचने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। शोधकर्ता वैज्ञानिक इस वायरस से छुटकारा पाने के लिए दवा बनाने में जुटे हुए हैं और कुछ हद तक अब सफल भी हो रहे हैं परंतु जब तक इसकी दवा पूर्णतः नहीं बन जाये, पूरे देशवासियों को इसकी वैक्सिन नहीं मिल जाए तब तक हम सबकी जिम्मेदारी बनती हैं कि हम सरकार द्वारा बताये गये दिशा–निर्देशों का पालन करें ताकि हम देश को सुरक्षित एवं रोगमुक्त कर सके।

2. कम्प्यूटर का महत्त्व

(i) प्रस्तावना
(ii) कम्प्यूटर का इतिहास
(iii) कम्प्यूटर का विकास एवं उसका उपयोग
(iv) कम्प्यूटर प्रयोग की व्यापकता
(v) कम्प्यूटर की महत्ता
(vi) भारत में कम्प्यूटर का भविष्य
(vii) कम्प्यूटर एवं मानव मस्तिष्क
(viii) उपसंहार

प्रस्तावना–

हम वैज्ञानिक युग में जी रहे हैं। विज्ञान कि माध्यम से मानव ने एक से बढ़कर एक आश्चर्यजनक खोजें की है। विज्ञान ने मानव को प्रकृति विजेता बना दिया हैं जिसमें उसका सहायक आविष्कार है कम्प्यूटर। इसकी चर्चा अभी विगत कुछ वर्षो से ही होने लगी हैं। इसने प्रगति के द्वार खोल दिये हैं। अब कम्प्यूटर से भी आगे सुपर कम्प्यूटर बनने लगे है।

कम्प्यूटर का इतिहास–

कुछ विद्वान मानते हैं कि कम्प्यूटर निर्माण का प्रथम प्रयास यूनान और मिस्त्र में हुआ था। ईसा से दस शताब्दी पूर्व यहाँ एक ऐसा यंत्र बनाया गया जो कुछ गणितीय क्रियाओं को करने में सक्षम एवं सहायक था। इस यंत्र का नाम था अबेकस, जो बालकों को प्रारम्भिक गणितीय शिक्षा देने में काफी था। इसके बाद एक फ्रांसीसी युवक ने इस दिशा में कार्य किया। उसने पहियों वाला एक यंत्र बनाया जो अनेक क्रियाएं सम्पादित करता था। यह कम्प्यूटर की कार्यप्रणाली पर आधारित था।

इसके बाद इंग्लैण्ड के वैज्ञानिक चार्ल्स बेबेज ने कम्प्यूटर का आविष्कार किया। इस कम्प्यूटर ने अनेक गणनाओं को, जटिल से जटिल समस्याओं का हल कुछ ही पलों में खोज निकाला। इसके लिए विशेष भाषाएँ भी आविष्कृत है जिन्हें बेसिक, कोबोल एवं पास्कल आदि नाम दिये गए। यह पूरी पुस्तकों, फाइलो आदि को स्मृति भण्डार में रख सकता हैं जिसे कभी भी छापा जा सकता है।

कम्प्यूटर का विकास एवं उसका उपयोग–

जब कम्प्यूटर का जन्म हुआ तो उसकी प्रारम्भिक अवस्था में यह अति विशाल एवं मूल्यवान था। विशाल होने के कारण यह जगह भी अधिक घेरता था। इसे वातानुकूलित स्थान की आवश्यकता होती थी परंतु ट्रांजिस्टर के विकास ने कम्प्यूटर विकास में चार चाँद लगा दिये। इससे कम्प्यूटर के आकार पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

कम्प्यूटर के विकास में दूसरा योगदान किया 'ब्लूचिप्स' ने इसके अति सूक्ष्म आकार में असंख्य संदेश, आदेश भण्डारित हो सकते हैं। आज का युग व्यक्तिगत कम्प्यूटर अथवा पी० सी० का हैं जिसका आकार लघु एवं कार्यकुशलता अधिक होती है।

कम्प्यूटर की व्यापकता–

आज कम्प्यूटर का प्रयोग अति व्यापक स्तर पर होने लगा है। 'लेपटॉप' कम्प्यूटर तो आज प्रत्येक शिक्षित नागरिक के लिए आवश्यक–सा हो गया है।

आज जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं जहाँ कम्प्यूटर आवश्यक न हो। बैंकिग के क्षेत्र में कम्प्यूटर हिसाब–किताब का अच्छा साधन बनकर उभरा है। आज तो यह हो रहा है कि कम्प्यूटर से घर बैठे ही अपना लेन–देन आसानी से कर लेते है। कम्प्यूटर से ही प्रक्षेपास्त्रों का संचालन एवं नियंत्रण हो रहा हैं। वैज्ञानिक इसी के सहारे धरती पर बैठे–बैठे चन्द्र अभियान एवं मंगलग्रह पर जीवन की खोज में लगे हुए है। प्राकृतिक आपदाओं का पूर्वानुमान में कम्प्यूटर अपनी अहम् भूमिका निभा रहा है। शिक्षा, व्यापार, अनुसंधान, युद्ध, उद्योग, कृषि, संचार, अंतरिक्ष विज्ञान, मौसमी भविष्यवाणी आदि सभी क्षेत्रों में कम्प्यूटर का प्रवेश हो चुका है। अब तो कम्प्यूटर ज्योतिषी बनकर जन्मकुण्डली बनाने तक पर अपना अधिकार जमा लिया है।

कम्प्यूटर की महत्ता–

आज के युग में कम्प्यूटर मानव की एक अपरिहार्य वस्तु बन गया है। शिक्षा के क्षेत्र में कम्प्यूटर मानव ने एक अनुपम क्रांति ला दी है। लम्बी–लम्बी गणनाओं का हल, सूचनाओं का विश्लेषण एवं सम्भावी परिणाम अंतरिक्ष यान संचालन आज कम्प्यूटर पर पूर्णरूपेण आश्रित हो गये हैं।

सरकार इसके महत्व को जानकर इसे विद्यालय में अनिवार्य विषय के रूप में ला रही है। छात्रों का भविष्य आज कम्प्यूटर से जुड़ गया। चाहे वह लिपिक बनना चाहे या व्यापारी, वैज्ञानिक बनना चाहे या प्रबन्धक बनना चाहे, कलाकार बने या अध्यापक, कम्प्यूटर शिक्षा की इस अनिवार्यता के कारण इसकी उपयोगिता प्रमाणित हो रही है।

भारत में कम्प्यूटर का भविष्य–

भारत देश में कम्प्यूटर प्रयोग की अपार सम्भावनाएं हैं। हमारे देश में अब तक तो यह सामान्य रूप से कुछ ही क्षेत्रों में काम लिया जाता था लेकिन अब वे दिन दूर नहीं जब हर क्षेत्र में कम्प्यूटर सहायक बनेगा। विद्यालयों में वह शिक्षक के रूप में कार्य करेगा, वाहनों में वह चालक होगा, वहीं कारखानों का सुदृढ़ प्रबन्ध करेगा, युद्ध क्षेत्र में सैनिक बनकर युद्ध का संचालक करेगा। साथ ही शासन–प्रशासन में शीघ्रता, चुस्ती और पारदर्शिता आएगी। देश की राष्ट्रीय एकता पुष्ट होगी।

कम्प्यूटर और मानव मस्तिष्क–

कम्प्यूटर की तुलना हम मानव मस्तिष्क से कर सकते हैं। आज कम्प्यूटर मानव की तुलना अधिक ताकतवर सिद्ध हो रहा है। गणना करने, चेहरे पहचानने, वस्तुओं की पहचान, निरंतर कार्य करने की क्षमता, संग्रह क्षमता, जैसे कार्य क्षेत्र में कम्प्यूटर मानव मस्तिष्क से अधिक शक्तिशाली बनकर उभरा है। परंतु यह एक मशीन है जिसे इंसान ने बनाई है अतः इसे इंसान से श्रेष्ठ ना मानकर इसे केवल देश की प्रगति के लिए उपयोग में लेना है।

उपसंहार–

आज मनुष्य कम्प्यूटर के रोमांचकारी और सुख–सुविधाओं पर मुग्ध है किन्तु मानव जीवन में कम्प्यूटर का दिनोंदिन बढ़ता प्रभाव खतरे की घण्टी भी है। कम्प्यूटर धीरे–धीरे मानव की अनेक प्राकृतिक क्षमताओं को समाप्त कर रहा है। इसके प्रभाव से स्मरण शक्ति, तर्क शक्ति का ह्रास, बच्चों एवं युवाओं में सामाजिकता की भावना में कमी, निरंतर प्रयोग से आँखों और मस्तिष्क को हानि पहुँचा रहा है। कहीं ऐसा ना हो कि कम्प्यूटर एक दिन मानव जाति को ही बेदखल कर उसके स्थान पर आसीन हो जाए अतः हमें इस विषय पर विचार करना है एवं समय रहते संभल जाना भी है।

अन्य अति महत्त्वपूर्ण निबन्ध

1. स्वच्छ भारत : स्वस्थ भारत
   (क) प्रस्तावना (ख) स्वच्छता क्या है ? (ग) स्वच्छता के प्रकार (घ) स्वच्छता के लाभ
   (ड) स्वच्छता में हमारा योगदान (च) उपसंहार
2. युवकों में बेकारी/बेरोजगारी
   (क) प्रस्तावना (ख) भारत में बेरोजगारी : दिशा और दशा (ग) बेरोजगारी के कारण
   (घ) समाधान के उपाय (ड) उपसंहार
3. भ्रष्टाचार और राजनीति
   (क) प्रस्तावना (ख) भ्रष्टाचार क्या है? (ग) भ्रष्टाचार के विविध रूप (घ) भ्रष्टाचार के प्रभाव
   (ड) निवारण के उपाय (च) उपसंहार
4. मूल्यवृद्धि की समस्या
   (क) प्रस्तावना (ख) महँगाई की विनाश लीला (ग) महँगाई के कारण (घ) महँगाई का स्वरूप
   (ड) महँगाई के प्रभाव (च) महँगाई रोकने के उपाय (छ) उपसंहार

पत्र लेखन

पत्राचार के दो महत्वपूर्ण व्यक्ति–
प्रेषक – पत्र लिखने वाला।
प्रेषिति– जिसे पत्र लिखा जाता है।
कार्यालय पत्र लेखन दो रूपों में लिखा जाता है

1. कार्यालय द्वारा किसी अन्य कार्यालय या व्यक्ति को लिखे जाने वाले पत्र
2. व्यक्ति द्वारा किसी कार्यालय को लिखे जाने वाले पत्र

1. कार्यालय द्वारा किसी अन्य कार्यालय या व्यक्ति को लिखे जाने वाले पत्र का प्रारूप–

राजस्थान/भारत सरकार
कार्यालय, प्रेषक अधिकारी के पद का नाम,कार्यालय का नाम एवं पता

पत्र क्रमांक दिनांक

प्रेषिति के पद का नाम,
कार्यालय का नाम एवं पता।

विषय : .... हेतु।
महोदय,
उपर्युक्त विषयांर्तगत निवेदन/लेख है कि...
....।
अपेक्षा है/आशा है ....
................।
सादर।
संलग्न : (यदि लगाए गए हो तो)

भवदीय
हस्ताक्षर–क ख ग
(प्रेषक का पद नाम)

पत्र क्रमांक .... दिनांक.................
प्रतिलिपि : निम्नांकित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु –
1. जिसको प्रतिलिपि भेजनी है उसका पद का नाम, कार्यालय का नाम एवं पता
2. रक्षित पत्रावली।

हस्ताक्षर कखग
पद नाम (कोष्ठक में)

शेखावाटी मिशन–100

अधिशासी अभियंता, राजस्थान राज्य विद्युत निगम, सीकर की ओर से एक पत्र पुलिस अधीक्षक सीकर को लिखिए जिसमें किसान रैली के दौरान विद्युत लाइनों की सुरक्षा के बारे में अवगत करवाया गया हो।

राजस्थान सरकार

कार्यालय, अधिशासी अभियन्ता, राजस्थान राज्य विद्युत निगम लिमिटेड, सीकर

प.क्र–.रा.रा.वि.नि.सी. / 21 / 13 / 2021 08 फरवरी, 2021

पुलिस अधीक्षक सीकर
जिला सीकर।

विषय : 28 फरवरी, 2021 को आयोजित किसान रैली के दौरान विद्युत लाइनों की सुरक्षा करने हेतु।

महोदय,

उपर्युक्त विषयांतर्गत हम आपका ध्यान 08 फरवरी, 2021 को कलेक्टर के कार्यालय में हुई बैठक की ओर आकृष्ट करना चाहते हैं जिसमें 28 फरवरी, 2021 को आयोजित किसान रैली से सुरक्षा संबंधी सम्भावित खतरों पर चर्चा की गई थी। उक्त बैठक में किसान रैली के दौरान किसानों का रोष मुखर हो सकता है तथा वे ट्रांसफॉर्मर जलाने आदि की कार्यवाही पर भी उतर सकते है। इस संदर्भ में हमारी ओर से निवेदन है कि इस रैली के दिन आपके नेतृत्व में पुलिस कर्मियों द्वारा कड़ी सुरक्षा हो। बिजली की कमी से उपजे किसान आक्रोश की इस विषम परिस्थिति में पुलिस बल का सहयोग देने में आपका विशेष सहयोग रहेगा। इसी अपेक्षा के साथ।
संलग्न : 1. किसान सभा के अध्यक्ष के रैली के संबंध में पत्र की छायाप्रति।

भवदीय
क ख ग
(अधिशासी, अभियन्ता)

प.क्र.–रा.रा.वि.नि.सी. / 21 / 13 / 2021 08 फरवरी, 2021
प्रतिलिपि : सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु–

1. उप अधीक्षक, पुलिस, फतेहपुर वृत।
2. थाना प्रभारी पुलिस थाना फतेहपुर ।
3. थाना प्रभारी पुलिस थाना रामगढ़।
4. रक्षित पत्रावली।

हस्ताक्षर
क ख ग
अधिशासी अभियन्ता

शेखावाटी मिशन–100

जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) सीकर की ओर से एक कार्यालयी पत्र समस्त प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सीकर को लिखिए जिसमें कक्षा 10 के कमजोर विद्यार्थियों को गणित, अंग्रेजी व विज्ञान विषयों के अध्यापन के लिए अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन सुनिश्चित किया गया हो।

राजस्थान सरकार

कार्यालय, जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) सीकर

प.क्र–जि.शि.अ.मु.सी./21/13/2019 08 नवंबर, 2019

प्रधानाचार्य

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय समस्त

सीकर

विषय : कमजोर विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त कक्षाओं के आयोजन हेतु।

महोदय,

उपर्युक्त विषयांतर्गत लेख है कि आपके विद्यालय की कक्षा 10 का परीक्षा परिणाम गुणात्मक एवं परिमाणात्मक दृष्टि से अच्छा रहे इस हेतु आप कक्षा 10 के कमजोर विद्यार्थियों के लिए गणित, अंग्रेजी व विज्ञान विषयों में अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन सुनिश्चित करें। आवश्यकता होने पर सेवानिवृत शिक्षकों अथवा वरिष्ठ प्राध्यापकों की सेवाएँ भी ली जा सकती हैं। उक्त विषयों में अर्द्ध वार्षिक परीक्षा परिणाम के आधार पर कमजोर विद्यार्थियों की सूची तथा आदेश अनुपालना की सूचना इस कार्यालय को भिजवायें।

भवदीय

क ख ग

जिला शिक्षा अधिकारी

प.क्र–जि.शि.अ.मु.सी./21/13/2019 08 नवंबर, 2019

प्रतिलिपि : सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु–

1. श्रीमान निदेशक, मा. शिक्षा, बीकानेर।
2. श्रीमान संयुक्त निदेशक, चुरू संभाग, चुरू।
3. श्रीमान मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी समस्त, सीकर।
4. रक्षित पत्रावली/कार्यालय प्रति।

भवदीय

क ख ग

जिला शिक्षा अधिकारी

शेखावाटी मिशन–100

कार्यालय शिक्षा निदेशक, राजस्थान की ओर से राज्य के समस्त जिला शिक्षा अधिकारी के नाम एक पत्र का प्रारूप बनाएं जिसमें योगासन और प्राणायाम को विद्यालयों में दैनिक चर्या का अंग बनाए जाने का उल्लेख हो।

कार्यालय, निदेशक (शैक्षिक), माध्य. शि. बोर्ड राजस्थान, अजमेर

पत्रांक– 31.19.2019 दिनांक– 20.02.2021

जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)
समस्त जिले

विषय– योगासन एवं प्राणायाम को विद्यालय की दैनिक चर्या में सम्मिलित किये जाने के संबंध में।

मा.शि.बो. राजस्थान ने 'योगासन और प्राणायाम' को छात्रों के लिए लाभदायक मानते हुए निर्णय लिया है कि प्रदेश के सभी विद्यालयों में इसे दैनिक चर्या का अंग बनाया जाये। अनुभव से यह ज्ञात हुआ है कि योगासन और प्राणायाम से छात्रों का मानसिक एवं शारीरिक विकास होता हैं तथा एकाग्रता में भी प्रगति होती है। अतः सभी जिला शिक्षा अधिकारी अपने–अपने क्षेत्र के विद्यालयों में इसकी व्यवस्था कराएं तथा इसके अनुपालन के संबंध में त्रैमासिक प्रतिवेदन उचित माध्यम से इस कार्यालय को प्रेषित करें।

हस्ताक्षर
निदेशक (शैक्षिक)
मा.शि.बो. राजस्थान, अजमेर

पत्रांक– 31.19.2019 दिनांक– 20.02.2021

प्रतिलिपिः सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित है

1. संयुक्त निदेशक, शिक्षा (माध्य.), समस्त राजस्थान।
2. मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, समस्त, राजस्थान।

हस्ताक्षर
निदेशक (शैक्षिक)
मा.शि.बो. राजस्थान, अजमेर

2. व्यक्ति द्वारा किसी कार्यालय को लिखे जाने वाले पत्र (आवेदन–पत्र, प्रार्थना–पत्र, शिकायती–पत्र) का प्रारूप

प्रेषक का नाम
पता।
दिनांक

(सेवा में,/प्रतिष्ठा में,)
प्रेषिति (पानेवाला) के पद का नाम
कार्यालय का नाम, पता

विषय : ....हेतु।

महोदय,

उपर्युक्त विषयांतर्गत निवेदन है कि...।

अपेक्षा है/आशा है ....।

सधन्यवाद।
संलग्न :– ....

भवदीय/प्रार्थी
हस्ताक्षर
नाम (कोष्ठक में)

पुनश्च– ....।

हस्ताक्षर
नाम (कोष्ठक में)

शेखावाटी मिशन–100

आपका नाम महेन्द्र है। आप वार्ड नंबर तीन कारंगा बड़ा (फतेहपुर) के रहने वाले हैं। बार–बार बिजली कटौती की समस्या को लेकर अभियंता विद्युत निगम, फतेहपुर को एक पत्र लिखिए।

महेन्द्र
वार्ड नं.–03
कारंगा बड़ा (फतेहपुर)
28 फरवरी, 2021

सेवा में,
श्रीमान सहायक अभियंता
विद्युत निगम, फतेहपुर।

विषय : बार–बार बिजली कटौती न करने हेतु।

महोदय,
उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि हमारे वार्ड नंबर तीन में बार–बार बिजली कटौती हो रही है। अघोषित बिजली कटौती के कारण बोर्ड परीक्षा में शामिल होने वाले छात्र–छात्राओं की पढ़ाई बाधित हो रही है।
अतः श्रीमान जी से निवेदन है कि बोर्ड परीक्षा को ध्यान में रखते हुए बिजली कटौती कम से कम करने की कृपा करें।

सधन्यवाद।

प्रार्थी
(महेन्द्र)

पुनश्चः प्रातः चार बजे से आठ बजे तक बिजली कटौती न करने की कृपा करें।

हस्ताक्षर
(महेन्द्र)

यातायात अधिकारी को सड़क दुर्घटना संबंधी पत्र

सेवा में,
मुख्य प्रबंधक,
यातायात विभाग, जयपुर
राजस्थान

विषयः यातायात अधिकारी को सड़क दुर्घटना संबंधी पत्र।
महोदय,
सविनय निवेदन है कि हम आपका ध्यान बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं की ओर आकर्षित करना चाहते हैं। आये दिन रोज सड़क दुर्घटना संबंधी खबरे सुनने को मिलती है। आशा है कि आप बढ़ती हुई सड़क दुर्घटनाओं के प्रति ध्यान देंगे। जो लोग वाहन चलाते समय नियमों का उल्लंघन करते हैं उनके खिलाफ कानून लागू करें ताकि वे लोग कानून के डर से नियमों का पालन करें। मेरा आपसे अनुरोध है कि यातायात पुलिस के सिपाहियों को तैनात करके रखे व नियमों का उल्लंघन करने वाले लोगों का चालान काटे और मोबाईल फोन पर बात करते हुए वाहन चलाने वालों का तुरंत चालान काटें और अपनी व दूसरों की रक्षा करें।
धन्यवाद

भवदीय
क.ख.ग.

अन्य महत्त्वपूर्ण पत्र

(1) ग्राम पंचायत 'क ख ग' के सचिव की ओर से जिला कलेक्टर 'अ ब स' को गर्मी के मौसम में पानी की समुचित व्यवस्था हेतु टेंकर भिजवाने के लिए कार्यालयी पत्र लिखिए।
(2) स्वयं को प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सिंगोदड़ा (सीकर) मानते हुए अपने जिले के जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) को एक पत्र लिखिए, जिसमें अपने विद्यालय में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का परीक्षा केन्द्र खोलने का अनुरोध किया गया हो।
(3) स्वयं को प्रधानाचार्य, सुभाष राजकीय माध्यमिक विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम), फतेहपुर, सीकर मानते हुए सचिव, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर को नवीनतम पुस्तक सूची भेजने हेतु एक पत्र लिखिए।

शेखावाटी मिशन–100

समास

- समास का शाब्दिक अर्थ है–संक्षिप्त रूप।
- परिभाषा– परस्पर संबंध बताने वाले शब्दों और विभक्तियों (कारक चिह्न) का लोप कर बनाये जाने वाले यौगिक शब्दों की प्रक्रिया को समास कहते हैं।
- दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं।
- जैसे– रसोई घर, माता–पिता, यथाशक्ति।
- समस्त पद– समास की प्रक्रिया द्वारा बने शब्दों को समस्त पद कहते हैं। समस्त पद में पहला पद पूर्व पद और दूसरा पद उत्तर पद कहलाता है।
- समास विग्रह– समास युक्त पदों को उनकी विभक्ति सहित पृथक–पृथक करने की रीति को विग्रह कहते हैं। जैसे– देशभक्ति (देश के लिए भक्ति)
- समास के भेद

समास के 6 भेद होते हैं–

1. अव्ययीभाव समास – प्रथम पद प्रधान
2. तत्पुरुष समास – दूसरा पद प्रधान
3. कर्मधारय –दूसरा पद प्रधान
4. द्विगु –प्रथम पद संख्यावाची व दूसरा पद प्रधान
5. द्वंद्व समास – दोनों पद प्रधान
6. बहुव्रीहि समास – दोनों पदों से भिन्न अन्य अर्थ की प्रधानता

अव्ययीभाव समास

अव्ययीभाव का अर्थ है–जो अव्यय का भाव दे।

परिभाषा – वे समस्त पद जो अव्यय का भाव दें उन्हें अव्ययीभाव समास कहते है। ये समस्त पद अव्यय का भाव देते हैं। अव्यय पदों पर लिंग, वचन, काल का प्रभाव नहीं पड़ता है।

– इस समास के पद सदैव क्रिया विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं।

– अव्ययीभाव समास में प्रथम पद की प्रधानता होती हैं।

– उपसर्ग युक्त पद इस समास में सम्मिलित होते हैं।

उदाहरण

समस्त पद समास विग्रह

प्रत्यक्ष – अक्षि (आँख) के प्रति (आगे)

आजीवन – जीवन भर

बेचैन – बिना चैन के

नासमझ – बिना समझ के

सप्रसंग – प्रसंग सहित

नियंत्रण – ठीक तरह से यंत्रण

प्रतिदिन – प्रत्येक दिन

यथा सम्भव – जितना सम्भव हो

नोट– शब्द की आवृत्ति होने पर भी अव्ययीभाव समास होता है–

एक–एक – एक के बाद एक

रातों–रात – रात ही रात में

– ध्वनि का दोहरा रूप आने पर भी अव्ययीभाव समास होता है–

खट–खट – पुनः पुनः खट की आवाज

धड़ा–धड़ – धड़ के बाद पुनः धड़ की आवाज

– जहाँ शब्द के अंत में भर, पर्यन्त, पूर्वक, प्रति आदि शब्दांश हों वहाँ भी अव्ययीभाव समास होता है–

दिन भर – पूरे दिन

जीवन पर्यन्त – सम्पूर्ण जीवन

शेखावाटी मिशन–100

तत्पुरुष समास

जहाँ कारक की छः विभक्तियों में से किसी एक विभक्ति (कर्ता और संबोधन को छोड़कर) का लोप हो उसे तत्पुरुष समास कहते है।

– इसमें दूसरा पद प्रधान होता हैं अर्थात् पूरे पद का लिंग वचन दूसरे पद के अनुसार होता है।

– कर्म तत्पुरूष ('को' का लोप)

वनगमन – वन को गमन

चिड़ीमार – चिड़ी को मारने वाला

कृष्णार्पण – कृष्ण को अर्पण

– करण तत्पुरूष ('से/ के द्वारा' का लोप)

रेखांकित – रेखा के द्वारा अंकित

हस्तलिखित – हाथ से लिखित

मनगढंत – मन से गढ़ी हुई

रोगपीड़ित – रोग से पीड़ित

– सम्प्रदान तत्पुरूष ('के लिए' को लोप)

हवनसामग्री – हवन के लिए सामग्री

बालमृत – बालाओं के लिए अमृत

देशभक्ति – देश के लिए भक्ति

– अपादान तत्पुरूष ('से अलग' का लोप)

रोग मुक्त – रोग से मुक्त

धर्मभ्रष्ट – धर्म से भ्रष्ट

ऋणमुक्त – ऋण से मुक्त

– संबंध तत्पुरूष ('का, के, की' का लोप)

राजरानी – राजा की रानी

जलधारा – जल की धारा

सूर्योदय – सूर्य का उदय

– अधिकरण तत्पुरुष (में, पर का लोप)

सिरदर्द – सिर में दर्द

जलमग्न – जल में मग्न

आपबीती – आप पर बीती

तत्पुरुष समास के अन्य उदाहरण

दहीबड़ा – दही में डुबा हुआ बड़ा

बैलगाड़ी – बैल के द्वारा खींचे जाने वाली गाड़ी

पवनचक्की – पवन से चलने वाली चक्की

जलयान – जल में / पर चलने वाला यान

अकारण – न कारण

असम्भव – न सम्भव

अनाचार – न आचार

अलग – न लगा हुआ

असभ्य – न सभ्य

कर्मधारय समास

परिभाषा –जिस समास में दोनों पदों के बीच विशेषण विशेष्य संबंध हो उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

विशेषण + विशेष्य

– इसमें दूसरा पद प्रधान होता है।

उदाहरण

समस्त पद	विग्रह
नीलकमल	नीला है जो कमल
महात्मा	महान् है जो आत्मा
खुशबू	खुश (अच्छी) है जो बू (गंध)
शुभागमन	शुभ है जो आगमन
स्वच्छजल	स्वच्छ है जो जल
उड़नतस्तरी	उड़ने वाली है जो तस्तरी

विशेषण + विशेषण

कालीस्याही	काली है जो स्याही
कुमार श्रमणा	कुमारी है जो शर्मीली
शीतोष्ण	शीत है जो उष्ण

उपमेय उपमान का संबंध होने पर भी कर्मधारय समान होता है–

कुसुम कोमल	कुसुम के समान कोमल
राजीव लोचन	(राजीव) कमल के समान लोचन
देहलता	देह रूपी लता
संसार सागर	संसार रूपी सागर
चरण कमल	कमल रूपी चरण
स्त्री रत्न	रत्न रूपी स्त्री

द्विगु समास

पहला पद संख्यावाची/गणना बोधक विशेषण होता है व दूसरा पद प्रधान होता है।

– पूरा समास समूह का बोध कराता है।

– इस समास के विग्रह में समूह या समाहार शब्द जोड़े जाते हैं।

समास विग्रह उदाहरण

शताब्दी – शत् (सौ) अब्दों (वर्षों) का समूह

चौराहा – चार राहों का समाहार

सप्ताह – सात अहनों (दिन) का समूह

नवरस – नौ रसों का समाहार

सतरंगी – सात रंगों का समाहार

सतसई – सात सौ दोहों का समाहार

दुमट – दो प्रकार की मिट्टी

शतांश – शत् (सौवाँ) अंश

नोट– द्विगु समास का तीसरा अर्थ निकलने पर बहुव्रीहि समास हो जाता है।

उदा. त्रिनेत्र – तीन नेत्र हैं जिसके शिवजी

शेखावाटी मिशन–100

द्वन्द्व समास

द्वंद्व समास के दोनों पदों के बीच और, या, अथवा आदि पदों का लोप रहता है।

– इस मे दोनों पद प्रधान होते है।

समस्त पद	विग्रह उदाहरण
राम–कृष्ण	राम और कृष्ण
माँ–बाप	माँ और बाप
बेटी–बेटा	बेटी और बेटा
जीवन–मरण	जीवन या मरण
पाप–पुण्य	पाप या पुण्य
लाभ–हानि	लाभ या हानि
चराचर	चर या अचर
आकाश पाताल	आकाश या पाताल
इधर उधर	इधर या उधर
भला–बुरा	भला या बुरा
सौ–दो सौ	सौ या दो सौ
चौसठ	चार और साठ
चौबीस	चार और बीस

नोट– द्वंद्व समास के विग्रह में कभी–कभी आदि शब्द जोड़ा जाता है।

उदाहरण

दाल–रोटी – दाल और रोटी आदि

हाथ–पैर – हाथ और पैर आदि

कुर्त्ता–टोपी – कुर्त्ता और टोपी आदि

साँप–बिच्छु – साँप और बिच्छु आदि

नोट : सार्थक–निरर्थक शब्दों में भी द्वन्द्व होता हैं।

उदाहरण

अड़ोसी–पड़ोसी – अड़ोसी–पड़ोसी आदि।

चाय–वाय – चाय आदि।

बहुव्रीहि समास

जिस समास में दोनों पदों का अर्थ न लेकर अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

– इस समास में कोई पद प्रधान नहीं होता है।

समास विग्रह उदाहरण

आशुतोष – वह जो शीघ्र तुष्ट हो जाते है शिव

वक्रतुण्ड – जिसका तुण्ड (मुख) वक्र (टेढ़ा) है वह गणेश

अनंग – जो बिना अंग का है वह कामदेव

देवराज – जो देवों का राजा है वह इन्द्र

चक्षुश्रवा – जिसके चक्षु (नेत्र) ही श्रवण (कान) है वह साँप

नाकपति – वह जो नाक (स्वर्ग) का पति है– इन्द्र

ब्रजवल्लभ – वह जो व्रज का वल्लभ (स्वामी) है– कृष्ण

मधुसूदन – मधु राक्षस का सूदन (वध) करने वाला वह कृष्ण

मकरध्वज – वह जिसके मकर (मछली) का ध्वज है वह कामदेव

पंचानन – वह जिसके पंच आनन (मुख) हैं– शिव

चन्द्रमोलि – वह जिसके मोलि (मस्तक) पर चंद्रमा है वह शिव

वाग्देवी – वह जो वाक् (भाषा) की देवी है वह सरस्वती

वज्रांग – वज्र का है अंग जिसके है वह हनुमान

हिरण्यगर्भ – वह जिसके हिरण्य (सोना) का है गर्भ–ब्रह्मा

रेवतीरमण – वह जो रेवती के साथ रमण करता है–बलराम

रोहिणी नन्दन – वह जो रोहिणी का नन्दन है–बलराम

सुधाकर – वह जो सुधा (अमृत) को संभव करने वाला है–चंद्रमा

शेखावाटी मिशन–100

वसुन्धरा – वह जो वसु (रत्न) को धारण करती है–पृथ्वी
शाखामृग – वह मृग जो शाखाओं पर रहता है–वानर
प्रज्ञाचक्षु – वह जिसके प्रज्ञा की चक्षु है – अंधा
लम्बकर्ण – वह लम्बे है कर्ण जिसके – गणेश
दामोदर – वह दाम (रस्सी) के समान उदर है जिसका – विष्णु
मृत्युंजय – मृत्यु को जय करने वाला वह–शिव
चतुरानन – वह जिसके चार आनन है–ब्रह्मा
षड़ानन – वह जिसके षट् आनन है–कार्तिकेय
त्रिनेत्र – तीन नेत्र हैं जिसके वह शिव

वाक्य–शुद्धि

वाक्य में अनेक प्रकार से अशुद्धियाँ हो जाती है, जैसे– संज्ञा, सर्वनाम संबंधी, अनुपयुक्त शब्द प्रयोग, अनावश्यक शब्द प्रयोग, लिंग संबंधी, वचन, क्रमभंग, कारक संबंधी, क्रिया, विशेषण, वर्तनी संबंधी आदि जिनको शुद्ध करके उदाहरण प्रस्तुत है–

(1) अनुपयुक्त शब्द के कारण अशुद्धिः–

अशुद्ध	शुद्ध
1. कोहिनूर एक अमूल्य हीरा है।	कोहिनूर एक बहुमूल्य हीरा है।
2. बन्दूक एक शस्त्र है।	बन्दूक एक अस्त्र है।
3. कृष्ण ने कंस की हत्या की।	कृष्ण ने कंस का वध किया।
4. हमारी सौभाग्यवती कन्या का विवाह होने जा रहा है।	हमारी आयुष्मती कन्या का विवाह होने जा रहा है।
5. वह दही जमा रही है।	वह दूध जमा रही है
6. चिन्ता एक भयंकर व्याधि है।	चिन्ता एक भयंकर आधि है।
7. हाथी पर काठी बाँध दो।	हाथी पर हौदा रख दो।
8. सीता राम की स्त्री थी	सीता राम की पत्नी थी।

(2) अनावश्यक शब्द के कारण अशुद्धि :–

1. जज ने उसे मृत्युदण्ड की सजा दी।	जज ने उसे मृत्युदण्ड दिया।
2. सायंकाल के समय घूमना चाहिए।	सायंकाल को घूमना चाहिए।
3. मेरे पास केवल मात्र एक घड़ी है।	मेरे पास केवल एक घड़ी है।
4. तुम वापस लौट जाओ।	तुम वापस जाओ।
5. महादेवी वर्मा विद्वान कवि हैं।	महादेवी वर्मा विदुषी कवयित्री हैं।
6. कृपया शीघ्र उत्तर देने कृपा करें।	कृपया शीघ्र उत्तर दे।
7. गुलामी की दासता बुरी है।	गुलामी बुरी है।
8. मैं रविवार के दिन घूमने जाता हूँ	मैं रविवार को घूमने जाता हूँ।
9. अन्तिम निष्कर्ष क्या निकला ?	निष्कर्ष क्या निकला ?
10. किसी और दूसरे से परामर्श लीजिए।	किसी और से परामर्श लीजिए।

(3) लिंग संबधी वाक्य अशुद्धि :–

1. मेरे मित्र की पत्नी विद्वान है।	मेरे मित्र की पत्नी विदुषी है।
2. आत्मा में परमात्मा निवास करती है।	आत्मा में परमात्मा निवास करता है।
3. उसका ससुराल जयपुर में है।	उसकी ससुराल जयपुर में है।
4. यह एकांकी बहुत अच्छी है।	यह एकांकी बहुत अच्छा है।
5. महादेवी एक प्रसद्धि कवि थी।	महादेवी एक प्रसिद्ध कवयित्री थी।
6. शराब पीनी बुरी आदत है।	शराब पीना बुरी आदत है।
7. मुझे व्याकरण अच्छी लगती है।	मुझे व्याकरण अच्छा लगता है।
8. मैं आपकी सहायतार्थ यहाँ हूँ।	मैं आपके सहायतार्थ यहाँ हूँ।

शेखावाटी मिशन–100

(4) वचन संबंधी अशुद्धि

1. वृक्षों पर कौआ बोल रहा है।	वृक्ष पर कौआ बोला रहा है।
2. यह मेरा ही हस्ताक्षर है।	ये मेरे ही हस्ताक्षर है।
3. प्यास के मारे उसका प्राण निकल गया।	प्यास के मारे उसके प्राण निकल गए।
4. विधि का नियम बड़ा कठोर होता है।	विधि के नियम बड़े कठोर होते है।
5. अभी तो पाँच बजा है।	अभी तो पाँच बजे हैं।
6. यहाँ सभी वर्ग के लोग रहते है।	यहाँ सभी वर्गों के लोग रहते है।
7. गीता के उपदेश सभी के लिए हितकर है।	गीता का उपदेश सभी के लिए हितकर है।

(5.) क्रमभंग सम्बन्धी वाक्य अशुद्धिः–

1. अधिकतर हिन्दी के लेखक निर्धन है।	हिन्दी के अधिकतर लेखक निर्धन हैं।
2. यहाँ पर शुद्ध गाय का दूध मिलता है।	यहाँ पर गाय का शुद्ध दूध मिलता है।
3. शीतल गन्ने का रस पीजिए।	गन्ने का शीतल रस पीजिए।
4. सीता के गले में एक मोतियों का हार है।	सीता के गले में मोतियों का एक हार है।
5. तुम बाजार जाओ तो एक फूलों की माला भी लेते आना।	तुम बाजार जाओ तो फूलों की एक माला भी लेते आना।
6. उसने दौड़ते हुए श्याम को देखा।	उसने श्याम को दौड़ते हुए देखा।
7. मुझे एक पानी का गिलास चाहिएं	मुझे पानी का एक गिलास चाहिए।

(6) कारक सम्बन्धी वाक्य अशुद्धि :

1. पाँच बजने को दस मिनट हैं।	पाँच बजने में दस मिनट है।
2. अपने बच्चे चरित्रवान् बनाओ।	अपने बच्चों को चरित्रवान् बनाओ।
3. गुरूजी के ऊपर श्रद्धा रखें।	गुरूजी के प्रति श्रद्धा रखो।
4. बन्दर पेड़ में बैठे है।	बन्दर पेड़ पर बैठे हैं।
5. राजस्थान ने वीर उत्पन्न किए है।	राजस्थान में वीर उत्पन्न हुए हैं।
6. यह समाचार दूरदर्शन में प्रसारित हुआ था।	यह समाचार दूरदर्शन से प्रसारित हुआ था।

(7) सर्वनाम सम्बन्धी वाक्य अशुद्धि :–

1. तुम तुम्हारा काम करों।	तुम अपना काम करो।
2. पिताजी ने मुझको कहा।	पिताजी ने मुझसे कहा।
3. आपका उत्तर मुझ से अच्छा है।	आपका उत्तर मेरे उत्तर से अच्छा है।
4. उसने जल्दी घर जाना था।	उसे जल्दी घर जाना था।
5. इतनी सी बात पर वह मेरे से रूठ गई।	इतनी सी बात पर वह मुझ से रूठ गई।
6. दूध में कौन गिर गया है?	दूध में क्या गिर गया है?

(8) क्रिया सम्बन्धी वाक्य अशुद्धिः–

1. मैंने तुम्हारी बहुत प्रतीक्षा देखी।	मैंने तुम्हारी बहुत प्रतीक्षा की।
2. यह आप पर निर्भर करता है।	यह आप पर निर्भर है।
3. हम रात में भोजन खाते है।	हम रात में भोजन करते हैं।
4. उसने क्या संकल्प किया?	उसने क्या संकल्प लिया?
5. मैं उसे सहायता देना चाहता हूँ।	मैं उसकी सहायता करना चाहता हूँ।
6. वास्को–डी–गामा ने भारत का आविष्कार किया।	वास्को–डी–गामा ने भारत की खोज की।

(9) मुहावरे के कारणः–

1. प्रधानमंत्री ने देश का धुआँदार दौरा किया।	प्रधानमंत्री ने देश का तूफानी दौरा किया।
2. युग परिवर्तन का बीड़ा कौन चबाता है?	युग परिवर्तन का बीड़ा कौन उठाता है?
3. दुश्मनों ने हथियार रख दिएं।	दुश्मनों ने हथियार डाल दिए।
4. मेरे तो साँस में दम आ गया।	मेरे तो नाक में दम आ गया।
5. उसने मुझे टका सा उत्तर दे दिया।	उसने मुझे टका सा जवाब दे दिया।
6. ईश्वर जब देता है तो छप्पर तोड़कर देता है।	ईश्वर जब देता है तो छप्पर फोड़कर देता है।
7. महेश की पत्नी तो गुलर का फूल है।	महेश की पत्नी तो चाँद का टुकड़ा है।
8. चोर दुम दबाकर चला गया।	चोर दुम दबाकर भाग गया।

(10) वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँः–

1. पूज्यनीय पिताजी आ रहे है।	पूजनीय पिताजी आ रहे हैं।
2. पढ़ने में आलस्यता ठीक नहीं है।	पढ़ने में आलस्य ठीक नहीं है।
3. निरपराधी को सजा नहीं मिलनी चाहिएं।	निरपराध को सजा नहीं मिलनी चाहिए।
4. मैं आपके उज्जवल भविष्य की कामना कराता हूँ।	मैं आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ
5. कब्बड़ी में काका का क्या काम?	कबड्डी में काका का क्या काम?

(11) विशेषण संबंधी अशुद्धियाँः–

1. राम का कद श्याम से बड़ा है।	राम का कद श्याम से लंबा है।
2. आप सभी लोग अपना काम कीजिए।	आप सभी लोग अपना–अपना काम कीजिए।
3. उसके पास मेरे से चौगुने धन है।	उसके पास मेरे से चौगुना धन है।
4. ईडन गार्डन एक लम्बा मैदान है।	ईडन गार्डन एक विशाल मैदान है।
5. गंगा नदी का पाट बहुत लम्बा है	गंगा नदी का पाट बहुत चौड़ा है।

पाठ्यपुस्तक (क्षितिज) में प्रयुक्त मुहावरे

मुहावरा अर्थ वाक्य प्रयोग

मन माने की बात – मन को जो अच्छा लगे

किसी को मीठा अच्छा लगता है तो किसी को खट्टा यह तो मन माने की बात है।

काल के बस में होना – मौत के शिकंजे में होना

प्राणी जन्म लेते ही काल के बस में हो जाता है।

फूँक से पहाड़ उड़ाना – काल्पनिक वीरता दिखाना

जिनमें ताकत नहीं होती वे केवल फूँक से पहाड़ उड़ाते हैं।

काल कवल होना – मौत का शिकार होना

जो इस संसार में आया है उसे एक दिन काल कवल होना है।

काल को हाँक लाना – मौत की स्थितियाँ पैदा करना

अरे! सड़क पर भारी वाहनों के बीच घुसकर क्यों बिना बात काल को हाँक कर लाना चाहते हो।

माथे काढ़ना – किसी पर गुस्सा उतारना

तुम किसी का दोष मेरे माथे क्यों काढ़ रहे हो।

कुम्हड़तिया होना – कमजोर होना

भारतीय वीर कुम्हड़बतिया नहीं हैं जो शत्रु से डर जायें।

अमृत से सींचना – जीवनी शक्ति का संचार करना

वसंत ऋतु सभी पेड़ पोधों को जीवनी शक्ति से सींचती है।

तन देना – प्राण न्यौछावर करना

सच्चे देशभक्त मातृभूमि की रक्षा में अपना तन देने में संकोच नहीं करते हैं।

लाव लश्कर समेटना – सामान समेटकर चल देना

भारत को आजादी मिलते ही अंग्रेज अपना लाव–लश्कर समेटकर चले गये।

शेखावाटी मिशन–100

तप्त तवे की बूँद होना – क्षणिक या नाशवान होना।
सांसारिक वैभव तप्त तवे की बूँद के समान होता है। देखते–देखते नष्ट हो जाता है।
मुख फेरकर भी न देखना – भुला देना/तनिक भी महत्व न देना।
काम निकल जाने पर उसने मुझे मुख फेरकर भी नहीं देखा।
डूबते–डूबते बचना – अप्रत्याशित रूप से हानि से बचना।
व्यापार में मेरा धन डूबते–डूबते बच गया।
घर की केवल मूँछें ही मूँछें होना– स्वयं के पास नाममात्र का साधन होना।
मित्रों ने समय–समय पर सहायता कर दी तो मेरा मकान बन गया। मेरे पास तो घर की मूँछें ही मूँछें थी।
हाथ लगना – अचानक प्राप्त होना।
रास्ते में मेरे हाथ एक थैली लगी जो नोटों से भरी थी।
दिन काटने पड़ना – कठिनाईयों में दिन बिताना।
गरीबी के कारण उसे कष्ट में दिन काटने पड़ रहे हैं।
पानी फेरना – व्यर्थ बना देना।
अपनी मूर्खता से उसने मेरी सारी मेहनत पर पानी फेर दिया।
राई का पर्वत बना देना – बहुत छोटी या साधारण बात को बहुत बड़ा बना देना।
बच्चे अपनी कल्पना से राई का पर्वत बना देते हैं।
दिल के अरमान निकालना – इच्छा पूरी करना।
मेरे पिताजी विदेश से आयेंगे तब मैं अपने दिल के अरमान निकालूँगा।
सिर पर सवार होना – बात मनवाने के लिए अड़ना।
उधारी वसूलने वाले सिर पर सवार हो जाते हैं।
मुँह चुराना – सामने न आना।
उधार न चुका पाने के कारण वह मुँह चुराता फिरता है।
जी चुराना – परिश्रम से बचना।
पढ़ने से जी चुराओगे तो कष्ट उठाने पड़ेंगे।
दिल बैठ जाना – हिम्मत न रहना या निराश होना।
दसवीं कक्षा में कम अंक आने पर उसका दिल बैठ गया।
नानी मर जाना – भयभीत हो जाना।
पुलिस को देखते ही चोरों की नानी मर गई।
आग में कूदना – साहस दिखाना/साहसी कार्य करना।
उग्र भीड़ के बीच जाना आग में कूदने के समान है।
ईद का मुहर्रम होना – खुशी का शोक में बदलना।
घर में त्योहार मनाने की खुशी थी, परंतु दादाजी के अचानक निधन के कारण ईद मुहर्रम हो गई।
मुँह की खाना – हार मानना
कमजोर आदमी को ताकतवर से सदा मुँह की खानी पड़ती है।
फकीरों का चिमटा होना – एक वस्तु से सब काम साधना
हामिद ने चिमटा खरीदा था जो फकीरों के चिमटे के समान बड़ा उपयोगी था।
छक्के छूट जाना – हिम्मत हार जाना
भारतीय सेना को देखते ही दुश्मन के छक्के छूट जाते हैं।
ऐड़ी चोटी का जोर लगाना – पूरी शक्ति से काम करना उसने सफलता पाने के लिए ऐड़ी चोटी का जोर लगाया।
रंग जमाना – प्रभाव जमाना
हामिद के चिमटे ने सब पर अपना रंग जमा दिया।
माटी में मिल जाना – नष्ट/बरबाद होना
अकाल के कारण कई लोगों का जीवन माटी में मिल गया।
छक्के छुड़ा देना – घबरा देना
भारतीय सेना ने दुश्मन के छक्के छुड़ा दिये।

शेखावाटी मिशन–100

गई–बीती समझना – महत्वहीन समझना
पुराणों की बात काल्पनिक हैं तो नाटकों की बातें तो और ज्यादा गई बीती समझनी चाहिए।
सोलहों आने होना – पूर्ण होना/पूर्ण सत्य होना।
योग भगाये रोग। यह बात सोलह आने सत्य है।
दलीलें पेश करना – तर्क कुतर्क कर अपनी बात को महत्व देना
न्यायालयों में वकील दलील पेश कर मुकदमा जीतना चाहते हैं।
नाक कटवा देना – सम्मान गिरा देना।
अपनी इस घटिया हरकत से तुमने पूरे परिवार की नाक कटवा दी।
नाक ऊँची कराना – सम्मान बढ़ाना
सैनिक शहीद होकर अपने परिवार, समाज और देश की नाक ऊँची करा देता है।
छत्रछाया पाना – आश्रय या सुरक्षा पाना
गुरुजी की छत्रछाया में विद्यार्थी सफलता प्राप्त करते हैं।
प्राणों की बाजी लगाना – जीवन को दाँव पर लगाना/शहीद होना
शत्रु को परास्त करने के लिए वीर सैनिक प्राणों की बाजी लगा देते हैं।
खून पसीने से सींचना – कठोर परिश्रम और त्याग करना
अपने खून पसीने से सींचकर ही देशभक्तों ने स्वतंत्रता की बेल बढ़ाई।
प्राण पखेरू उड़ना – मृत्यु हो जाना
भयंकर दुर्घटना में उसका प्राण पखेरु उड़ गया।
मजा चखाना – बदला लेना
देश के दुश्मनों को उनकी करतूतों का मजा चखाया जायेगा।
कच्ची गोलियाँ न खेलना – सटीक सामना करना
भारतीय पहलवान दंगल में कच्ची गोलियाँ नहीं खेलते हैं।
नमक हराम होना – फर्ज न निभाना
अपनी मातृभूमि के साथ गद्दारी करने वाले नमक हराम होते हैं।
मौत की गोद में सिर रखना – सहर्ष प्राणों का बलिदान करना
क्रांतिकारी देशभक्त मौत की गोद में सिर रखकर शहीद हुए थे।
पूर्णाहुति होना – कठिन कार्य का पूरा होना
शहीदों के बलिदान से ही स्वतंत्रता रूपी यज्ञ की पूर्णाहुति हो पायी।
गला घोंटना – आवाज दबाना
भ्रष्टाचारी लोग न्याय का गला घोंटने में लगे रहते हैं।
मन के अरमान पूरे होना – मनचाही हो जाना
इस स्वार्थी संसार में सज्जन लोगों के मन के अरमान पूरे नहीं हो पाते हैं।
आँखों में समेटना – अच्छी तरह देखना
प्रकृति के सुंदर दृश्यों को सभी यात्री आँखों में समेट लेना चाहते थे।
कुँआरापन टूटना – प्रथम बार प्रयोग में आना
हिमालय की पवित्र चोटी पर पहुँचकर हमें ऐसा लगा उसी समय उसका कुँआरापन टूटा हो।
हिमाकत करना – अक्षम्य भूल करना
देश के साथ गद्दारी की हिमाकत करना सहन नहीं की जा सकती।
हाथ पैर पटकना – खूब प्रयास करना
कुछ लोग रातोंरात लखपति बनने के लिए हाथ–पैर पटकते रहते हैं।
सिर धुनना – परेशानी प्रकट करना
लाख कोशिश करने पर भी सफलता नहीं मिलती है तो लोग सिर धुनने लग जाते हैं।
मन मारना – उत्साह रहित होना
बार–बार असफल होने पर व्यक्ति किसी काम को मन मारकर करता है।

शेखावाटी मिशन–100

कलेजा जलना – ईर्ष्या करना
दूसरों की प्रगति देखकर पड़ोसियों के कलेजे जलते रहते हैं।
आँखों से गिर जाना – सम्मान न रहना
अपने बुरे व्यवहार के कारण वह मित्रों की आँखों से गिर गया।
गुणों को कुंठित बनाना – गुणों का कम होना
अपने अनैतिक आचरण से व्यक्ति अपने गुणों को कुंठित बना डालता है।
सिर खुजलाना – सोच विचार करना या कारण जानना
मित्र के बुरे व्यवहार के कारण वह सिर खुजला रहा था।
अनुभवों को निचोड़ना – अनुभवों का सार निकालना
गुरुजन विद्यार्थियों को अनुभवों का सार बताते हैं।
दिल का गुबार निकालना – दबी भावनाओं को प्रकट करना
उसने अपने मित्र के सामने अपने दिल का गुबार निकाला।
जहर की चलती–फिरती गठरी – दुर्भावना से ग्रस्त व्यक्ति
कुछ लोग जहर की चलती–फिरती गठरी बनकर अकारण दूसरों का बुरा करते हैं।
दिल का छोटा होना – कंजूस स्वभाव का व्यक्ति होना
जो व्यक्ति छोटे दिल का होता है वह दूसरों को संकुचित दृष्टि से देखता है।
रेखांकित करना – ध्यान आकर्षित करना
महत्वपूर्ण बातों को हमें रेखांकित करना चाहिए।
संसार का फंदा काटना – सांसारिक मोह से मुक्त करना
संतों की संगति से व्यक्ति संसार का फंदा काटने में सफल हो जाता है।
हृदय में जीवित रहना – सदा मन में निवास करना
महापुरुष मृत्यु के उपरांत भी लोगों के हृदय में जीवित रहते हैं।
आत्मा जाग उठना – आध्यात्मिक ज्ञान जाग्रत होना
रामानंद से दीक्षा पाकर संत कबीर की आत्मा जाग उठी।
मन उचट जाना – मन न लगना
जीवन में लगातार असफलता मिलने से उसका मन उचट गया।
लोहे से सोना बनाना – साधारण से महान बनाना
स्वामी रामानंद ने अपने उपदेश से पीपा जैसे व्यक्ति को लोहे से सोना बना दिया।
पंच तत्व का शरीर होना – सर्वथा नश्वर होना
इस संसार में सभी प्राणियों का पंच तत्व का शरीर है, इस पर गर्व करना व्यर्थ है।
प्रश्नसूचक दृष्टि से देखना – आँखों में जिज्ञासा या कारण जानने का भाव होना।
छात्र ने गुरुजी की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा।
महाझर लगना – तेज वर्षा होना
वर्षा ऋतु में बादलों की महाझर लगी रहती है।
छाती की छाया में रखना – सुरक्षित रखना
लोग धन को छाती की छाया में रखते हैं।
फूला न समाना – अत्यधिक प्रसन्न होना
बोर्ड परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर हेमंत फूला नहीं समा रहा है।
भाग्य सो जाना – मनोवांछित लाभ न मिलना
काफी परिश्रम करने पर भी परीक्षा परिणाम आने पर मेरा भाग्य सो गया।
बेमौसर की बात – निरर्थक बातें करना
नासमझ लोग प्राय बेमौसर की बात किया करते हैं।
संगत का असर होना – संगत का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देना
चंदन के वृक्षों के साथ उगने से अन्य वृक्षों पर भी संगत का असर हो जाता है।
दुख बाँचना – दुख को समझना
वैवाहिक जीवन के सुख तो नजर आते हैं, पर उसे दुख बाँचने नहीं आते।

शेखावाटी मिशन–100

पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त लोकोक्तियाँ

कुछ जल कुछ गंगाजल – मिलावट से काम चलाना

हराम का माल हराम में जाये – पाप की कमाई बच नहीं पाती है

स्त्रियों के लिए पढ़ना कालकूट और पुरुषों के लिए पीयूष घूँट–एक ही कार्य के परस्पर विरोधी परिणाम मानना

जिस थाली में खाए उसी में छेद करे – उपकार को भुलाना

नींव के पत्थर का महत्त्व हर कीर्ति स्तंभ से बढ़कर होता है – देश धर्म पर बलिदान होने वालों यश राजा महाराजाओं से ज्यादा होता है।

एक लौ जलकर ही हजारों दीप जला सकती है – एक देश भक्त के बलिदान से ही हजारों लोगों में देश के लिए बलिदान की भावना जागती है।

प्राण पखेरू जाने कब उड़ जाएँ? – मानव जीवन अनिश्चित है/न जाने कब मृत्यु आ जाये

ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से – ईर्ष्या के भाव को मानव मन से निकाल पाना बड़ा कठिन है।

निरबैरी निहकामी साध, ता सिर देत बहुत अपराध – किसी से बैर न करने वाले और निष्काम स्वभाव वाले सज्जनों पर लोग दोष लगाया करते हैं।

दादू निंदा ताकौं भावै, जाकै हिरदे राम न आवै – ईश्वर विरोधी को निंदा करना अधिक सुहाता है।

जो ब्रह्माण्डे सोई पिण्डे – परमात्मा ही जीव में आत्मा रूप में विद्यमान है।

एकै मारग तें सब आया – मनुष्य मात्र का जन्म एक ही प्रकार से होता है अतः सभी बराबर हैं।

अन्य मुहावरे

1. श्री गणेश करना	–	कार्य प्रारम्भ करना
2. अपना उल्लू सीधा करना	–	अपने स्वार्थ को पूरा करना।
3. अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना	–	अपनी प्रशंसा स्वयं करना।
4. अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना	–	स्वयं अपना नुकसान करना।
5. अन्धे की लकड़ी	–	एकमात्र सहारा।
6. अक्ल के घोड़े दौड़ाना	–	मात्र कल्पनाएँ करना।
7. ओस का मोती होना	–	शीघ्र नष्ट हो जाने वाला।
8. आँखों का तारा होना	–	अत्यधिक प्यारा।
9. आँखे चार होना या करना	–	आमना–सामना होना/करना।
10. आँखे बिछाना	–	प्रेमपूर्वक स्वागत करना।
11. आँख दिखाना	–	क्रोध करना/डाँटना।
12. आँखों में खून उतरना	–	गुस्से से आँखे लाल हो जाना।
13. आँख फेर लेना	–	उदासीन हो जाना।
14. आँखे नीची होना	–	शर्मिन्दा होना
15. आग से खेलना	–	जान बूझकर परेशानी में पड़ना।
16. आकाश पाताल एक करना	–	कठोर परिश्रम करना।
17. आग लगने पर कुआँ खोदना	–	विपत्ति आने पर उपाय खोजना।
18. अगर–मगर करना	–	बहाने बनाना।
19. आकाश के तारे तोड़ना	–	असम्भव कार्य कर दिखाना।
20. आँसू पीना	–	दुःख सहन करना।
21. आसमान टूट पड़ना	–	बहुत बड़ी विपत्ति आना।
22. अन्धे के हाथ बटेर लगना	–	अयोग्य व्यत्ति को अच्छी वस्तु मिल जाना।
23. आस्तीन का साँप	–	धोखेबाज मित्र।
24. आपे से बाहर होना	–	क्रोध में होश खो देना।
25. आग में घी डालना	–	क्रोध को भड़काना।
26. आग बबूला होना	–	अत्यधिक क्रोधित होना।
27. इति श्री होना	–	समाप्त होना।

28. ईद का चाँद होना	–	बहुत दिनों से दिखाई देने वाला।
29. ईंट से ईंट बजाना	–	नष्ट–भ्रष्ट कर देना।
30. उड़ती चिड़िया पहचानना	–	थोड़े से संकेत में ही सब कुछ जान लेना।
31. उलटी गंगा बहाना	–	परम्परा के विपरीत कार्य करना।
32. एक अनार और सौ बीमार	–	जरूरत अधिक चीज कम(माँग अधिक पूर्ति कम)।
33. एक लाठी से सबको हाँकना	–	सभी के साथ एक–सा बर्ताव करना।
34. एक आँख से देखना	–	समानता का व्यवहार करना।
35. कलम तोड़ना	–	बहुत बढ़िया लेख लिखना।
36. कलेजा मुँह को आना	–	बहुत घबरा जाना।
37. कलेजे पर पत्थर रखना	–	संकट के समय धैर्य रखना।
38. कान लगाना	–	ध्यान देना।
39. कान पर जूँ न रैंगना	–	कोई असर न होना।
40. कान खड़े होना	–	चौकन्ना होना।
41. कान में तेल डालना	–	किसी की बात पर ध्यान न देना।
42. कूप मण्डूक होना	–	अल्पज्ञ होना।
43. कसौटी पर कसना	–	परखना।
44. काम तमाम कर देना	–	मार देना।
45. कफन सिर पर बाँधना	–	लड़ने मरने को तैयार रहना।
46. खून के घूँट पीना	–	गुस्सा मन में दबा लेना।
47. खेत रहना	–	युद्ध में मारे जाना।
48. कलम तोड़ना	–	अत्यधिक मर्मस्पर्शी रचना करना।
49. कागज की नाव होना	–	क्षण–भंगुर।
50. गुदड़ी का लाल होना	–	छुपारुस्तम/गरीब किन्तु गुणवान।
51. गड़े मुर्दे उखाड़ना	–	बीती बातें छेड़ना।
52. गंगा नहाना	–	दायित्व से मुक्ति पाना।
53. गुड़ गोबर होना	–	काम बिगड़ना।
54. घड़ों पानी गिरना/पड़ना	–	बहुत लज्जित होना/बेशर्म होना।
55. घोड़े बेचकर सोना	–	निश्चित होना।
56. चादर के बाहर पैर पसारना	–	आय से अधिक व्यय करना।
57. चाँदी का जूता मारना	–	रिश्वत देना।
58. चेहरे की हवाइयाँ उड़ना	–	घबरा जाना।
59. चिकना घड़ा होना	–	अत्यन्त बेशर्म।
60. छठी का दूध याद आना	–	बड़ी मुसीबत में फँसना।
61. छाती पर साँप लोटना	–	अत्यंत ईर्ष्या करना।
62. टेढ़ी–खीर होना	–	कठिन काम।
62. तुती बोलना	–	खूब प्रभाव होना।
63. तोते उड़ जाना	–	घबरा जाना।
64. तितर–बितर होना	–	अलग–अलग होना।
65. तीन तेरह करना	–	तितर–बितर करना।
66. दाँत खट्ठे करना	–	परेशान करना हरा देना।
67. दाँतो तले उँगले दबाना	–	आश्चर्य चकित होना।
68. निन्यानवे के फेर में पड़ना	–	धन इकट्ठा करने की चिन्ता में रहना।
69. पगड़ी उछालना	–	बेइज्जत करना।
70. फूला न समाना	–	अत्यधिक खुश होना।
71. बाल बाँका न होना	–	कुछ भी नुकसान न होना।

शेखावाटी मिशन–100

72. भीगी बिल्ली बनना – डरपोक होना।
73. भैंस के आगे बीन बजाना – मूर्ख के समक्ष बुद्धिमानी की बातें करना।
74. बाछें खिल जाना – आश्चर्य जनक हर्ष।
75. मुट्ठी गर्म करना – रिश्वत देना, लेना।
76. मुँह पर हवाइयाँ उड़ना – चेहरा फीका पड़ जाना।
77. लकीर का फकीर होना – परम्परावादी होना।
78. लोहा मानना – बहादुरी स्वीकार करना।
79. साँप छछुन्दर की गति होना – दुविधा में पड़ना।
80. हवा के घोड़ों पर सवार होना – बहुत जल्दी में होना।
81. हाथ पैर मारना – मेहनत करना।
82. काफूर होना – गायब हो जाना।
83. सूरज को दीपक दिखाना– – जो स्वयं श्रेष्ठ हो उसके विषय में कुछ कहना।
84. हथेली पर सरसों जमाना/उगाना – असंभव को संभव कर देना।
85. लहू(खून) क घूँट पीना – दुःख सहन करना/क्रोध को दबाना।
86. हवाई किले बनाना – थोथी कल्पना करना।
87. हाथ के तोते उड़ जाना – भौंचक्का रह जाना।
88. रंगा सियार होना – धोखेबाज होना।
89. पेट में दाढ़ी होना – बचपन से ही समझदार चतुर होना।
90. नुक्ताचीनी करना – दोष निकालना।
91. बछिया का ताऊ होना – महामूर्ख।
92. अगर मगर करना – टाल–मटोल करना।

अन्य लोकोक्तियाँ

1. अरहर की टट्टी गुजराती ताला – साधारण वस्तु की सुरक्षा में अधिक खर्च करना।
2. अक्ल बड़ी कि भैंस – शारीरिक बल से बुद्धिबल अधिक होता है।
3. अपनी करनी पार उतरनी – स्वयं का परिश्रम ही काम आता है।
4. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता – समूह के द्वारा किया जा सकने वाला कार्य अकेला व्यक्ति नहीं कर सकता।
5. अधजल गगरी छलकत जाय – ओछा आदमी अधिक इतराता है।
6. अंधा क्या चाहे दो आँखें – इच्छित वस्तु की प्राप्ति होना।
7. आँख का अन्धा नाम नयनसुख – गुणों के विपरीत नाम।
8. अपनी–अपनी ढपली अपना–अपना राग – संगठन तथा सहयोग की कमी होना।
9. अंधी पीसे कुत्ता खाये – मूर्ख या सीधे सरल व्यक्ति का धन दूसरे ही खा जाते हैं।
10. अपना हाथ जगन्नाथ – स्वयं का काम स्वयं द्वारा ही सम्पन्न करना उपयुक्त है।
11. आम के आम गुठलियों के दाम – दुहरा फायदा।
12. एक अनार सौ बीमार – वस्तु की पूर्ति की तुलना में माँग अधिक।
13. ऊँची दुकान फीका पकवान – सार की बजाय दिखावा ज्यादा करना।
14. अंधों के आगे रोना, अपना दीदा खोना – अनुपयुक्त व्यक्तियों से मदद मांगने का व्यर्थ परिश्रम।
15. अंधे की आरसी – किसी मूर्ख व्यक्ति को बहुत उत्तम चीज देना जिसका उपयोग करना वह न जानता है।
16.अपने मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता – अपने किए बिना काम नहीं होता।
17. उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई – एक बार शर्म उतर जाने पर किसी भी की परवाह नहीं करना।
18. ऊधो का लेना न माधो का देना – अपने काम से मतलब रखना।
19. जिन खोजा तिन पाईया गहरे पानी पैठ – कठिन परिश्रम से ही सफलता मिलती है।
20. छछुंदर के सिर में चमेली का तेल – अनुपयुक्त वस्तुओं का साथ होना।

शेखावाटी मिशन–100

21. आठ कनौजिए नौ चूल्हें – फूट पड़ना।
22. आए थे हरिभजन को ओट लगे कपास – वांछित कार्य को छोड़कर अन्य कार्य में लग जाना।
23. काला अक्षर भैंस बराबर – बिल्कुल निरक्षर होना।
24. कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमति ने कुनबा जोड़ा – भिन्न स्वभाव वालों को एक जगह एक्त्र करना
25. कभी घी घना तो कभी मुट्ठी चना – परिस्थितियाँ सदा एक सी नहीं रहती।
26. खग जाने खग की ही भाषा – मूर्ख व्यक्ति मूर्ख की ही बात समझता है।
27. गागर में सागर भरना – थोड़े में बहुत कुछ कह देना।
28. घर की मुर्गी दाल बराबर – अधिक परिचय से सम्मान कम।
29. घर में नहीं दाने बुढ़िया चली भुनाने – झूठा दिखावा करना।
30. चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात – सुख का समय थोड़ा ही होता है।
31. जाके पैर न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई – जिसने कभी दुःख नहीं देखा वह दूसरों का दुःख क्या अनुभव करे।
32. जिसकी लाठी उसकी भैंस – शक्तिशाली की विजय होती है।
33. तन पर नहीं लत्ता पान खाये अलबत्ता – अभावग्रस्त होने पर भी ठाठ से रहना
34. तीन कनौजिए तेरह चूल्हे – व्यर्थ की नुक्ताचीनी करना।
35. नक्कार खाने में तुती की आवाज – अराजकता में सुनवाई न होना।
36. नौ दिन चले अढ़ाई कोस – बहुत धीमी गति से कार्य का होना।
37. पढ़े फारसी बेचे तेल, देखों यह विधना का खेल – शिक्षित होते हुये भी दुर्भाग्य से निम्न कार्य करना।
38. प्यादे से फरजी भयो टेढ़ो–टेढ़ो जाय – छोटा आदमी बड़े पर पर पहुँचकर इतराकर चलता है।
39. मन चंगा तो कठौती में गंगा – मन पवित्र तो घर में तीर्थ है।
40. आ बैल मुझे मार – जान बूझकर आफत मोल लेना।
41. उल्टे बाँस बरेली के – विपरीत कार्य या आचरण।
42. एक मछली सारा तालाब गंदा कर देती है – एक की बुराई से साथी भी बदनाम होते है।
43. एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा – एक बुराई के साथ दूसरी बुराई जुड़ जाना।
44. कागज की नाव नहीं चलती – बेईमानी से किसी कार्य में सफलता नहीं मिलती।
45. कोयले की दलाली में हाथ काले – बुरे काम का परिणाम बुरा होता है।
46. काबुल में क्या गधे नहीं होते – मूर्ख व्यक्ति सभी जगह पाए जाते हैं।
47. कौवा चला हंस की चाल, भूल गया अपनी भी चाल – दूसरों के अनधिकार अनुकरण से अपने रीति रिवाज भूलना।
48. खिशीयानी बिल्ली खम्भा खोंसे/नोंचे – शक्तिशाली पर वश न चलने के कारण कमजोर पर क्रोध करना।
49. गंगा गए गंगादास यमुना गए यमुनादास – अवसरवादी होना।
50. चार दिन की चाँदनी फेर अँधेरी रात – सुख का समय थोड़ा ही होता है।
51. चिकने घड़ें पर पानी नहीं ठहरता – निर्लज्ज पर किसी बात का असर नहीं होता।
52. जल में रहकर मगर से बैर – बड़े आश्रयदाता से दुश्मनी ठीक नहीं
53. जहाँ मुर्गा नहीं बोलता वहाँ क्या सवेरा नहीं होता – किसी के बिना कोई काम नहीं रूकता
54. जंगल में मोर नाचा किसने देखा – दूसरों के सामने उपस्थित होने पर ही गुणों की कद्र होती है।
55. तू डाल–डाल मैं पात–पात – एक से बढ़कर एक चालाक होना।
56. तीन लोक से मथुरा न्यारी – सबसे अलग विचार बनाए रखना।
57. तिल देख तिलों की धार देख – परिणाम की प्रतीक्षा करना।
58. नाच न जाने आँगन टेढ़ा – अपना दोष दूसरों पर मंढ़ना।

शेखावाटी मिशन 100

माध्यमिक परीक्षा 2021

मॉडल प्रश्न पत्र –1

विषय – हिन्दी

पूर्णांक – 80 | समय – 3 घण्टे 15 मिनट

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :–

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य है।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड (अ)

प्रश्न 1. निम्नांकित प्रश्नों में से दिये गये सही विकल्प का चयन कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए। प्रत्येक प्रश्न 01 अंक का है। (10×1=10)

(i) 'नवरत्न' शब्द में कौनसा समास हैं ?

(अ) द्वन्द्व समास (ब) कर्मधारय समास (स) द्विगु समास (द) तत्पुरूष समास

(ii) 'नीलकंठ' शब्द में कौनसा समास हैं ?

(अ) तत्पुरूष समास (ब) बहुब्रीहि समास (स) अव्ययीभाव समास (द) द्विगु समास

(iii) जिस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं, उसे कहते है ?

(अ) द्विगु समास (ब) तत्पुरूष समास (स) कर्मधारय समास (द) द्वन्द्व समास

(iv) 'पथभ्रष्ट' शब्द में कौनसा समास हैं ?

(अ) अव्ययीभाव समास (ब) तत्पुरूष समास (स) द्विगु समास (द) बहुब्रीहि समास

(v) वर्तनी की दृष्टि से अशुद्ध शब्द है –

(अ) लघुतम (ब) कनिष्ठ (स) अन्वेषण (द) श्रृंगार

(vi) वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्द है –

(अ) आशीर्वाद (ब) पुजनीय (स) त्यौंहार (द) श्रेष्ट

(vii) निम्नलिखित में से शुद्ध शब्द है–

(अ) पत्नि (ब) पती (स) अतिथि (द) श्रीमति

(viii) निम्नलिखित में से अशुद्ध शब्द है –

(अ) आँसू (ब) झाँसी (स) उत्तीर्ण (द) कालींदी

(ix) जयशंकर प्रसाद द्वारा संपादित पत्रिका का नाम है–

(अ) प्रभा (ब) इन्दु (स) माधुरी (द) सरस्वती

(x) ईर्ष्या की बेटी का नाम है–

(अ) निन्दा (ब) घृणा (स) पीड़ा (द) कामना

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द/एक पंक्ति में दीजिए–

प्रश्न क्रमांक :– 02 से 08 तक के सभी प्रश्नों के अंकभार एक–एक है।

प्रश्न 02. अपना हित जानते हुए भी पतंगा दीपक से क्यों लिपटता है ?

प्रश्न 03. लक्ष्मण ने 'द्विजदेवता' किसे कहा है ?

प्रश्न 04 वर्षा होने से दूब में क्या परिवर्तन आया ?

प्रश्न 05 शंकराचार्य को शास्त्रार्थ मे निरुत्तर करने वाली महिला का नाम क्या है ?

प्रश्न 06 कन्याकुमारी षरत के किस राज्य में स्थित है ?

प्रश्न 07 'दिल बैठ जाना' मुहावरे का अर्थ लिखिए।

प्रश्न 08 'अंधो में काना राजा' लोकोक्ति का अर्थ लिखिए।

शेखावाटी मिशन–100

दिये गये प्रश्नों में रिक्त स्थान की पूर्ति कर उत्तर पुस्तिका में लिखिए। प्रत्येक प्रश्न 01 अंक का है – (3×1=3)

प्रश्न 09. भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही, बिपुल बार .... दीन्ही।।

प्रश्न 10. पीछे दायीं तरफ दूर–दूर हटकर उगे .... के झुरमुट नजर आ रहे थे।

प्रश्न 11. उस जमानें मे प्राकृत ही .... की भाषा थी ।

खण्ड–ब

निम्नलिखित अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 02 अंक का है। (8 ×2=16)

प्रश्न 12. 'मातृ–वंदना ' कविता का मूल भाव स्पष्ट करो।

प्रश्न 13. "गाधिसूनु कह हृदयँ हँसि'' विश्वामित्र मन ही मन क्यों हँस रहे थे ?

प्रश्न 14. कवयित्री चौहान ने रानी लक्ष्मी बाई को 'मर्दानी' क्यों कहा है ?

प्रश्न 15. ईर्ष्यालु मनुष्य का सबसे बड़ा पुरस्कार क्या है ?

प्रश्न 16. कन्याकुमारी में किन–किन सागरों का संगम होता है ?

प्रश्न 17. हामिद के चरित्र की कोई तीन विशेषताएं बताइए ?

प्रश्न 18. 'ईद का मुहर्रम हो जाना' मुहावरे का अर्थ सहित वाक्य में प्रयोग कीजिए।

प्रश्न 19. 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा' लोकोक्ति का अर्थ सहित वाक्य प्रयोग कीजिए।

प्रश्न 20. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

फैली खेतों मे दुर तलक,
मखमल–सी कोमल हरियाली।
लिपटी जिसमे रवि की किरणें,
चाँदी की–सी उजली जाली।।
तिनकों के हरे–हरे तन पर,
हिल हरित रंग है रहा झलक।
श्यामल भूतल पर झुका हुआ,
नभ की चिर निर्मल नील फलक।।

(अ) उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

(ब) रेखांकित शब्द 'हिल हरित रंग है रहा झलक' में निहित अलंकार का नाम बताइए। 1

(स) उपर्युक्त काव्यांश की मूल संवेदना लिखिए। 2

अथवा

कितना प्रामाणिक था
उसका दुःख
लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो।
लड़की अभी सयानी नहीं थी।
अभी इतनी भोली सरल थी
कि उसे सुख का आभास तो होता था,
लेकिन दुःख बाँचना नहीं आता।

(अ) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

(ब) माँ ने अपनी पुत्री को अंतिम पूँजी क्यों कहा है ?

(स) लेखक ने ऐसा क्यों कहा कि उसे दुःख बाँचना नहीं आता ?

शेखावाटी मिशन–100

निम्नलिखित निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 21. 'लक्ष्मण–परशुराम संवाद' प्रसंग का सार अपने शब्दों में लिखिए। 4

अथवा

'प्रभो' कविता के कला एवं भाव पक्ष की संक्षिप्त विवेचना कीजिए–

प्रश्न 22. ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से' रचना का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए ? 4

अथवा

'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन' निबंध के अनुसार महिला–शिक्षा के विरोधी कौन–कौन से कुतर्क देते हैं ? पाठ के आधार पर लिखिए?

प्रश्न 23. निम्नलिखित साहित्यकारों का जीवन एवं कृत्तित्व परिचय दीजिए। 4

सूरदास अथवा प्रेमचन्द

खण्ड (द)

प्रश्न 24. निम्न यातायात चिह्नों का चित्र बनाइये 5

1. नो पार्किंग 2. एक ही रास्ता 3. यू टर्न

4. रास्ता दो 5. दोनों दिशा में वाहन निषिद्ध

अथवा

सडक पर गाड़ी चलाते समय एक जागरूक नागरिक होने के नाते आपके प्रमुख कर्तव्य क्या–क्या हैं ? लिखिए।

प्रश्न 25. स्वयं को प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सिंगोदड़ा (सीकर) मानते हुए अपने जिले के जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) एक पत्र लिखिए, जिसमें अपने विद्यालय में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का परीक्षा केन्द्र खोलने का अनुरोध किया गया हो। 5

अथवा

स्वयं को प्रधानाचार्य, सुभाष राजकीय माध्यमिक विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम), फतेहपुर, सीकर मानते हुए सचिव, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर को नवीनतम पुस्तक सूची भेजने हेतु एक पत्र लिखिए।

खण्ड (य)

प्रश्न 26. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :– 6

(अ) राष्ट्रीय विकास में महिलाओं की भागीदारी

(ब) पर्यावरण प्रदूषण : कारण और निवारण

(स) मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप

(द) भारतीय लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियां

प्रश्न 27. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए – 2+4=6

ऊधौ मन माने की बात।
दाख छुहारा छांड़ि अमृत फल, विषकीरा विष खात।।
ज्यौं चकोर कों देई कपूर कोउ, तजि अंगार अघात।
मधुप करत घर फोरि काठ मैं, बंधत कमल के पात।।
ज्यौं पतंग हित जानि आपनो, दीपक सौं लपटात।
सूरदास जाकौ मन जासौ, सोई ताहि सुहात।।

अथवा

शेखावाटी मिशन–100

प्रभो! प्रेममय प्रकाश तुम हो,
प्रकृति–पद्मिनी के अंशुमाली।
असीम उपवन के तुम हो माली
धरा बराबर बता रही है।
जो तेरी हौवे दया दयानिधि,
तो पूर्ण होता ही है मनोरथ।
सभी ये कहते पुकार करके,
यही तो आशा दिला रही है

अथवा

हुई वीरता की वैभव से सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आयी लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई खुशियाँ छायीं झाँसी में,
सुभट बुन्देलों की विरुदावलि–सी वह आई झाँसी में,
चित्रा ने अजुर्न को पाया, शिव से मिली भवानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह से हमने सुनी कहानी थी–
खूब लड़ी मर्दानी वह तो, झाँसी वाली रानी थी।

प्रश्न 28. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए – 2+4=6

कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है। वृक्षों पर कुछ अजीब हरियाली है, खेतों में कुछ अजीब रौनक है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है आज सूर्य को देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल है मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा हो।

अथवा

इस चलायमान शरीर का कुछ ठिकाना नहीं। इस संसार में नाम स्थिर रखने की कोई युक्ति निकल आवे तो अच्छा है, क्योंकि यहाँ की रीति देख मुझे पूरा विश्वास होता है कि इस चपल जीवन का क्षण–भर का भरोसा नही है। ऐसा कहा भी है–

स्वाँस स्वाँस मे हरि भजो वृथा स्वाँस मत खोय।
न जाने या स्वाँस को आवन होय न होय।।

अथवा

चिन्ता को लोग चिता कहते हैं। जिसे किसी प्रचंड चिंता ने पकड़ लिया है, उस बेचारे की जिन्दगी ही खराब हो जाती है, किन्तु ईर्ष्या शायद फिर चिन्ता से बदतर चीज है क्योंकि वह मनुष्य के मौलिक गुणों को ही कुंठित बना डालती है। मृत्यु शायद फिर भी श्रेष्ठ है बनिस्पत इसके कि हमें अपनें गुणों को कुंठित बनाकर जीना पड़े, चिंतादग्ध व्यक्ति समाज की दया का पात्र है, किन्तु ईर्ष्या से जला भुना आदमी जहर की चलती–फिरती गठरी के समान है जो हर जगह वायु को दूषित करती फिरती है।

शेखावाटी मिशन–100

शेखावाटी मिशन–100
माध्यमिक परीक्षा 2021
मॉडल प्रश्न पत्र– 2
विषय–हिन्दी

पूर्णांक –80 समय– 3 घंटे 15 मिनट

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :–

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य है।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

प्रश्न 1. निम्नांकित प्रश्नों में से दिये गये सही विकल्प का चयन कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।प्रत्येक प्रश्न 01 अंक का है। 10×1=10

(i) 'सतसई' शब्द में कौनसा समास है ?
(अ) कर्मधारय (ब) द्विगु (स) तत्पुरुष (द) द्वन्द्व समास।

(ii) द्वन्द्व समास में कौनसा पद प्रधान होता है ?
(अ) पूर्व पद (ब) उत्तर पद (स) उभय पद (द) अन्य पद।

(iii) 'रसाई घर' का समास विग्रह होता है ?
(अ) रसोई के लिए घर (ब)रसोई का घर (स) रसाई में घर (द)रसाई और घर

(iv) निम्न में से पूर्व पद प्रधान समास कौनसा है ?
(अ) अव्ययीभाव (ब) तत्पुरुष (स) द्वन्द्व (द) बहुव्रीहि

(v) वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्द है :–
(अ) महतव (ब) दयालू (स) शारीरिक (द) केलास

(vi) कौनसा शब्द शुद्ध है–
(अ) गोर्वधन (ब) कुमार्य (स) अनाधिकार (द) पूजनीय

(vii) निम्न से शुद्ध वाक्य का चयन करे –
(अ) उसे भारी प्यास लगी है। (ब) पिताजी ने मुझको कहा।
(स) उनके प्राण पखेरू उड़ गए। (द) उसकी प्राण पखेरू उड़ गई।

(viii) अशुद्ध वाक्य का चयन करें –
(अ) कृपया शीघ्र उत्तर दें। (ब) गुलामी बुरी है।
(स) रात भर कुत्ते भौंकते रहे। (द) बन्दूक एक शस्त्र है।

(ix) सूरदास की भाषा कौनसी है ?
(अ)राजस्थानी (ब) पंजाबी (स) ब्रज (द) खड़ी बोली।

(x) प्रेमचन्द का मूल नाम क्या था ?
(अ) गणपत राय (ब) धनपत राय (स) मुंशी राय (द) शिवराय

निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द/पंक्ति में दीजिए –

प्रश्न क्रमांक 02 से 11 तक के सभी प्रश्नों के अंक भार एक–एक है। 10×1=10

प्रश्न 2. कृष्ण 'गोरी' संबोधन किसके लिए कर रहे हैं ?
प्रश्न 3. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किस पत्रिका का सम्पाान किया ?
प्रश्न 4. 'छक्के छुड़ाना' मुहावरे का अर्थ बताइये।
प्रश्न 5. 'अपना हाथ जगन्नाथ' लोकोक्ति का अर्थ बताइये।
प्रश्न 6. 'मूर्ख बनाना' वाक्यांश के लिए मुहावरा लिखो।
प्रश्न 7. 'सावन के अंधे को हरा ही सूझता है' लोकोक्ति का अर्थ लिखिये।
प्रश्न 8. आध्यात्मिक चिन्तन की दृष्टि से कन्याकुमारी का क्या महत्व है ?

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न 9. राजसभा में परशुराम ने अपना परिचय किस प्रकार दिया ?

प्रश्न 10. निराला ने 'मातृ–वन्दना' कविता में माँ संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया है ?

प्रश्न 11. ईर्ष्या की बेटी का क्या नाम है ?

प्रश्न क्रमांक 12 से 20 तक के सभी प्रश्नों के अंक भार एक–एक है। 8×2=16

प्रश्न 12. हामिद के चरित्र की कोई तीन विशेषताएँ लिखिए।

प्रश्न 13. स्त्री–शिक्षा के विरोधियों द्वारा दी जा रही दलील बताइये।

प्रश्न 14. ईर्ष्यालु लोगों से बचने के लिए नीत्से ने क्या उपाय सुझाया है ?

प्रश्न 15. लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या–क्या विशेषताएँ बताई हैं ?

प्रश्न 16. 'उषा की लाली' कविता का शिल्प सौन्दर्य लिखिए।

प्रश्न 17. 'मातृ वंदना' कविता में क्या संदेश व्यक्त हुआ है ?

प्रश्न 18. 'कुछ जल कुछ गंगाजल' लोकाक्ति का अर्थ सहित वाक्य में प्रयोग कीजिए।

प्रश्न 19. 'स्त्रियों को निरक्षर रखने का उपदेश देना समाज का अपकार और अपराध करना है' इस कथन के पक्ष में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

प्रश्न 20. अपठित पंद्याश को पढकर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

हार कर क्यों शीश अपना मैं झुका दूँ
मैं सफलता का अटल विश्वास हूँ
पर क्षण–भर रूक न पायेगी निराशा
मैं न धरती पर किसी का दास हूँ
झूठ आकर द्वार मेरे क्या करेगा
सत्य का आह्वान जिन्दा है अभी!
बोल सुन परिवर्तनों के दहल जाये
वक्ष मेरा क्षणी ऐसा तो नहीं है
पक्ष–विमुखता नाग–दंशो से न होती
अर्चना निज ध्येय की अब भी करेगी
सांस का सामान जिन्दा है अभी!

(अ) पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

(ब) सत्य का आह्वान–से कवि का क्या आशय है ? 1

(स) कवि हार के सामने सिर क्यों नहीं झुकाना चाहता ? 2

अथवा

मैं मजदूर मुझे देवों की बस्ती से क्या ?
अगणित बार धरा पर मैने स्वर्ग बनाए।
अंबर पर जितने तारे उतने वर्षों से
मेरे पुरखों ने धरती का रूप सँवारा।
धरती को सुन्दरतम करने की ममता में,
बिता चुका है कई पीढ़ियाँ वंश हमारा।
और अभी आगे आने वाली सदियों में,
मेरे वंशज धरती पर उद्धार करेंगे।
इस प्यासी धरती के हित मैं ही आया था,
हिम गिरि चीर सुखद गंगा की निर्मल धारा।
मैंने रेगिस्तानों की रेती धो–धोकर,
बंध्या धरती पर भी स्वर्णिम पुष्प खिलाए।

(अ) पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

(ब) गंगा की धार को धरती पर कौन लाया था ? 1

(स) मजदूरों की पीढ़ियों ने अपने जन्म किस कार्य में बिताए ? 2

शेखावाटी मिशन–100

निबंधात्मक प्रश्न

प्रश्न 21. "नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।" इस कथन के आलोक में राम का चरित्र चित्रण कीजिए। 4

अथवा

'प्रभो' कविता का काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा

नागार्जुन की 'कल और आज' कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 22. सप्रमाण सिद्ध कीजिए कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने "एक अदभुत अपूर्व स्वप्न" निबंध में तत्कालीन समाज का चित्र व्यंग्य के माध्यम से उपस्थित किया हैं। 4

अथवा

"स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन" निबंध में निहित संदेश को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

ईर्ष्या–भाव के उत्पत्ति के कारण तथा उससे होने वाली हानियों को बताइये।

प्रश्न 23. सुभद्रा कुमारी चौहान अथवा सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का परिचय दीजिए। 4

प्रश्न 24. सड़क सुरक्षा के किन्हीं पांच प्रमुख चिह्नों के चित्र बनाकर उनके अर्थ लिखिए। 5

प्रश्न 25. स्वयं को रा. उ. मा. वि. भादवासी, सीकर का छात्र राम शर्मा मानते हुए अपने विद्यालय में बन्द सह–शैक्षिक गतिविधियों को सुचारू रूप से संचालित करने की व्यवस्था के लिए एक प्रार्थना पत्र लिखिए। 5

अथवा

नीलिमा प्रकाशन जोधपुर को प्रधानाध्यापक, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, आकवा, सीकर की ओर से आदेशित माल भेजने का पत्र लिखिए।

प्रश्न 26. निम्न में से किसी एक विषय पर 300 शब्दों का निबन्ध लिखिए। 6

1. आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी / सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार क्रांति
(क) प्रस्तावना
(ख) दूरसंचार की आवश्यकता
(ग) दूरसंचार के प्रमुख साधन
(घ) भारत में दूरसंचार का महत्त्व
(ङ) दूरसंचार क्रांति का प्रभाव और भविष्य
(च) उपसंहार

अथवा

2. युवकों में बेकारी अथवा बेरोजगारी : समस्या समाधान
(क) प्रस्तावना
(ख) भारत में बेरोजगारी : दिशा और दशा
(ग) बेरोजगारी के कारण
(घ) समस्या समाधान के उपाय
(ङ) उपसंहार

अथवा

3. विद्यार्थी और अनुशासन
(क) प्रस्तावना
(ख) विद्यार्थी जीवन और अनुशासन
(ग) अनुशासनहीनता के कारण
(घ) दुष्परिणाम
(ङ) निवारण के उपाय
(च) उपसंहार

अथवा

4. पर्यावरण की दुश्मन : प्लास्टिक की थैलियाँ
(क) प्रस्तावना
(ख) बाजार की जान थैलियाँ
(ग) प्लास्टिक थैलियाँ बनी समस्या
(घ) पर्यावरण की दुश्मन
(ङ) समाधान कैसे हो
(च) उपसंहार

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न 27. निम्न के पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए । 6

ऊधौ मन माने की बात
दाख छुहारा छांडि अमृत फल विषकीरा विष खात।।
ज्यों चकोर कों देई कपूर कोउ, तजि अंगार अघात।
मधुप करत घर फोरि काठ मैं, बंधत कमल के पात
ज्यौं पतंग हित जानि आपना, दीपक सौं लपटात
सूरदास जाकौ मन जासौ, सोई ताहि सुहात।।

अथवा

मेरे जीवन का यह है जब प्रथम चरण
इसमें कहाँ मृत्यु ?
है जीवन ही जीवन
अभी पड़ा है आगे सारा यौवन
स्वर्ण–किरण कल्लोलों पर बहता रे, बालक–मन,
मेरे ही अविकसित राग से
विकसित होगा बन्धु दिगन्त,
अभी न होगा मेरा अन्त।

प्रश्न 28. निम्न गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

समय सागर में एक दिन सब संसार अवश्य मग्न हो जायेगा। कालवश शशि सूर्य भी नष्ट हो जायेंगे। आकाश में तारे भी कुछ काल पीछे दृष्टि न आवेंगे। केवल कीर्ति–कमल संसार–सरोवर में रहे वा न रहे, और सब तो एक तप्त तवे की बूँद हुए बैठे हैं। इस हेतु बहुत काल तक सोच समझ प्रथम यह विचार किया कि कोई देवालय बनाकर छोड़ जाऊँ, परन्तु थोड़ी ही देर में समझ में आ गया कि इन दिनों की सभ्यता के अनुसार इससे बड़ी कोई मूर्खता नहीं, और यह तो मुझे भली भाँति मालूम है कि यही अँग्रेजी शिक्षा रही तो मन्दिर की ओर मुख फेर कर भी कोई नहीं देखेगा। इस कारण विचार का परित्याग करना पड़ा।

अथवा

समुद्र के अन्दर से उभरी स्याह चट्टानों में से एक पर खड़ा होकर मैं देर तक भारत के स्थल–भाग की आखिरी चट्टान को देखता रहा। पृष्ठभूमि में कन्याकुमारी के मन्दिर की लाल और सफेद लकीरें चमक रही थीं। अरब सागर, हिन्द महासागर और बंगाल की खाड़ी–इन तीनों के संगम–स्थल–सी वह चट्टान, जिस पर कभी स्वामी विवेकानन्द ने समाधि लगायी थी, हर तरफ से पानी की मार सहती हुई स्वयं भी समाधि–स्थित–सी लग रही थी। हिन्द महासागर की ऊँची–ऊँची लहरें मेरे आस–पास की स्याह चट्टानों से टकरा रही थी। बलखाती लहरें रास्ते की नुकीली चट्टानों से कटती हुई आती थी जिससे उनके ऊपर चूरा बूँदों की जालियाँ बन जाती थी। मैं देख रहा था और अपनी पूरी चेतना से महसूस कर रहा था शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति।

शेखावाटी मिशन–100

सपने होंगे सच

ALLEN® CAREER INSTITUTE KOTA (RAJASTHAN)
path to success
SIKAR, RAJASTHAN

Pre-Nurture & Career Foundation Division

Class 6th to 10th | NTSE | OLYMPIADS & BOARD

Admission Open

Session 2021-22

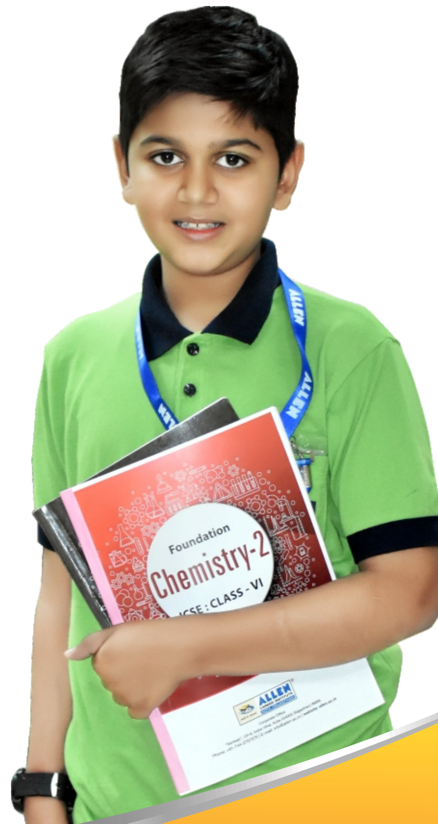

New Batches for

Class 6th to 10th

7 April & 12 May 2021

(*ENGLISH MEDIUM*)

Strong Foundation Leads to

EXTRAORDINARY RESULTS

ALLEN SIKAR
Classroom Students
Qualified for

INMO
Indian National Mathematical Olympiad

&

INJSO
Indian National Junior Science Olympiad

(Conducted by HBCSE)

KRISH GUPTA
Class: 10th

DINESH BENIWAL
Class: 10th

HIMANSHU THALOR
Class: 9th

ALLEN® SIKAR Result : JEE (Adv.) 2020

प्रथम वर्ष में ही JEE (Adv.) का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

AIR **736**

AIR **836**

SUBHASH
Classroom Student

KULDEEP SINGH CHOUHAN
Classroom Student

ALLEN® SIKAR Result : JEE (Main) 2021 (Feb. Attempt)

दो साल बेमिसाल

एलन सीकर ने गढ़े कीर्तिमान,
जेईई-मेन में दिए
शेखावाटी टॉपर्स

MATHEMATICS 100 PERCENTILE

शेखावाटी टॉपर

शेखावाटी गर्ल्स टॉपर

ROHIT KUMAR
Classroom
99.9892474 %tile

SAKSHI GUPTA
Classroom
99.8925637 %tile

ALLEN® SIKAR Result : NEET (UG) 2020

प्रथम वर्ष में एलन सीकर, क्लासरूम के 165 + विद्यार्थियों को मिला सरकारी मेडिकल कॉलेज में प्रवेश

680/720
AIR 695
AIIMS Jodhpur

675/720
AIR 866
AIIMS Jodhpur

LAVPREET KAUR GILL
Classroom Student

AYUSH SHARMA
Classroom Student

- Lady Hardinge Medical College, Delhi — **SARVANISHTHA**
- All India Institute Of Medical Sciences, Jodhpur — **RAHUL BHINCHAR**
- Swai Man Singh Medical College, Jaipur — **JITENDRA P.S. RATHORE**
- Swai Man Singh Medical College, Jaipur — **AYUSH CHOUDHARY**
- Sardar Patel Medical College, Bikaner — **RAVEENA CHOUDHARY**
- Swai Man Singh Medical College, Jaipur — **AAKANKSHA CHAUDHARY**
- Swai Man Singh Medical College, Jaipur — **RAMPRATAP CHOUDHARY**
- Swai Man Singh Medical College, Jaipur — **PRACHI RAJPUROHIT**
- Sardar Patel Medical College, Bikaner — **NIKITA**
- Sardar Patel Medical College, Bikaner — **DAYANAND JYANI**
- Sardar Patel Medical College, Bikaner — **ANNU**
- Swai Man Singh Medical College, Jaipur — **DEEPIKA GOENKA**
- Rajasthan University Of Health Sciences, Jaipur — **OM PRAKASH JAT**
- Sardar Patel Medical College, Bikaner — **PRAVEEN KUMAR YADAV**
- Sardar Patel Medical College, Bikaner — **ADITI**
- Sardar Patel Medical College, Bikaner — **MANASVI JANGIR**
- All India Institute Of Medical Sciences, Nagpur — **SANJAY SAIN**
- All India Institute Of Medical Sciences, Raebareli — **SUMIT CHOUDHARY**
- Dr. Sampurnanand Medical College, Jodhpur — **ANKIT**
- Sardar Patel Medical College, Bikaner — **HEMANT DHAYAL**

UPCOMING NEW BATCHES for JEE (Main+Adv.) & NEET (UG)

(Hindi & English Medium)

NURTURE BATCH	ENTHUSIAST BATCH	LEADER BATCH
(For Class 10th to 11th Moving Students) Starting from	(For Class 11th to 12th Moving Students) Starting from	(For Class 12th Appeared / Pass Students) Starting from
2, 9, 16 June & 30 June 2021	**7 April 2021** Both 11th & 12th syllabus will be covered	**2 June & 16 June 2021**

ALLEN® SIKAR

TEAM **ALLEN** @ SIKAR

एलन स्कॉलरशिप एडमिशन टेस्ट (ASAT)

04, 11, 25 अप्रैल 2021 | 09, 23, 30 मई 2021,
06, 13, 20, 27 जून 2021

90% तक स्कॉलरशिप

ALLEN® CAREER INSTITUTE KOTA (RAJASTHAN) path to success

DOWNLOAD FREE SAMPLE PAPERS

ALLEN Sikar Center: "SANSKAR," Near Piprali Circle, Sikar-Jhunjhunu Bypass, Piprali Road, Samrathpura, Sikar
Tel.: 01572-262400 | **E-mail** : sikar@allen.ac.in

Corporate Office : "SANKALP", CP-6, Indra Vihar, Kota (Raj.) INDIA, 324005
Tel.: 0744-2757575 | **Email**: info@allen.ac.in | **Web**: www.allen.ac.in

ALLEN Info & Admission App
Download from Google play

www.allen.ac.in/sikar | facebook.com/allensikar | twitter.com/allensikar | youtube.com/allencareerinstitute